तौहीद

मस्जिद-ए-नबवी के उपदेशों से

:लेखक
डॉक्टर अब्दुल-मुहसिन बिन मुहम्मद अल-क़ासिम
इमाम व ख़तीब मस्जिद-ए-नबवी शरीफ़

مترجم باللغة الهندية

तौहीद

मस्जिद-ए-नबवी के उपदेशों से

तौहीद

मस्जिद-ए-नबवी के उपदेशों से

लेखक:
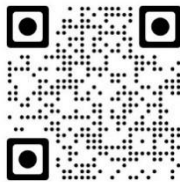
डॉक्टर अब्दुल मुहसिन बिन मुहम्मद अल-क़ासिम

इमाम व ख़तीब: मस्जिद-ए-नबवी शरीफ

अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ जो बड़ा दयावान अत्यंत कृपालु है।

प्रस्तावना

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो समस्त संसार का प्रभु है, हमारे नबी मुहम्मद पर दरूद और शांति हो, तथा उनके परिवार और उनके सभी साथियों पर भी।

अम्मा बाद:[1]

तौहीद[2] (एकेश्वरवाद) भक्तों पर सबसे प्रथम दायित्व है, इसी उद्देश्य से अल्लाह ने जिन्न और इंसान को पैदा किया, इसी के साथ पैग़ंबरों को भेजा, अपने ग्रंथ अवतीर्ण किए और जन्नत को तौहीद वालों का प्रतिफल बनाया, ये तौहीद की महानता ही है कि सृष्टि को जिन चीज़ों की ओर बुलाया जाता है उनमें सबसे महान यही है।

इस सिद्धांत के महत्व के कारण ही मैंने मस्जिद ए नबवी में तौहीद के बारे में ख़ुतबे (उपदेश) दिए, फिर उन्हें इस पुस्तक में व्यवस्थित करके इसे: "**तौहीद; मस्जिद-ए-नबवी के उपदेशों से**" का नाम दे दिया, इन ख़ुतबों की संख्या 14 तक पहुँचती है।

मैं अल्लाह से दुआ करता हूँ कि इसके माध्यम से लाभ पहुँचाए और इसे अपनी प्रसन्नता हेतु शुद्ध बना दे।

हमारे नबी मुहम्मद और उनके परिवार और साथियों पर अल्लाह का आशीर्वाद और शांति हो।

डॉक्टर अब्दुल मुहसिन बिन मोहम्मद अल-क़ासिम
इमाम व ख़तीब मस्जिद-ए-नबवी शरीफ

(1) इस वाक्य को अल्लाह की प्रशंसा और नबी पाक पर सलाम के बाद मुद्दे की बात पर आने के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

(2) तौहीद: अल्लाह को उसके प्रभुत्व, पूजनीयता और नामों व गुणों के साथ एक व आदित्य मानना।

तौहीद (एकेश्वरवाद) का महत्व[1]

समस्त प्रशंसा अल्लाह (ईश्वर) के लिए है, हम उसकी प्रशंसा करते हैं उसी से सहायता और अपने पापों की क्षमा मांगते हैं, हम अपने प्राण और कर्म की बुराइयों से उसकी शरण चाहते हैं। वह जिसे सत्य मार्ग पर चला दे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे वह भटका दे उसे कोई सत्य मार्ग पर चला नहीं सकता। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह एक है, उसका कोई साझी नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके भक्त और दूत हैं, सलाम व शांति हो उन पर, उनके परिवार और उनके पवित्र साथियों पर।

अम्मा बाद:

ऐ अल्लाह के बंदो! अल्लाह से डरो जैसे की उससे डरने का हक है, क्योंकि अल्लाह के डर से ही आँखें और हृदय प्रबुद्ध होते हैं और पाप व अपराध मिट जाते हैं।

अय्युहल मुस्लिमून![2]

अल्लाह (ईश्वर) ने एक ऐसा धर्म देकर हम पर एहसान किया है जो शुद्ध स्वभाव और स्वस्थ बुद्धि के अनुकूल है, जो हर समय और स्थान के लिए मान्य है, जो ज्ञान और पूजा को एक करता और कथन, कर्म और विश्वास को साथ लेकर चलता है। अल्लाह प्राणियों से इस्लाम के अलावा किसी अन्य धर्म को स्वीकार नहीं करेगा।

﴿وَمَن يَبْتَغِ غَيْرَ ٱلْإِسْلَٰمِ دِينًا فَلَن يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِى ٱلْءَاخِرَةِ مِنَ ٱلْخَٰسِرِينَ﴾

जो इस्लाम के अतिरिक्त कोई और दीन (धर्म) तलाश करेगा तो वो उसकी ओर से स्वीकार न किया जाएगा। और आख़िरत में वह घाटा उठाने वालों में से होगा। (आल इमरान: 85)

इस धर्म में एक वचन है, जो कोई सच्चे दिल से उसे कहता है और उसके अनुसार ईश्वर की प्रसन्नता की तलाश में कार्य करता है वो प्रलय के दिन बिना किसी गणना या दंड के स्वर्ग में प्रवेश करेगा, वो वचन है:

(1) ये ख़ुतबा मस्जिद-ए-नबवी में जुमे के दिन 24/12/1422 हिजरी को दिया गया।

(2) अर्थात: हे मुस्लिमो!

ला इलाहा इल्लल्लाह
"अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है।"

यह सबसे पवित्र वचन, सबसे उत्तम कर्म और ईमान (आस्था) की सबसे ऊंची शाखा है। जिसने सच्चे मन से इसे बोला उसने धर्म के बहुत उच्च स्थान को प्राप्त कर लिया, लेकिन ये याद रहे की केवल इसको बोल देना ही इस्लाम में प्रवेश करने या उसमें बने रहने के लिए पर्याप्त नहीं है, बल्कि एक मुस्लिम को इसका मतलब जानते हुए, उसकी सच्चाई पर विश्वास करते हुए, उसके अनुसार कर्म करना, अर्थात: बहुदेववाद को नकारना और ईश्वर की एकता का इकरार करना भी अनिवार्य है।

एक मुस्लिम अपने विश्वास और ईमान में सच्चा होता है, निर्णय, आदेश, कानून और पूर्वनियति में ईश्वर को समर्पित होता है, वह अपनी आवश्यकताएं अल्लाह ही के आगे रखता है और उसके सिवा किसी और से अपनी पीड़ा को दूर करने की बिनती नहीं करता। अल्लाह का कथन है:

﴿وَإِن يَمْسَسْكَ ٱللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُۥٓ إِلَّا هُوَ ۖ وَإِن يَمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ﴾

और अगर तुम्हें अल्लाह कोई तकलीफ़ पहुँचा दे तो उसके सिवा कोई नहीं है जो उसे दूर कर दे, और अगर वह तुम्हें कोई भलाई पहुँचाए तो वो हर चीज़ में सक्षम है। (अल-अनआम: 17)

और केवल उसी पवित्र हस्ती से प्रार्थना करना इबादत (पूजा) के सर्वोत्तम कर्मों में से एक महान इबादत है। पैग़ंबर ﷺ ने कहा है: "अल्लाह के लिए प्रार्थना से ज्यादा सम्मानजनक कुछ नहीं है।" (मुस्नद अहमद), और श्री इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) कहते हैं: "सबसे अच्छी इबादत दुआ (प्रार्थना) है।"

यदि तुम पर दुर्घटनाएं और विपत्तियां आन पड़ें और रास्ते और मार्ग तुम्हारे सामने बंद हो जाएं; तो महान हस्ती को पुकारो; क्यूंकि जो कोई उससे माँगता है वह उसे देता है, जो उसकी शरण लेता है वह उसकी रक्षा करता है। पैग़ंबर ﷺ इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से कहते हैं: "जब कुछ मांगो तो अल्लाह से मांगो, जब मदद चाहो तो अल्लाह से मदद चाहो, जान लो कि अगर पूरा राष्ट्र तुम्हें लाभ पहुंचाना चाहे तो उतना ही पहुँचा सकेगा जितना अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दिया है और अगर वे सभी तुम्हें हानि पहुँचाने के लिए एकत्रित हो जाएं तो उतनी ही हानि पहुँचा सकेंगे जितनी अल्लाह ने लिख दी है।" (सुनन तिर्मिज़ी)

अपने रब से छोटी छोटी चीज़ें माँगने से भी मुंह ना मोड़ो, पैग़ंबर ﷺ कहते हैं: "अल्लाह से सब कुछ मांगो, यहां तक कि जूते का पट्टा भी; क्यूंकि यदि अल्लाह इसे आसान

नहीं बनाता तो आसान नहीं होता।" (मुस्नद अबू-याला) जहाँ तक मृत और अनुपस्थित व्यक्ति से दुआ माँगने की बात है तो वह अपने लिए ही कोई लाभ या हानि की क्षमता नहीं रखता, तो दूसरों के लाभ की तो बात ही छोड़ दें। बल्कि मृत स्वयं हमारी दुआ का मोहताज होता है जैसा कि पैग़ंबर ﷺ ने हमें हुक्म दिया है कि जब हम मुसलमानों की कब्रों पर जाएं तो अल्लाह से उनके लिए दया व कृपा माँगें और उनके लिए प्रार्थना करें, ना कि उनसे मदद मांगी जाए।

हमारा महान प्रभु सुनने और देखने के साथ सम्पन्न है, प्रार्थना और बिनती करने में अपने और उसके बीच किसी को मध्यस्त बनाकर उसकी पूजनीयता में कमी करना; वास्तव में उसके प्रभुत्व का अपमान है, जबकि वह फरमाता है:

﴿ٱدۡعُونِيٓ أَسۡتَجِبۡ لَكُمۡ﴾

मुझे पुकारो, मैं तुम्हारी पुकार को स्वीकार करूँगा (अल-मूमिन: 40)

इसी तरह एक अल्लाह के अलावा किसी और के लिए खून बहाना(1) भी शुद्ध वचन के विरुद्ध कार्यों में से एक है:

﴿قُلۡ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحۡيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ ٱلۡعَٰلَمِينَ ۝ لَا شَرِيكَ لَهُۥۖ وَبِذَٰلِكَ أُمِرۡتُ وَأَنَا۠ أَوَّلُ ٱلۡمُسۡلِمِينَ﴾

कह दो कि बेशक मेरी नमाज़, मेरी कुर्बानी और मेरा जीना-मरना सब कुछ अल्लाह के लिए है, जो तमाम जहानों का पालनहार है, जिसका कोई साझी नहीं, मुझे इसी का हुक्म दिया गया है और मैं सबसे पहला मुस्लिम (आज्ञाकारी) हूँ। (अल-अनआम: 162)

प्राचीन घर (काबे) का तवाफ (परिक्रमा) करना इबादत का ही एक कर्म है जिसमें घर के स्वामी (अल्लाह) को अपनी वंदना प्रस्तुत करनी होती है:

﴿وَلۡيَطَّوَّفُواْ بِٱلۡبَيۡتِ ٱلۡعَتِيقِ﴾

और उन्हें प्राचीन घर का तवाफ करना चाहिए। (अल-हज: 29)

अल्लाह को छोड़ कर दरगाहों और कब्रों की परिक्रमा करना जन्नत से वंचित करने वाला काम है।

(1) अर्थात: किसी जानवर की कुर्बानी करना या बली देना

आवश्यकता पड़ने पर ईमानदारी से अल्लाह की क़सम खाना संसारों के प्रभु की आराधना का हिस्सा है, अतः किसी और चीज़ की क़सम खाना सर्वशक्तिमान अल्लाह के सम्मान की अवहेलना है। इसी लिए पैग़ंबर साहब ﷺ कहते हैं: "जिसने अल्लाह के अलावा किसी की क़सम खाई उसने कुफ्र[1] या शिर्क[2] किया।" (सुनन तिर्मिज़ी)

जिसने अपने ऊपर से बुरी नजर को फैरने या लाभ हासिल करने के लिए किसी भी वस्तु को रक्षक समझ लिया; तो ऐसे व्यक्ति के लिए पैग़ंबर ﷺ की बद-दुआ है कि उसका उद्देश्य पूरा न हो और वह अपनी इच्छा के विपरीत को भुगते, आप ﷺ कहते हैं: "जो कोई तावीज़ पहनता है; अल्लाह उसकी इच्छा पूरी न करे।" (मुस्नद अहमद) इसी तरह पैग़ंबर ﷺ तावीज़ पहनने वालों की बैअत[3] लेने से भी रुक गए थे; श्री उकबा बिन आमिर अल-जुहनी (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा: "लोगों का एक समूह पैग़ंबर ﷺ के पास आया, आपने नौ लोगों से बैअत (निष्ठा की शपथ) ले ली और उनमें से एक को रोक दिया। उन्होंने कहा: हे अल्लाह के रसूल! आपने नौ लोगों से निष्ठा की शपथ ले ली और इसे छोड़ दिया? आपने कहा:"उसके पास एक तावीज़ है।" तब उस ने हाथ डाला और तावीज़ को काट दिया, तो आपने उससे भी बैअत ले ली, फिर आपने कहा: "जिसने भी तावीज़ लटकाया उसने शिर्क किया।" (मुस्नद अहमद)

विपत्तियों और दुख के समय यकता न्यायाधीश से लो लगाएं, वह बड़ा ही बेह्तरीन जवाब देने वाला है। जो खुद को ईश्वर से जोड़ता है, अपनी आवश्यकताओं को उसी के सामने रखता है, उसी की शरण लेता है और अपना सारा मामला उसे सौंप देता है; तो अल्लाह भी उसकी हर मांग के लिए पर्याप्त होता है, उसके लिए हर कठिनाई को आसान कर देता है, और जो कोई दूसरों से चिपकता है या अपने ज्ञान, बुद्धि और तावीज़ पर भरोसा तथा अपनी ताकत और शक्ति पर निर्भर करता है तो अल्लाह भी उसे उन्ही चीज़ों के हवाले कर छोड़ देता है। शेख सुलेमान ने 'तैसीरुल अज़ीज़ अल-हमीद' में कहा: "यह बात ग्रंथों और अनुभवों से प्रमाणित है।"

(1) अर्थात: ऐसा गुनाह जो व्यक्ति को इस्लाम से बाहर कर देता है और अधर्मी बना देता है।

(2) अल्लाह के गुण को किसी अन्य में मानना या पूजा का थोड़ा सा भी हिस्सा किसी अन्य के लिए प्रस्तुत करना इस्लाम मे शिर्क् कहलाता है, शिर्क् महापाप है जिसकी अल्लाह के यहाँ कोई माफी नहीं है।

(3) निष्ठा की प्रतिज्ञा जो एक मुस्लिम अपने शासक के लिए करता है।

धर्म विनाश के साधनों में से एक: जादूगरों और तमाशा दिखाने वालों के पास जाना, तथा भविष्यवक्ताओं और अतीत बताने वाले बाबाओं से पूछना भी है, सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा:

﴿وَمَا يُعَلِّمَانِ مِنْ أَحَدٍ حَتَّىٰ يَقُولَآ إِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ﴾

और वे किसी को भी (जादू) सिखाते न थे जब तक कि कह न देते: "हम तो बस एक परीक्षा हैं; तो तुम कुफ़्र में न पड़ो।" (अल-बक़रा: 102)

हदीस[1] में है: "जो भविष्यवक्ता या अतीत बताने वाले बाबा के पास आया और उनकी बातों पर विश्वास किया उसने मुहम्मद ﷺ पर उतारे गए दीन का इंकार कर दिया।" (मुस्नद अहमद)

जो कोई जादूगरों से दूसरों के खिलाफ साजिश करवाता है, उसकी साजिश का संकट उसी पर लौट आता है, सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा:

﴿وَلَا يَحِيقُ ٱلْمَكْرُ ٱلسَّيِّئُ إِلَّا بِأَهْلِهِۦ﴾

हालाँकि बुरी चाल अपने ही लोगों को घेर लेती है। (फ़ातिर: 43)

जैसे अंधेरे को अंधेरे से दूर नहीं किया जा सकता, वैसे ही जादू के प्रभाव को भी क़ुरआन की रोशनी से दूर किया जाएगा, ना कि उसी जैसे जादू से।

﴿وَنُنَزِّلُ مِنَ ٱلْقُرْءَانِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ﴾

हम क़ुरआन में से जो उतारते हैं वह मोमिनों के लिए शिफ़ा (आरोग्य) और दयालुता है। (अल-इसरा: 82)

इसलिए ऐ मुस्लिमो! अपनी आस्था की हिफाजत करो, यह आपके पास सबसे कीमती मिल्कियत और सबसे प्रिये धन है, क्यूंकि शिर्क फितरत (प्राकृतिक प्रवृत्ति) के प्रकाश को बुझा देता है और यह दुख और दुश्मनों के प्रभुत्व का कारण है।

मैं धुतकारे हुए शैतान से अल्लाह की शरण में आता हूँ

﴿فَٱسْتَمْسِكْ بِٱلَّذِىٓ أُوحِىَ إِلَيْكَ إِنَّكَ عَلَىٰ صِرَٰطٍ مُّسْتَقِيمٍ * وَإِنَّهُۥ لَذِكْرٌ لَّكَ وَلِقَوْمِكَ وَسَوْفَ تُسْـَٔلُونَ﴾

(1) पैग़म्बर मुहम्मद ﷺ की प्यारी प्यारी बातों को हदीस कहा जाता है।

अतः तुम उस चीज़ को मज़बूती से थामे रहो जिसकी तुम्हारी ओर प्रकाशना की गई है। निश्चय ही तुम सीधे मार्ग पर हो। निश्चय ही वह अनुस्मृति है तुम्हारे लिए और तुम्हारी क़ौम के लिए। शीघ्र ही तुम सबसे पूछा जाएगा। (अल ज़ुखरुफ: 43)

अल्लाह मेरे लिए और आप के लिए कुरान में बरकत दे।

दूसरा ख़ुतबा (उपदेश)

अल्लाह की स्तुति है उसके एहसान पर, उसका धन्यवाद है उसकी तोफ़ीक़[1] और कृपा पर, मैं अल्लाह की शान को महान मानते हुए गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद उसके भक्त और दूत हैं, उन पर, उनके परिवार पर और उनके साथियों पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद बना रहे।

अल्लाह की प्रशंसा और नबी पर दरूद के बाद

हे मुस्लिमो!

शहादतैन[2] के बाद दूसरा स्तम्भ नमाज़ है, क़यामत के दिन सबसे पहले बन्दे से इसी का हिसाब लिया जाएगा, इसलिए मुसलमानों की जमाअत के साथ इसकी अदाएगी में कोताही मत करो और आलस्य को अपने प्रभु की आज्ञाकारिता पर प्राथमिकता ना दो, अल्लाह ने नमाज़ की पाबंदी करने वालों के लिए जो विशाल उपहार तय्यार किए हैं उससे बेपरवाह ना बनो। बंदे के प्रभु के साथ संबंध की मात्रा के अनुसार ही आशीर्वाद के द्वार खुलते हैं, इसलिए पापों और गुनाहों से बचो; क्योंकि वे आप पर आज्ञाकारिता को बोझ बना देते हैं।

ईश्वर की ओर बुलाने में ईश्वर के धर्म का सम्मान और नबियों और रसूलों के तरीकों का अनुसरण है और यह सबसे अच्छा और सबसे सम्मानजनक कथन है। बीमारी को महसूस करो और उसके लिए उचित दवा निर्धारित करो, जिन लोगों को ईश्वर की ओर आमंत्रित करना है उनकी स्थिति और आवश्यकताओं को जानो। लोगों की चिंताओं को सहन करो और लोगों पर अपनी चिंताओं का बोझ न डालो।

अधिक से अधिक तौबा[3] और इस्तिग़फार[4] करो; क्योंकि (अल्लाह के यहां) अंत का परिपूर्ण होना ही मायने रखता है, शुरुआत की कोताही मायने नहीं रखती। अच्छे कार्य स्वीकार होने की निशानी: परस्पर अच्छे काम करना है। श्री क़तादा (उन पर अल्लाह की

---

(1) तोफ़ीक़: अर्थात नेकी करने के लिए मिलने वाली अल्लाह की विशेष सहायता।

(2) शहादतैन: अर्थात दो गवाहियाँ, पहली गवाही इस बात की कि अल्लाह के सिवा कोई पूजनीय नहीं, दूसरी गवाही इस बात की कि मुहम्मद ﷺ अल्लाह के बंदे और उसके रसूल (दूत) हैं।

(3) तौबा: गुनाह हो जाने के बाद अल्लाह की और पलटना, पश्चाताप करना और भविष्य में उस गुनाह को दोबारा ना करने का वादा करना।

(4) इस्तिग़फार: अल्लाह से छमा मांगना।

दया हो) ने कहा: "यह क़ुरआन आपको आपकी बीमारी और आपकी दवा दोनों की ओर मार्गदर्शन करता है, आपकी बीमारी पाप है, और आपकी दवा इस्तिग़फार है।" यह जन्नत में प्रवेश, अच्छे आनंद में वृद्धि, शक्ति बढ़ाने और दुख को दूर करने का साधन है। श्री अबुल-मिनहाल (उन पर अल्लाह की दया हो) ने कहा: "एक बन्दे के लिए कब्र का सबसे प्रिय पड़ोसी इस्तिग़फार है।"

जान लो कि ईश्वर ने आपको अपने नबी पर दरूद व सलाम भेजने की आज्ञा दी है...

तौहीद को मज़बूती से थामना[1]

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो पूर्णता, स्थायित्व, महिमा और गर्व में विलक्षण है, जो सर्वोत्तम गुणों और नामों के साथ वर्णित है, जो अपने समान और समकक्ष से मुक्त है। मैं उसके पुरुस्कारों और आशीर्वादों पर उसकी प्रशंसा करता हूँ।

मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह एक है, उसका कोई साझी नहीं है, जो भेदों और दो लोगों के बीच की बातों का भी ज्ञाता है।

मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके भक्त और रसूल (दूत) हैं, जिन्हें उज्जवल मार्ग और प्रकाशमय विधान के साथ भेजा गया, अल्लाह का सलाम व शांति उन पर, उनके परिवार और उनके नेक साथियों पर क़यामत के दिन तक सदेव बने रहें।

अल्लाह की प्रशंसा और नबी पर दरूद के बाद:

ऐ अल्लाह के बंदो! अल्लाह से डरो जैसे की उससे डरने का हक है, और उस दिन के लिए कर्म करो जिसमें रहस्य प्रकट हो जाएंगे और दिल व विवेक के सारे भेद खुल जाएंगे।

हे मुस्लिमो!

मनुष्य के अंदर मौजूद इस्लाम के जन्मजात स्वभाव और अल्लाह की तरफ से मिलने वाले मार्गदर्शन और स्पष्टीकरण के कारण, सारे लोग सत्य पर एक ही राष्ट्र थे, परंतु जब अवधि लंबी हो गई तो हनीफवाद (ईश्वर की ओर एकाग्रता) की विशेषताएं गायब हो गईं, ईमान (विश्वास) को दूषित करने वाली और उसकी पवित्रता को भंग करने वाली अशुद्धियाँ उनमें प्रवेश कर गईं, फिर वे शिर्क में पड़ गए और ईश्वर के अलावा अन्य के लिए कई प्रकार की पूजा शुरू कर दी। इसलिए उनकी एकता टूट गई और उनके शब्दों में अंतर आ गया, फिर अल्लाह ने दूतों को भेजा, जो शुभ समाचार और चेतावनियों के वाहक थे, ताकि लोगों के पास दूतों के बाद अल्लाह के खिलाफ तर्क न रहे। अंत में हमारे नबी मुहम्मद ﷺ को एक ऐसी क़ौम में भेजा गया जो अज्ञानता, अंधकार और पथभ्रष्टता में जी रही थी; बहुदेववाद उनके धर्म का आधार था, मूर्तियाँ उनकी स्वामी थीं, अतः आपने उन्हें सच्चे धर्म की ओर

(1) ये ख़ुतबा मस्जिद-ए-नबवी में जुमे के दिन 24/12/1419 हिजरी को दिया गया।

बुलाया, जो सबूतों पर आधारित था, जिसको आयतों[1] ने स्पष्ट किया था, और प्रमाणों ने जिसकी पुष्टि की थी।

अल्लाह के बंदो! अक़ीदे (आस्था) से विश्वासियों को इसलिए संबोधित किया जाता है; ताकि वे अपने ईमान में वृद्धि करें; जैसा कि सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा:

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ ءَامِنُواْ بِٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ وَٱلۡكِتَٰبِ ٱلَّذِي نَزَّلَ عَلَىٰ رَسُولِهِۦ وَٱلۡكِتَٰبِ ٱلَّذِيٓ أَنزَلَ مِن قَبۡلُۚ﴾

ऐ ईमान वालो! अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके रसूल पर और उस किताब पर जो उसने अपने रसूल पर उतारी है और उस किताब पर भी, जिसको वह इसके पहले उतार चुका है। (अल-निसा: 136)

और अपने धर्म की प्राप्ति के लिए आश्वस्त हो जाओ, उसमें किसी भी कमी या दोष से सावधान रहो।

बल्कि ईश्वर ने अपने पैगम्बरों और रसूलों को संबोधित किया है कि वे शिर्क (बहुदेववाद) को खारिज करें और इसका और इसके वाहकों का खंडन करें। (पैगम्बरों और रसूलों का शिर्क में पड़ना तो बहुत दूर की बात है) सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा :

﴿وَإِذۡ بَوَّأۡنَا لِإِبۡرَٰهِيمَ مَكَانَ ٱلۡبَيۡتِ أَن لَّا تُشۡرِكۡ بِي شَيۡـٔٗا وَطَهِّرۡ بَيۡتِيَ لِلطَّآئِفِينَ وَٱلۡقَآئِمِينَ وَٱلرُّكَّعِ ٱلسُّجُودِ﴾

याद करो जब कि हमने इब्राहीम के लिए अल्लाह के घर को ठिकाना बनाया, इस आदेश के साथ कि "मेरे साथ किसी चीज़ को साझी न ठहराना और मेरे घर को तवाफ़ (परिक्रमा) करने वालों और खड़े होने और झुकने और सजदा करने वालों के लिए पाक-साफ़ रखना।" (अल-हज: 26)

महान अल्लाह अपने प्रिय बन्दे मुहम्मद ﷺ को संबोधित करते हुए कहता है:

﴿وَٱدۡعُ إِلَىٰ رَبِّكَۖ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ ٱلۡمُشۡرِكِينَ﴾

और अपने रब की ओर बुलाओ और बहुदेववादियों में कदापि सम्मिलित न होना। (अल-क़सस: 87)

और फ़रमाया:

---

(1) आयत: अर्थात अल्लाह की निशानियाँ जो सारे संसार और उसकी आखिरी वाणी पवित्र कुरान मे बिखरी हुई हैं।

﴿فَلَا تَدۡعُ مَعَ ٱللَّهِ إِلَٰهًا ءَاخَرَ فَتَكُونَ مِنَ ٱلۡمُعَذَّبِينَ﴾

अतः अल्लाह के साथ दूसरे इष्ट-पूज्य को न पुकारना, अन्यथा तुम्हें भी यातना दी जाएगी। (अल-शुअरा: 213)

और इसके माध्यम से पथभ्रष्ट लोगों को भी संबोधित किया गया ताकि वो सीधा रास्ता पकड़ें, महान अल्लाह कहता है:

﴿قُلۡ يَٰٓأَهۡلَ ٱلۡكِتَٰبِ تَعَالَوۡاْ إِلَىٰ كَلِمَةٖ سَوَآءِۭ بَيۡنَنَا وَبَيۡنَكُمۡ أَلَّا نَعۡبُدَ إِلَّا ٱللَّهَ وَلَا نُشۡرِكَ بِهِۦ شَيۡـٔٗا وَلَا يَتَّخِذَ بَعۡضُنَا بَعۡضًا أَرۡبَابٗا مِّن دُونِ ٱللَّهِۚ فَإِن تَوَلَّوۡاْ فَقُولُواْ ٱشۡهَدُواْ بِأَنَّا مُسۡلِمُونَ﴾

कहो, "ऐ किताबवालो! आओ एक ऐसी बात की ओर जिसे हमारे और तुम्हारे बीच समान मान्यता प्राप्त है; यह कि हम अल्लाह के अतिरिक्त किसी की बंदगी न करें और न उसके साथ किसी चीज़ को साझी ठहराएँ और न परस्पर हममें से कोई एक-दूसरे को अल्लाह से हटकर रब बनाए।" फिर यदि वे मुँह मोड़ें तो कह दो, "गवाह रहो, हम तो मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं।" (आल इमरान: 64)

मुस्लिमो! इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है; क्योंकि अल्लाह को पूजा के साथ एक ठहराना ही धर्म की नींव और दीन का मूल है, इसी पर क़िबला काएम है और इसी पर धर्म स्थापित है। यह ईश्वर की पुस्तक में पहला आदेश है, और बहुदेववाद का निषेध ही उसकी पुस्तक में पहला निषेध है, अल्लाह का कथन है:

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ ٱعۡبُدُواْ رَبَّكُمُ ٱلَّذِي خَلَقَكُمۡ وَٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تَتَّقُونَ ۞ ٱلَّذِي جَعَلَ لَكُمُ ٱلۡأَرۡضَ فِرَٰشٗا وَٱلسَّمَآءَ بِنَآءٗ وَأَنزَلَ مِنَ ٱلسَّمَآءِ مَآءٗ فَأَخۡرَجَ بِهِۦ مِنَ ٱلثَّمَرَٰتِ رِزۡقٗا لَّكُمۡۖ فَلَا تَجۡعَلُواْ لِلَّهِ أَندَادٗا وَأَنتُمۡ تَعۡلَمُونَ﴾

ऐ लोगो! अपने रब की बंदगी करो जिसने तुम्हें और तुमसे पहले के लोगों को पैदा किया, ताकि तुम (उसकी यातना से) बच सको। वही है जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श और आकाश को छत बनाया, और आकाश से पानी उतारा, फिर उसके द्वारा हर प्रकार की पैदावार और फल तुम्हारी रोज़ी के लिए पैदा किए, अतः जब तुम जानते हो तो अल्लाह के समकक्ष न ठहराओ। (अल-बक़रह: 21-22)

ईश्वर की एकता की घोषणा किए बिना ईश्वर के धर्म में प्रवेश मान्य नहीं है, यह आखिरी चीज़ है जिसे लेकर एक मुसलमान दुनिया से बाहर निकलता है। नबी ﷺ कहते हैं: "अपने मृतकों से ला इलाहा इल्लल्लाह (अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है) कहने का आग्रह किया करो। (सही मुस्लिम) इस वचन के विपरीत (शिर्क) में पड़ना बच्चों को मारने से भी बड़ा पाप है, श्री इब्ने मसऊद (रजियल्लाहु अन्हु) कहते हैं: "मैंने पैग़ंबर ﷺ से सवाल किया कि सबसे बड़ा पाप क्या है? तो आपने उत्तर दिया: "किसी को अल्लाह (ईश्वर) का प्रतिद्वंद्वी बनाना, जबकि उसी ने तुम्हें बनाया है।" मैंने कहा: फिर कौन सा? आपने कहा: "अपने बेटे को इस डर से मार डालना कि वह साथ में खाना खाएगा।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम) इसीलिए क़ुरआन में शिर्क के निषेध पर ज़ोर है और एकेश्वरवाद की आज्ञा को दोहराया गया है। ईश्वर ने उसी से आदेशों का आरम्भ किया और उसे बार बार दोहराया और उसके लिए उदाहरण भी दिए।

ईश्वर की आराधना करने का आदेश रसूलों की पहली पुकार है। इब्राहीम अल-खलील (उन पर शांति हो) ने अपने पिता से अपनी दावत शुरू की:

﴿يَـٰٓأَبَتِ لِمَ تَعۡبُدُ مَا لَا يَسۡمَعُ وَلَا يُبۡصِرُ وَلَا يُغۡنِي عَنكَ شَيۡـٔٗا﴾

"ऐ मेरे पिता जी! आप उस चीज़ को क्यों पूजते हैं, जो न सुन और देख सकती है और न आपके कुछ काम ही आ सकती है?" (मरयम: 42)

और हमारे पैग़ंबर मुहम्मद ﷺ विस्तृत विधान लागू होने से पहले दस साल तक लोगों को इसी तौहीद की ओर बुलाते रहे, क्यूंकि ये अधिक महत्वपूर्ण थी।

पैग़ंबर मुहम्मद ﷺ ने धर्मप्रचारकों को निर्देश दिया कि वे सबसे पहले लोगों को तौहीद (एकेश्वरवाद) की दावत दें। पैग़ंबर ﷺ ने मुआज़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) को यमन भेजते समय उनसे कहा था: “तुम धार्मिक ग्रंथ वालों (यहूदियों और ईसाइयों) के पास जा रहे हो; अत: उन्हें इस बात की गवाही देने के लिए बुलाना कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और मैं अल्लाह का पैग़ंबर हूँ।” (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

एकेश्वरवादियों के इमाम पैग़ंबर इब्राहीम (उन पर शांति हो) ने अपने रब से इन शब्दों में प्रार्थना की थी:

﴿وَٱجۡنُبۡنِي وَبَنِيَّ أَن نَّعۡبُدَ ٱلۡأَصۡنَامَ﴾

"मुझे और मेरे बेटों को मूर्तियों की पूजा करने से बचाओ।" (इब्राहीम: 35)

श्री इब्राहीम अल-तैमी ने कहा: "इब्राहीम जैसे महान नबी के बाद कौन है जो (शिर्क की) विपदा से सुरक्षित होगा?"

नबियों ने अपने बच्चों को मरते दम तक सही धर्म और शुद्ध विश्वास पर जमे रहने की वसिय्यत की है:

﴿وَوَصَّىٰ بِهَآ إِبۡرَٰهِـۧمُ بَنِيهِ وَيَعۡقُوبُ يَٰبَنِيَّ إِنَّ ٱللَّهَ ٱصۡطَفَىٰ لَكُمُ ٱلدِّينَ فَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنتُم مُّسۡلِمُونَ﴾

और इसी की वसिय्यत इब्राहीम ने अपने बेटों को की और याक़ूब ने भी (अपनी सन्तान को की) कि, "ऐ मेरे बेटो! अल्लाह ने तुम्हारे लिए यह दीन (धर्म) चुना है, तो इस्लाम (ईश-आज्ञापालन) के अतिरिक्त किसी और दशा में तुम्हारी मृत्यु न हो।" (अल-बक़रह: 132)

मौत के समय भी नबियों ने अपनी संतान से यही वचन लिया:

﴿أَمۡ كُنتُمۡ شُهَدَآءَ إِذۡ حَضَرَ يَعۡقُوبَ ٱلۡمَوۡتُ إِذۡ قَالَ لِبَنِيهِ مَا تَعۡبُدُونَ مِنۢ بَعۡدِيۖ قَالُواْ نَعۡبُدُ إِلَٰهَكَ وَإِلَٰهَ ءَابَآئِكَ إِبۡرَٰهِـۧمَ وَإِسۡمَٰعِيلَ وَإِسۡحَٰقَ إِلَٰهٗا وَٰحِدٗا وَنَحۡنُ لَهُۥ مُسۡلِمُونَ﴾

क्या तुम मौजूद थे जब याक़ूब की मृत्यु का समय आया? जब उसने अपने बेटों से कहा, "तुम मेरे पश्चात किसकी इबादत करोगे?" उन्होंने कहा, "हम आपके इष्ट-पूज्य और आपके पूर्वज इब्राहीम और इसमाईल और इसहाक़ के इष्ट-पूज्य की बंदगी करेंगे - जो अकेला इष्ट-पूज्य है, और हम उसी के आज्ञाकारी (मुस्लिम) हैं।" (अल बक़रह: 133)

हे मुस्लिमो!

सीधा रास्ता उत्तम उद्देश्य है, इसे प्राप्त करना सबसे सम्माननीय प्रतिभा है और सटीक आस्था विपत्ति में सुरक्षित पनाहगाह है:

﴿ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَلَمۡ يَلۡبِسُوٓاْ إِيمَٰنَهُم بِظُلۡمٍ أُوْلَٰٓئِكَ لَهُمُ ٱلۡأَمۡنُ وَهُم مُّهۡتَدُونَ﴾

जो लोग ईमान लाए और अपने ईमान में किसी ज़ुल्म (शिर्क) की मिलावट नहीं की, वही लोग हैं जो भय मुक्त हैं और वही सीधे मार्ग पर हैं।" (अल-अनआम: 83)

प्रलोभनों, परीक्षाओं और क्लेशों की बाढ़ के दौरान केवल अल्लाह की शरण में जाना ही एकमात्र मार्ग है; सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा:

﴿وَذَا ٱلنُّونِ إِذ ذَّهَبَ مُغَٰضِبٗا فَظَنَّ أَن لَّن نَّقۡدِرَ عَلَيۡهِ فَنَادَىٰ فِي ٱلظُّلُمَٰتِ
أَن لَّآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنتَ سُبۡحَٰنَكَ إِنِّي كُنتُ مِنَ ٱلظَّٰلِمِينَ ۞
فَٱسۡتَجَبۡنَا لَهُۥ وَنَجَّيۡنَٰهُ مِنَ ٱلۡغَمِّۚ وَكَذَٰلِكَ نُـۨجِي ٱلۡمُؤۡمِنِينَ﴾

और मछलीवाले (यूनुस) पर भी दया दर्शाई। याद करो जबकि वह अत्यन्त क्रुद्ध होकर चल दिया और समझा कि हम उसे तंगी में न डालेंगे। अन्त में उसने अँधेरों में पुकारा: "तेरे सिवा कोई इष्ट-पूज्य नहीं, महिमावान है तू! निस्संदेह मैं ही दोषी हूँ।" तब हमने उसकी प्रार्थना स्वीकार की और उसे ग़म से छुटकारा दिया। इसी प्रकार तो हम मोमिनों को छुटकारा दिया करते हैं। (अल-अंबिया: 87-88)

अक़ीदे की पवित्रता इरादे को सुधारती है, इच्छा पर लगाम कसती है, कर्म में बरकत लाती और नाम को अमर कर देती है। श्री अबू बक्र के सामने अबू जहल की जीवनी की क्या हेसियत?! और श्री बिलाल के आगे अबू लहब के नसब (वंशावली) का क्या मक़ाम?! दीन का घाटा कोई फिरौती स्वीकार नहीं करता, सोने की भी नहीं:

﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ كَفَرُواْ وَمَاتُواْ وَهُمۡ كُفَّارٞ
فَلَن يُقۡبَلَ مِنۡ أَحَدِهِم مِّلۡءُ ٱلۡأَرۡضِ ذَهَبٗا وَلَوِ ٱفۡتَدَىٰ بِهِۦٓۗ﴾

निस्संदेह जिन लोगों ने इंकार किया और इंकार ही की दशा में मरे, तो उनमें किसी ने धरती के बराबर सोना भी यदि प्राण-मुक्ति के लिए दिया हो तो कदापि स्वीकार नहीं किया जाएगा। (आल इमरान: 91)

हे मुस्लिमो!

तौहीद (एकेश्वरवाद) की खातिर ही अल्लाह का प्राचीन घर (काबा) बनाया गया, पीढ़ियां इसका हज करती आई हैं, मुसलमान इस स्थान तक पहुंचने के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं, इसके निकट ईमान है, और इस के आसपास सुरक्षा और आश्वासन है :

﴿وَإِذۡ بَوَّأۡنَا لِإِبۡرَٰهِيمَ مَكَانَ ٱلۡبَيۡتِ أَن لَّا تُشۡرِكۡ بِي شَيۡـٔٗا﴾

याद करो जब कि हमने इब्राहीम के लिए अल्लाह के घर को ठिकाना बनाया, इस आदेश के साथ कि "मेरे साथ किसी चीज़ को साझी न ठहराना।" (अल-हज: 26)

हज के स्लोगन में भी अल्लाह के साथ शिर्क का इंकार है: "लब्बेक ला शरीका लक" (हम तेरे दरबार में उपस्थित हैं, तेरा कोई साझी नहीं)। और अरफा के दिन की सबसे अच्छी

दुआ में भी तौहीद को ऊंचा किया गया है, नबी ﷺ कहते हैं: "अरफ़ा के दिन की प्रार्थना सबसे अच्छी प्रार्थना है, मैंने और मुझ से पूर्व के नबियों ने जो सबसे अच्छे बोल बोले वो ये हें: अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं, सारा राजत्व उसी का है, समस्त स्तुति उसी की है, वह हर चीज़ में सक्षम है।" (सुनन तिरमिज़ी)

शुद्ध तौहीद सभी आसमानी संदेशों का मूल है, धर्म की नींव है, यही वो सत्य है जिस पर हमें सभी अशुद्धियों से ईर्ष्या करनी चाहिए और उसकी हर मिलावट से रक्षा करनी चाहिए। महान अल्लाह ने कहा:

﴿وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولًا أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ﴾

हमने हर समुदाय में कोई न कोई रसूल भेजा कि "अल्लाह की बंदगी करो और ताग़ूत[1] से बचो।" (अल-नहल: 36)

अल्लाह के बंदो!

ईमानदारी और धर्म के वचन पर ही नबी ﷺ ने अपनी दावत स्थापित की, इब्राहीम (उन पर शांति हो) ने इसको अपने पीछे बाकी रखा, बोलने वालों ने "ला इलाहा इल्लल्लाह" (अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं) से अधिक प्रशंसनीय वचन कभी नहीं बोला, इसका पालन करना जन्नत की कीमत है, अगर यह आकाश और पृथ्वी से तौला जाए तो इसका पल्ला भारी हो जाए, श्री इब्ने-उयेना कहते हैं: "अल्लाह ने बन्दों को जो कुछ पुरुस्कार दिया है उनमें सबसे विशाल पुरुस्कार "ला इलाहा इल्लल्लाह" (अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं) का ज्ञान है।"

लेकिन इस वचन को केवल जीभ से दोहरा लेना लाभदायक नहीं। हाँ, उस व्यक्ति के लिए ये लाभदायक है जो पुष्टि व इंकार के रूप में इसका अर्थ जानता हो, इसके ज्ञान और उस पर विश्वास करके इसकी शर्तें पूरी करता हो, इसके अनुसार कर्म करके अपनी शुद्धता और निश्चितता को प्रमाणित करता हो, उसके तकाजे से प्यार, उसको समर्पण और स्वीकार करता हो और अल्लाह के अलावा अन्य की इबादत का इंकार करता हो।

हे मुस्लिमो!

तौहीद (एकेश्वरवाद) और शिर्क (बहुदेववाद) दो विपरीत चीज़ें हैं, जो रात और दिन की तरह एक साथ जमा नहीं हो सकते, अत; जब शिर्क पाया जाएगा तो ईमान समाप्त हो जाएगा।

---

(1) अल्लाह के सिवा हर वो वस्तु जिसकी पूजा की जाती है।

आपके रब ने आपको सम्मान दिया है और दूसरों के आगे दिल और चेहरे को अपमानित करने से बचाया है, वह आपको अपनी ओर मुड़ने के लिए आमंत्रित करता है; इस लिए अपना मन उसी की ओर लगाएं, अपनी आँखें भूमि पर न गिराएं, पृथ्वी और आकाश के प्रभु को छोड़ किसी और को न पुकारें। कभी न मरने वाले अत्यंत जीवित को पुकारने वाला क्या उस व्यक्ति के समान हो सकता है जो किसी मृत को पुकारता है और कब्रों में पड़ी गली सड़ी हड्डियों से चिपक जाता है?

हे मुस्लिमो!

अल्लाह के अलावा किसी और के लिए जानवर वध मत करो, क्योंकि जानवर वध एक पूजा है जो अल्लाह के लिए ही उचित है, दूसरों के लिए जानवर वध शिर्क है। आपके रब अल्लाह ने ही आपको पैदा किया है, और उसी ने आपको वह जानवर प्रदान किया है जिसे आप वध करने जा रहे हैं; इसलिए इसकी बलि केवल उसीके लिए दो जिस ने आपको और उसको पैदा किया है:

﴿فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَٱنْحَرْ﴾

अतः तुम अपने रब के लिए ही नमाज़ पढ़ो और (उसी के लिए) क़ुरबानी करो। (अल-कौसर: 2)

केवल सर्वशक्तिमान अल्लाह की क़सम खाओ; अल्लाह ने आपको बोलने की क्षमता दी है, सो उसी का धन्यवाद करो, किसी और की क़सम न खाओ; ना किसी नबी की क़सम खाओ ना किसी पीर की, ना किसी वरदान की, ना किसी प्राणी के जीवन की; नबी ﷺ कहते हैं: "जो कोई भगवान के अलावा किसी अन्य की क़सम खाता है; उसने कुफ्र[1] या शिर्क[2] किया।" (सुनन तिर्मिज़ी)

कड़े, धागे और तावीज़ निर्जीव प्राणी हैं और आप एक जीवित प्राणी हैं, इसलिए भगवान द्वारा सम्मानित और उच्च स्थान दिए जाने के बाद अपनी स्थिति को कम करने से पहले, अपना खयाल रखो। एक निर्जीव वस्तु का सहारा न लो कि तुम उसे बुराई को दूर करने, अच्छाई लाने और बुरी नज़र से बचने के बहाने अपनी छाती या कलाई पर ढोते फिरो, जबकि महान अल्लाह कहता है:

(1) दीन का इंकार।

(2) अल्लाह की महिमा में किसी को साझी बनाना।

﴿وَإِن يَمۡسَسۡكَ ٱللَّهُ بِضُرّٖ فَلَا كَاشِفَ لَهُۥٓ إِلَّا هُوَۖ وَإِن يُرِدۡكَ بِخَيۡرٖ فَلَا رَآدَّ لِفَضۡلِهِۦۚ يُصِيبُ بِهِۦ مَن يَشَآءُ مِنۡ عِبَادِهِۦۚ وَهُوَ ٱلۡغَفُورُ ٱلرَّحِيمُ﴾

यदि अल्लाह तुम्हें किसी तकलीफ़ में डाल दे तो उसके सिवा कोई उसे दूर करनेवाला नहीं। और यदि वह तुम्हारे लिए किसी भलाई का इरादा कर ले तो कोई उसके अनुग्रह को फेरने वाला भी नहीं। वह इसे अपने बन्दों में से जिस तक चाहता है, पहुँचाता है और वह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।" (यूनुस: 107)

और नबी ﷺ ने कहा: "जो कोई तावीज़ पहनता है, वो अल्लाह के साथ साझी ठहराता है।" (मुस्नद अहमद) सो उसी अकेले से संबंधित रहो और अपने सारे मामले उसी को सौंप दो।

हे मुस्लिमो!

कुछ लोग अपनी सृष्टि के उद्देश्यों से बेखबर हो गए, सो उनकी सनक और अभिलाषाओं ने उन्हें पकड़ लिया, प्रलोभनों और विपत्तियों ने उन्हें घेर लिया, उनमें से कुछ अनदेखे को प्रकट करने और भविष्य की ओर देखने के बहाने जादूगरों, चमतकारियों और धोखेबाजों पर मोहित हो गए और उससे गुमराही और और असत्य में पैसा बर्बाद करने के सिवा कुछ हासिल नहीं कर सके। जबकि अल्लाह ने सत्य को अपने वचन से स्पष्ट कर दिया है:

﴿قُل لَّا يَعۡلَمُ مَن فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِ ٱلۡغَيۡبَ إِلَّا ٱللَّهُۚ وَمَا يَشۡعُرُونَ أَيَّانَ يُبۡعَثُونَ﴾

कहो, "आकाशों और धरती में जो भी है, अल्लाह के सिवा किसी को भी परोक्ष का ज्ञान नहीं है।" (अल नम्ल: 65)

कुछ लोग तथाकथित राशिफल, भाग्य, आत्माओं की उपस्थिति, और हस्तरेखा पढ़ने से मोहित हो गए, सो वे अत्यंत भ्रमों और तक़दीर (पूर्वनियति) के साथ असंतोष से पीड़ित हुए। सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा:

﴿أَمۡ عِندَهُمُ ٱلۡغَيۡبُ فَهُمۡ يَكۡتُبُونَ﴾

या उनके पास परोक्ष का ज्ञान है तो वे लिख रहे हैं? (अल-क़लम: 47)

अल्लाह के बंदो!

इखलास (शुद्धता) कर्म का ताज है, जो कोई अल्लाह के साथ दूसरे को साझी बनाएगा तो अल्लाह शिर्क से सबसे अधिक लापरवाह है, वह अपने बन्दों के लिए कुफ़्र को पसंद नहीं

करता। हाए दिखावा करने वालों की बर्बादी! न तो दुनिया के लिए वे कुछ जोड़ सके और न परलोक के लिए ही वे कुछ कर पाए। नबी ﷺ कहते हैं: "ऐसी चीज़ मिलने का दावा करने वाला जो उसे नहीं दी गई, झूठे कपड़े पहनने वाले जैसा है" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

दिखावा करनेवालों की आशाएँ खो गईं, उनकी मेहनत बेरंग हो गई, वे दुनिया में ही रुसवा हो गए, उन्हें परलोक में अच्छा इनाम नहीं मिलेगा। इसलिए दिखावे और प्रतिष्ठा से सावधान रहें; क्योंकि क़यामत के दिन सबसे पहले आग में, अपने कर्मों का दिखावा करनेवाले ही जलेंगे।

मैं धुतकारे हुए शैतान से अल्लाह की शरण में आता हूँ

﴿وَمَآ أُمِرُوٓاْ إِلَّا لِيَعۡبُدُواْ ٱللَّهَ مُخۡلِصِينَ لَهُ ٱلدِّينَ حُنَفَآءَ وَيُقِيمُواْ ٱلصَّلَوٰةَ وَيُؤۡتُواْ ٱلزَّكَوٰةَۚ وَذَٰلِكَ دِينُ ٱلۡقَيِّمَةِ﴾

और उन्हें आदेश भी बस यही दिया गया था कि वे निष्ठा एवं विनयशीलता को उसके लिए विशिष्ट करके, बिलकुल एकाग्र होकर अल्लाह की बंदगी करें, नमाज़ की पाबन्दी करें और ज़कात दें। और यही है सत्यवादी समुदाय का धर्म। (अल-बय्यिनह: 5)

अल्लाह महान क़ुरआन के प्रति हमें और आपको आशीर्वाद दे।

दूसरा ख़ुतबा

ईश्वर की स्तुति हो, जिसकी कृपा से पथ-प्रदर्शक ने मार्ग प्रशस्त किया और जिसके न्याय से गुमराह लोग पथभ्रष्ट हुए, उसकी स्तुति बयान करता हूँ उस व्यक्ति की भांति जिसने उन तमाम बुरे दोषों से प्रभु की शुद्धता बयान की जो पापियों ने उस पर लगाए।

मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं, सिंहासन के रब अल्लाह की महिमा हो, जो ये (अपराधी) वर्णन करते हैं उससे वो बहुत ऊपर है।

मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक, दूत, मित्र, सच्चे और भरोसेमंद हैं, अल्लाह की ओर से शांति हो उन पर और उनके परिवार वे साथियों पर जो उनके मार्गदर्शन का पालन करते हैं, और उनके मार्ग पर चलते हैं।

अल्लाह की प्रशंसा और नबी पर दरूद के बाद:

हे मुस्लिमो!

ईमान कोई व्यापारिक वस्तु, सिर्फ दावा या नाम नहीं है, बल्कि सुरक्षित यकीन, सही कर्म, वफादारी और दुश्मनी, चाल चलन, उदारता में खर्च करना और नुकसान से बचना ही सच्चा ईमान है।

तौहीद की प्राप्ति के लिए हृदय की निरंतर सतर्कता की आवश्यकता होती है, जो आत्मा को ईश्वर की दासता में रुकावट डालने वाले हर विचार से शुद्ध करती रहे।

जो कोई भी बड़े शिर्क[1] के रसातल में गिर जाता है; अर्थात वो मृतकों से गरीबी या बीमारी को समाप्त करने की प्रार्थना करता है या उनसे कुछ लाभ (जैसे कि धन या बच्चा लाने की) दुआ करता है, कब्र वालों और दरगाहों से मदद लेता है, या कब्रों की परिक्रमा करता है, या उनके लिए बलि चढ़ाता है, या उनकी प्रतिज्ञा लेता है, तो वो ईश्वर के प्रभुत्व की महिमा को कम आंकता है, उसकी पूजनीयता का अपमान करता है, सृष्टि के भगवान पर अविश्वास करता है और भगवान की दृष्टि में सबसे बड़ा पाप करता है, ऐसे व्यक्ति को स्वर्ग से प्रतिबंधित कर हमेशा के लिए नरक में फेंक दिया जाएगा। महान अल्लाह कहता है:

---

(1) शिर्क दो प्रकार का होता है: छोटा शिर्क् और बड़ा शिर्क। छोटा शिर्क जैसे अल्लाह के अलावा किसी और की कसम खाना, बड़ा शिर्क जैसे अल्लाह के अलावा किसी और से नफा नुकसान की आशा रखना।

﴿إِنَّهُۥ مَن يُشۡرِكۡ بِٱللَّهِ فَقَدۡ حَرَّمَ ٱللَّهُ عَلَيۡهِ ٱلۡجَنَّةَ وَمَأۡوَىٰهُ ٱلنَّارُۖ وَمَا لِلظَّٰلِمِينَ مِنۡ أَنصَارٖ﴾

जो कोई अल्लाह का साझी ठहराएगा, उसपर तो अल्लाह ने जन्नत हराम कर दी है और उसका ठिकाना आग है। अत्याचारियों का कोई सहायक नहीं। (अल-माइदा: 72)

इसलिए सत्य के मार्ग पर चलो, हिदायत के मार्ग पर चलो, अपनी आस्था की रक्षा करने में मेहनत करो, केवल ईश्वर ही ईश्वर के दंड से बचा सकता है, और ईश्वर के वरदान को उसकी भक्ति से और उसकी तरफ से निर्धारित किए गए रास्ते पर चल कर ही प्राप्त किया जा सकता है।

तौहीद जीवन के अंधेरों में आशा का द्वार है, जब तक आप अपने सभी शब्दों और कर्मों के साथ एक अकेले भगवान की वंदना नहीं करते आप अपनी मुराद हासिल नहीं कर सकते; वही है जो आपको मृत्यु के बाद दोबारा जिवित करेगा फिर आप से आपके कामों का हिसाब लेगा।

﴿أَلَآ إِلَى ٱللَّهِ تَصِيرُ ٱلۡأُمُورُ﴾

सुन लो, सारे मामले अन्ततः अल्लाह ही की ओर पलटेंगे। (अल-शूरा: 53)

फिर जान लो कि अल्लाह ने आपको अपने प्यारे नबी पर दरूद व सलाम भेजने का आदेश दिया है...

तौहीद के फल[1]

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, हम उसकी प्रशंसा करते हैं उसी से सहायता और अपने पापों की क्षमा मांगते हैं, हम अपने प्राण और कर्म की बुराइयों से उसकी शरण चाहते हैं, वह जिसे सत्य मार्ग पर चला दे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे वह भटका दे उसे कोई सत्य मार्ग पर चला नहीं सकता, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह एक है, उसका कोई साझी नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, सलाम व शांति हो उन पर, उनके परिवार पर और उनके पवित्र साथियों पर।

अल्लाह की प्रशंसा और नबी पर दरूद के बाद:

ऐ अल्लाह के बंदो! अल्लाह से डरो जैसे की उससे डरने का हक है, क्योंकि अल्लाह से डरना ही हिदायत का रास्ता है और उसका विरोध करना कष्ट का मार्ग है।

हे मुस्लिमो!

ईश्वर एकता में अद्वितीय है, उसने स्वयं को, किसी साझी, समान और मिसाल से पाक बताया है, अपने बंदों को केवल अपनी पूजा की आज्ञा दी है और पूजा के कार्यों में विविधता रखी है। उसने इबादत को अपने लिए ख़ास करने को धर्म की नींव और उसका प्रथम स्तम्भ घोषित किया है, यही अच्छाई का योग है, इसके बिना कोई भी अच्छा काम स्वीकार नहीं किया जाता, इसके साथ थोड़ा कर्म कई गुणा कर दिया जाता है, इसके बिना अच्छे कर्म व्यर्थ हैं, भले ही वे पहाड़ों के समान हों।

यह नबियों की पहली और अंतिम पुकार है, इसी कारण उन्हें भेजा गया था। सर्वशक्तिमान ने कहा:

﴿وَمَآ أَرۡسَلۡنَا مِن قَبۡلِكَ مِن رَّسُولٍ إِلَّا نُوحِيٓ إِلَيۡهِ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنَا۠ فَٱعۡبُدُونِ﴾

हमने तुमसे पहले जो रसूल भी भेजा, उसकी ओर यही प्रकाशना की कि "मेरे सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं। अतः तुम मेरी ही बंदगी करो।" (अल-अंबिया: 25)

(1) ये ख़ुतबा मस्जिद-ए-नबवी में जुमे के दिन 09/06/1434 हिजरी को दिया गया।

अल्लाह की पुस्तक की कोई भी आयत तौहीद के स्पष्टीकरण, उसके मार्गदर्शन, उसके दायित्व, उसके इनाम या उसके विपरीत (शिर्क) के बयान से खाली नहीं है। अल्लाह की पुस्तक में प्रथम आदेश उसकी तौहीद का ही आदेश है; सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा:

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ ٱعۡبُدُواْ رَبَّكُمُ﴾

हे लोगो! अपने प्रभु की इबादत (पूजा) करो (अल-बक़रह: 21)

अर्थात: सिर्फ उसी की पूजा करो और उसकी तौहीद को अपनाओ।

हर नमाज़ में एक मुस्लिम अपने रब से तौहीद की ही प्रतिज्ञा करता है:

﴿إِيَّاكَ نَعۡبُدُ وَإِيَّاكَ نَسۡتَعِينُ﴾

हम तेरी ही वंदना करते हैं (तेरे अतिरिक्त किसी की वंदना नहीं करते) और तुझी से मदद मांगते हैं। (अल-फातिहा: 4)

यह बंदों पर अल्लाह का अधिकार है, कर्तव्यों के संदर्भ में उनका पहला कर्तव्य यही है। पैग़ंबर ﷺ ने मुआज़ (रज़ियल्लाहु अनहु) से कहा था : "पहली चीज जिसकी ओर तुम उन्हें बुलाओगे वह अल्लाह की इबादत है" (सही बुखारी व सही मुस्लिम) कब्र में बंदे से प्रथम प्रशन यही होगा कि तेरा रब कौन है? अर्थात: दुनिया में तुम किस की वंदना करते थे?

इसके महत्व और इस तथ्य के कारण कि इसके अलावा अल्लाह को खुश करने का कोई तरीका नहीं है, शुद्ध बंदों के इमाम (इब्राहीम) ने स्वयं के लिए और अपने वंश के लिए एकेश्वरवाद पर जमे रहने की दुआ करते हुए कहा था:

﴿رَبَّنَا وَٱجۡعَلۡنَا مُسۡلِمَيۡنِ لَكَ وَمِن ذُرِّيَّتِنَآ أُمَّةٗ مُّسۡلِمَةٗ لَّكَ﴾

ऐ हमारे रब! हम दोनों को अपना आज्ञाकारी बना और हमारी संतान में से भी अपना एक आज्ञाकारी समुदाय बना। (अल-बक़रह: 128)

पैग़ंबर यूसुफ (उन पर शांति हो) ने प्रभु से यह दुआ की:

﴿تَوَفَّنِي مُسۡلِمٗا وَأَلۡحِقۡنِي بِٱلصَّٰلِحِينَ﴾

तू मुझे इस दशा में उठा कि मैं मुस्लिम (आज्ञाकारी) हूँ और मुझे अच्छे लोगों के साथ मिला। (यूसुफ: 101)

हमारे पैग़ंबर ﷺ की एक दुआ यह भी थी: "ऐ दिलों को फेरने वाले! मेरे दिल को सत्य पर स्थापित कर दे"। (मुस्नद अहमद)

यही तमाम नबियों की वसिय्यत है :

﴿وَوَصَّىٰ بِهَآ إِبۡرَٰهِـۧمُ بَنِيهِ وَيَعۡقُوبُ يَٰبَنِيَّ إِنَّ ٱللَّهَ ٱصۡطَفَىٰ لَكُمُ ٱلدِّينَ فَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنتُم مُّسۡلِمُونَ﴾

और इसी की वसिय्यत इब्राहीम ने अपने बेटों को की और याक़ूब ने भी (अपनी सन्तान को की) कि "ऐ मेरे बेटो! अल्लाह ने तुम्हारे लिए यह दीन (धर्म) चुना है, तो इस्लाम (ईश-आज्ञापालन) के अतिरिक्त किसी और दशा में तुम्हारी मृत्यु न हो।" (अल-बक़रह: 132)

रसूलों का दृष्टिकोण यह था कि वे इसे अपने बच्चों को पढ़ाते और जब वे मौत के करीब होते तब उनसे इसके बारे में पूछते:

﴿أَمۡ كُنتُمۡ شُهَدَآءَ إِذۡ حَضَرَ يَعۡقُوبَ ٱلۡمَوۡتُ إِذۡ قَالَ لِبَنِيهِ مَا تَعۡبُدُونَ مِنۢ بَعۡدِيۖ قَالُواْ نَعۡبُدُ إِلَٰهَكَ وَإِلَٰهَ ءَابَآئِكَ إِبۡرَٰهِـۧمَ وَإِسۡمَٰعِيلَ وَإِسۡحَٰقَ إِلَٰهٗا وَٰحِدٗا وَنَحۡنُ لَهُۥ مُسۡلِمُونَ﴾

क्या तुम मौजूद थे जब याक़ूब की मृत्यु का समय आया? जब उसने अपने बेटों से कहा: "तुम मेरे पश्चात किसकी इबादत करोगे?" उन्होंने कहा, "हम आपके इष्ट-पूज्य और आपके पूर्वज इब्राहीम और इसमाईल और इसहाक़ के इष्ट-पूज्य की बंदगी करेंगे, जो अकेला इष्ट-पूज्य है, और हम उसी के आज्ञाकारी (मुस्लिम) हैं।" (अल-बक़रह: 133)

नबी ﷺ भी सहाबा के लड़कों को यही सिखाते थे कि सारी वस्तुओं को छोड़ कर केवल अल्लाह से जुड़े रहना; आपने श्री इब्ने-अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से कहा: "हे लड़के! मैं तुम्हें कुछ शब्द सिखाता हूँ; ईश्वर की रक्षा करो, वह तुम्हारी रक्षा करेगा, ईश्वर की रक्षा करोगे तो तुम उसे अपने सामने पाओगे, यदि तुम मांगो तो ईश्वर से ही मांगो, यदि तुमको सहायता मांगनी हो तो सहायता भी उसी से मांगो।" (सुनन तिरमिज़ी)

ईश्वर ने हमें आज्ञा दी है कि हमारी मोत तौहीद पर ही होनी चाहिए:

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ ٱتَّقُواْ ٱللَّهَ حَقَّ تُقَاتِهِۦ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنتُم مُّسۡلِمُونَ﴾

ऐ ईमान लानेवालो! अल्लाह का डर रखो, जैसा कि उसका डर रखने का हक़ है। और तुम्हारी मृत्यु बस इस दशा में आए कि तुम मुस्लिम (आज्ञाकारी) हो। (आल इमरान: 102)

केवल अल्लाह की इबादत करने से सीना खुल जाता है, हृदय आश्वस्त होकर सृष्टि की ग़ुलामी से आज़ाद हो जाता है:

﴿فَمَن يُرِدِ ٱللَّهُ أَن يَهۡدِيَهُۥ يَشۡرَحۡ صَدۡرَهُۥ لِلۡإِسۡلَٰمِۖ﴾

अतः जिसे अल्लाह सीधे मार्ग पर लाना चाहता है, उसका सीना इस्लाम के लिए खोल देता है। (अल-अनआम: 125)

इसी से चिंता खत्म होती और पीड़ा नष्ट होती है:

﴿فَنَادَىٰ فِي ٱلظُّلُمَٰتِ أَن لَّآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنتَ سُبۡحَٰنَكَ إِنِّي كُنتُ مِنَ ٱلظَّٰلِمِينَ ۝ فَٱسۡتَجَبۡنَا لَهُۥ وَنَجَّيۡنَٰهُ مِنَ ٱلۡغَمِّۚ وَكَذَٰلِكَ نُـۨجِي ٱلۡمُؤۡمِنِينَ﴾

अन्त में उसने अँधेरों में पुकारा, "तेरे सिवा कोई इष्ट-पूज्य नहीं, महिमावान है तू! निस्संदेह मैं दोषी हूँ।" तब हमने उसकी प्रार्थना स्वीकार की और उसे ग़म से छुटकारा दिया। इसी प्रकार तो हम मोमिनों को छुटकारा दिया करते हैं। (अल-अंबिया: 87-88)

इब्नुल-क़य्यिम ने कहा: "दुनिया की कठिनाइयों को दूर करने के लिए तौहीद से बढ़ कर कुछ नहीं है।"

तौहीद कीने को दूर करता और हृदय को ठीक करता है; पैग़ंबर ﷺ कहते हैं: "तीन गुण ऐसे हैं जिनके होते हुए एक मुस्लिम के दिल में कभी कीना पैदा नहीं होता: कर्म को केवल अल्लाह के लिए करना, शासकों का भला चाहना और जमात के साथ बने रहना, क्यूंकि जमात की दुआ पीछे से उनकी रक्षा करती है।" (मुस्नद अहमद)

तौहीद अच्छे जीवन का कारण है; बल्कि उसके बिना संसार में सुख नहीं है। सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा:

﴿مَنۡ عَمِلَ صَٰلِحٗا مِّن ذَكَرٍ أَوۡ أُنثَىٰ وَهُوَ مُؤۡمِنٞ فَلَنُحۡيِيَنَّهُۥ حَيَوٰةٗ طَيِّبَةٗۖ﴾

जिस किसी ने भी अच्छा कर्म किया, पुरुष हो या स्त्री, शर्त यह है कि वह ईमान पर हो, तो हम उसे अवश्य पवित्र जीवन-यापन कराएँगे। (अल-नहल: 97)

यह उस जीवन का आधार है जिसको पाना हर मनुष्य का सपना होता है:

﴿فَمَنِ ٱتَّبَعَ هُدَايَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشۡقَىٰ﴾

तो जिस किसी ने मेरे मार्गदर्शन का अनुपालन किया, वह न तो पथभ्रष्ट होगा और न पीड़ा में पड़ेगा। (ताहा: 123)

तौहीद ही है जो अरब, गैर-अरब, और पूर्व व पश्चिम के सब मुस्लिमों को एकजुट कर सकती है:

﴿إِنَّ هَٰذِهِۦٓ أُمَّتُكُمۡ أُمَّةٗ وَٰحِدَةٗ وَأَنَا۠ رَبُّكُمۡ فَٱعۡبُدُونِ﴾

निश्चय ही यह तुम्हारा समुदाय एक ही समुदाय है और मैं तुम्हारा रब हूँ। अतः तुम मेरी बंदगी करो। (अल-अंबिया: 92)

तौहीद का मंत्र अत्यंत अच्छा और उच्चतम मंत्र है, इसकी जड़ दृढ़ है और इसकी शाखा आकाश में है, यह अल्लाह का सर्वोच्च वचन है, और इसी के साथ अल्लाह ने बिना किसी मध्यस्थ के मूसा (अलैहिस्सलाम) से बात की:

﴿إِنَّنِيٓ أَنَا ٱللَّهُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنَا۠ فَٱعۡبُدۡنِي﴾

निस्संदेह मैं ही अल्लाह हूँ। मेरे सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं। अतः तू मेरी बंदगी कर (ताहा: 14)

यही मंत्र ईमान की सबसे बड़ी शाखा है, नबी ﷺ ने कहा: "ईमान की सत्तर या साठ से अधिक शाखाएँ हैं; उनमें से सबसे उत्तम: यह कहना है कि अल्लाह (ईश्वर) के अलावा कोई पूजनीय नहीं है।" (सही मुस्लिम)

यह सबसे शुद्ध वाणी और तराज़ू में सबसे भारी चीज़ है, यह दास को स्वतंत्रता देने के समान है और यह प्रतिदिन शैतान से रक्षा करता है, नबी ﷺ ने कहा: जो व्यक्ति दिन में 100 बार यह कहता है: "ला इलाहा इल्लल्लाह वहदहू ला शरीका लहू, लहूलमुल्क, वलहूलहम्द, वहुवा अल कुल्लि शय्इन क़दीर" (अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं है, सारा राजत्व उसी का है, समस्त स्तुति उसी की है, वह हर चीज़ में सक्षम है।) तो ये दस दासों को स्वतंत्रता दिलाने के समान है, उसके लिए सौ पुण्य लिखे जाते हैं, सौ पाप मिटाए जाते हैं और यह उस दिन शाम तक उसके लिए रक्षक होता है और (कयामत के दिन) इसके क्रम से उत्तम क्रम किसी का नहीं होगा, हाँ जिसने यह काम उस से अधिक क्या होगा उसकी बात और है। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

"ला इलाहा इल्लल्लाह" (अल्लाह (ईश्वर) के अलावा कोई पूजनीय नहीं है।)

आज तक किसी के मुख और होंठों से इससे ज़्यादा अच्छा और सुगन्धित शब्द नहीं निकला; पैग़ंबर ﷺ ने कहा: मैंने और मुझ से पूर्व के नबियों ने जो सबसे अच्छा शब्द कहा वह यह है: "ला इलाहा इल्लल्लाह वहदहू ला शरीका लहू, लहूलमुल्क, वलहूलहम्द, वहुवा अल कुल्लि शय्इन क़दीर" (अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं है, सारा राजत्व उसी का है, समस्त स्तुति उसी की है, वह हर चीज़ में सक्षम है।) (सुनन तिरमिज़ी)

यह एक शाश्वत शब्द है, जिसके बारे में अल्लाह ने वादा किया है कि जो व्यक्ति इसे बोलता है और इसकी ओर बुलाता है, वो लोगों के बीच अमर हो जाएगा। सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा:

﴿وَجَعَلَهَا كَلِمَةً بَاقِيَةً فِي عَقِبِهِ﴾

और यही कलिमा अल्लाह ने उनके पीछे बाक़ी छोड़ दिया। (अल-ज़ुख़रुफ: 28)

यह सुदृढ़ वचन है, जो कोई भी इसको थाम लेगा, अल्लाह उसे इस दुनिया में और परलोक में मज़बूती प्रदान करेगा, सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा:

﴿يُثَبِّتُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ﴾

ईमान लानेवालों को अल्लाह सुदृढ़ बात के द्वारा सांसारिक जीवन में भी और परलोक में भी सुदृढ़ता प्रदान करता है (इब्राहीम: 27)

सृष्टि में सबसे उत्तम वो है जो अल्लाह की इबादत में सबसे उत्तम होता है, जितना तौहीद का पालन होता है उतना ही बंदे की पूर्णता और उसके कद का उत्थान होता है। अल्लाह दीन और दुनिया में मुवह्हिद (एकेश्वरवादी) की रक्षा करता है। मुवह्हिद के लिए ही छमा की आशा सबसे अधिक होती है। अल्लाह ने कुद्‌सी हदीस(1) में कहा: "यदि तुम मेरे पास पृथ्वी समान पापों के साथ आते हो, फिर मुझसे ऐसी हालत में मिलते हो कि मेरे साथ किसी को साझी नहीं बनाते थे, तो मैं तुम्हारे लिए उतनी ही बड़ी क्षमा लेकर आऊँगा।" (सुनन तिरमिज़ी) श्री इब्ने-रजब (उन पर अल्लाह की दया हो) ने कहा: "तौहीद सबसे महान साधन है, इसे जिसने खो दिया उसने क्षमा को खो दिया, जो कोई इसे लाता है वह क्षमा का सबसे बड़ा साधन लाता है।"

शैतान के लिए मूवह्हिद (एकेश्वरवादी) के पास जाने का कोई रास्ता नहीं होता:

﴿إِنَّهُ لَيْسَ لَهُ سُلْطَانٌ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ﴾

शैतान का उन लोगों पर कोई ज़ोर नहीं चलता जो ईमान लाए और अपने रब पर भरोसा रखते हैं। (अल-नहल: 99)

व्यक्ति के पास जितनी अधिक तौहीद होगी उतनी ही अधिक अल्लाह उसकी ओर से प्रतिरक्षा करेगा:

---

(1) कुद्‌सी हदीस: अल्लाह की वो वाणी जो पवित्र कुरान के अलावा है, जिसकी प्रकाशना हमारे नबी मुहम्मद ﷺ की ओर की गई।

﴿إِنَّ ٱللَّهَ يُدَٰفِعُ عَنِ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْۗ﴾

निश्चय ही अल्लाह उन लोगों की ओर से प्रतिरक्षा करता है, जो ईमान लाए। (अल-हज: 38)

जो तौहीद का पालन करता है अल्लाह उसे बड़े पापों और अश्लील कर्मों से बचाता है, अल्लाह सर्वशक्तिमान यूसुफ (अलैहिस्सलाम) के बारे में कहता है:

﴿كَذَٰلِكَ لِنَصۡرِفَ عَنۡهُ ٱلسُّوٓءَ وَٱلۡفَحۡشَآءَۚ إِنَّهُۥ مِنۡ عِبَادِنَا ٱلۡمُخۡلَصِينَ﴾

"इसी प्रकार हमने उन (यूसुफ) से बुराई वो बदकारी को फेर दिया, निश्चय ही वो हमारे शुद्ध ईमान वाले बंदों में से थे।" (यूसुफ: 24)

इब्ने क़य्यिम कहते हैं:"दिल तौहीद में जितना कमज़ोर और शिर्क में जितना मज़बूत होगा वो अश्लीलता में उतना ही आगे होगा।"

मुवह्हिद (एकेश्वरवादी) पर इस सांसारिक जीवन में शांति और चैन होता है, वह अपने ईमान की मात्रा अनुसार भयमुक्त होता है:

﴿ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَلَمۡ يَلۡبِسُوٓاْ إِيمَٰنَهُم بِظُلۡمٍ أُوْلَٰٓئِكَ لَهُمُ ٱلۡأَمۡنُ وَهُم مُّهۡتَدُونَ﴾

जो लोग ईमान लाए और अपने ईमान में किसी ज़ुल्म (शिर्क) की मिलावट नहीं की, वही लोग हैं जो भय मुक्त हैं और वही सीधे मार्ग पर हैं। (अल-अनआम: 82)

मूवह्हिदीन (एकेश्वरवादियों) की प्रार्थनाओं से मृतकों को भी लाभ होता है, जनाज़े की नमाज़ में केवल उन्ही की प्रार्थनाएँ स्वीकार की जाती हैं। नबी ﷺ ने कहा: "कोई मुस्लिम व्यक्ति जब मरता है और उसके जनाज़े पर चालीस ऐसे लोग (नमाज़ के लिए) खड़े होते हैं जो दूसरों को अल्लाह के साथ शरीक नहीं करते थे, तो अल्लाह उनकी सिफारिश ज़रूर कबूल करता है।" (सही मुस्लिम)

जब एक मूवह्हिद (एकेश्वरवादी) की मृत्यु निकट आती है तो अल्लाह उसे स्वर्ग की खुशखबरी भेजता है। नबी ﷺ ने कहा: "जिसके अंतिम शब्द "अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं" हों उसने जन्नत में प्रवेश किया।" (सुनन अबू-दाऊद)

जैसे अल्लाह ने मूवह्हिद व्यक्ति को इस दुनिया में पोषित किया, उसी तरह अल्लाह उसे परलोक में सर्वोच्च पद पर सम्मानित करेगा, उसे अच्छे कर्म करने वालों का सबसे अच्छा इनाम देगा। सो जो तौहीद पर मरता है उसे या तो शुरुआत में ही या कुछ अवधि के बाद स्वर्ग ज़रूर मिलेगी, यदि वह अपने पापों के कारण नरक में प्रवेश करता भी है तो वह

उसमें हमेशा नहीं रहेगा। नबी ﷺ ने कहा: "वह जो अल्लाह के साथ किसी को भी शरीक नहीं करते हुए मरता है, जन्नत में प्रवेश करेगा।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

क़यामत के दिन केवल मूवह्हिद ही नबी ﷺ की सिफारिश प्राप्त कर सकता है, अबू-हुरैरह (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने नबी ﷺ से सवाल किया: हे ईश्वर के दूत! क़यामत के दिन आपकी सिफारिश द्वारा कौन लोग भाग्यशाली होंगे? आपने फ़रमाया: क़यामत के दिन मेरी सिफारिश द्वारा सबसे ज़्यादा भाग्यशाली वे होंगे जो सच्चे मन से कहेंगे: "अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है।" (सही बुखारी)

जो तौहीद को प्राप्त कर लेता है, वह जन्नत (स्वर्ग) के आठ द्वारों में से अपनी चाहत अनुसार किसी भी द्वार से प्रवेश कर सकेगा। नबी ﷺ कहते हैं: "आप में से जो भी अच्छी तरह वुज़ू करता है, फिर कहता है: "मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वो अकेला है, उसका कोई साझी नहीं, मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद ﷺ अल्लाह के बंदे और रसूल हैं।" उसके लिए जन्नत के आठों द्वार खोल दिए जाएंगे, वह जिसमें से चाहे प्रवेश कर सकता है।" (सही मुस्लिम) इब्नुल-कय्यिम ने कहा: "बंदे की तौहीद जितनी महान होगी अल्लाह की क्षमा भी उतनी ही परिपूर्ण होगी, इसलिए जो कोई भी उससे ऐसी हालत में मिलता है कि उसके साथ किसी को शरीक नहीं करता हो, तो उसके सभी पापों को क्षमा कर दिया जाता है।"

सत्तर हज़ार लोग जन्नत में बिना हिसाब किताब प्रवेश करेंगे, वे सभी एकेश्वरवादी लोगों में से होंगे, नबी ﷺ ने कहा: "वे ऐसे होंगे जो झाड़ फूंक नहीं करवाते थे, अपशगुन नहीं लेते थे और दाग़ कर इलाज नहीं करवाते थे, वे बस अल्लाह पर भरोसा करते थे।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

हे मुस्लिमो!

तौहीद एक मुस्लिम के पास उसकी सबसे कीमती चीज़ है, सो जिसको भी अल्लाह तौहीद का मार्ग दिखाए वह उसे मज़बूती के साथ थाम ले और उसके विपरीत, विरुद्ध या उसको घटाने वाली तमाम चीज़ों से उसकी रक्षा करे। जो कोई भी अल्लाह के अलावा अन्य से दुआ माँगता है या किसी कब्र की परिक्रमा करता है या अन्य के लिए जानवर वध करता है तो वो तौहीद के प्रकाश और उसके गुणों को खो देता है, उसकी कोई आज्ञाकारिता कबूल नहीं होगी, वो हमेशा नरक की चेतावनी की ज़द में रहता है।

मैं शापित शैतान से अल्लाह की शरण में आता हूँ

﴿قُلۡ إِنَّمَآ أَنَا۠ بَشَرٞ مِّثۡلُكُمۡ يُوحَىٰٓ إِلَيَّ أَنَّمَآ إِلَٰهُكُمۡ إِلَٰهٞ وَٰحِدٞۖ فَمَن كَانَ يَرۡجُواْ لِقَآءَ رَبِّهِۦ فَلۡيَعۡمَلۡ عَمَلٗا صَٰلِحٗا وَلَا يُشۡرِكۡ بِعِبَادَةِ رَبِّهِۦٓ أَحَدَۢا﴾

कह दो, "मैं तो केवल तुम्हीं जैसा मनुष्य हूँ। मेरी ओर प्रकाशना की जाती है कि तुम्हारा पूज्य-प्रभु बस अकेला पूज्य-प्रभु है। अतः जो कोई अपने रब से मिलन की आशा रखता हो, उसे चाहिए कि अच्छा कर्म करे और अपने रब की बंदगी में किसी को साझी न बनाए।" (अल-कह्फ़: 110)

पवित्र क़ुरआन के प्रति अल्लाह मुझे और आपको आशीर्वाद दे ...

दूसरा ख़ुतबा

अल्लाह के उपकार के लिए उसकी समस्त प्रशंसाएं, सफलता और कृतज्ञता के लिए उसे धन्यवाद, मैं अल्लाह को सम्मान अर्पित करने हेतु गवाही देता हूँ कि कोई पूजनीय नहीं है सिवाय उसी के, जिसका कोई साझी नहीं, मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके भक्त और रसूल हैं, अल्लाह की शांति हो उन पर और उनके परिवार और साथियों पर।

हे मुस्लिमो!

तौहीद अल्लाह की ओर से एक महान उपकार है, जिसे वह अपने सेवकों को अपनी इच्छा अनुसार देता है, एक मुस्लिम को इसे अपने आप के लिए, अपनी संतान, अपने परिवार के सदस्यों और सभी लोगों के लिए प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए।

तौहीद के आशीर्वाद पर धन्यवाद की एक शक्ल ये है कि लोगों को इसकी ओर आमंत्रित किया जाए और हर ऐसी बुराई के खिलाफ चेतावनी दी जाए जो इसके मूल या पूर्णता के विपरीत है।

तौहीद पर दृढ़ता के साधनों में से: दृढ़ता के लिए अल्लाह से प्रार्थना करना, बिदअत[1], संदेह और बुरी इच्छाओं से दूर रहना, आज्ञाकारिता के कार्यों को बढ़ाना, शरीअत का ज्ञान प्राप्त करना और मुश्किल चीज़ों को रब्बानी उलेमा (दिव्य विद्वानों) से पूछना है।

फिर जान लो कि अल्लाह ने आपको अपने प्यारे नबी पर दरूद व सलाम भेजने की आदेश दिया है...

---

(1) बिदअत: अर्थात: धर्म में नया कार्य जो कुरान व हदीस से प्रमाड़ित न हो।

तौहीद के मंत्र के गुण[1]

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, हम उसकी प्रशंसा करते हैं उसी से सहायता और अपने पापों की क्षमा मांगते हैं, हम अपने प्राण और कर्म की बुराइयों से उसकी शरण चाहते हैं, वह जिसे सत्य मार्ग पर चला दे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे वह भटका दे उसे कोई सत्य मार्ग पर चला नहीं सकता, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह एक है, उसका कोई साथी नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, सलाम व शांति हो उन पर, उनके परिवार और उनके पवित्र साथियों पर।

अल्लाह की प्रशंसा और नबी पर दरूद के बाद:

ऐ अल्लाह के बंदो! अल्लाह से डरो जैसे की उससे डरने का हक है और इस्लाम के सशक्त कड़े को मज़बूती से थाम लो।

हे मुस्लिमो!

सृष्टि का सम्मान अल्लाह की आज्ञाकारिता में आगे रहने और उसकी वंदना को अपरिहार्य समझने में है, यही पैदा करने और आदेश देने का उद्देश्य है, इसी में लोक परलोक की सफलता है:

﴿وَمَن يُطِعِ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ فَقَدۡ فَازَ فَوۡزًا عَظِيمًا﴾

और जो अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन करे, उसने बड़ी सफलता प्राप्त कर ली है। (अल-अहज़ाब: 71)

आनंद, सुख, समय और उपहार का लुत्फ अल्लाह को जानने, एक मानने और उस पर विश्वास करने में है।

सबसे अच्छा और अल्लाह को सबसे प्रिय वचन वह होता है जिसमें उसकी प्रशंसा व स्तुति की जाती है, और अल्लाह के लिए सबसे अच्छी प्रशंसा तौहीद का मंत्र है:

"ला इलाहा इल्लल्लाह"

(1) ये ख़ुतबा मस्जिद-ए-नबवी में जुमे के दिन 06/05/1438 हिजरी को दिया गया।

(अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूजनीय नहीं है)

एक ऐसा मंत्र जिस पर पृथ्वी और आकाश स्थापित किए गए, जिसके कारण सभी प्राणियों को बनाया गया, जिसके साथ अल्लाह ने अपनी किताबें उतारीं और अपने दूत भेजे। अल्लाह फरमाता है:

﴿وَمَآ أَرۡسَلۡنَا مِن قَبۡلِكَ مِن رَّسُولٍ إِلَّا نُوحِيٓ إِلَيۡهِ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنَا۠ فَٱعۡبُدُونِ﴾

हमने तुमसे पहले जो रसूल भी भेजा, उसकी ओर यही प्रकाशना की कि "मेरे सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं। अतः तुम मेरी ही बंदगी करो।" (अल-अंबिया: 25)

इसी वचन के माध्यम से पैग़ंबरों ने अपनी कौमों को सचेत किया, अल्लाह का पवित्र कथन है:

﴿أَنۡ أَنذِرُوٓاْ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنَا۠ فَٱتَّقُونِ﴾

"सचेत कर दो कि मेरे सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं। अतः तुम मेरा ही डर रखो।" (अल-नह्ल: 2)

अल्लाह ने अपने लिए इसी मंत्र की गवाही दी और इसी पर श्रेष्ठ हस्तियों को भी गवाह बनाया, अल्लाह का कथन है:

﴿شَهِدَ ٱللَّهُ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ وَٱلۡمَلَٰٓئِكَةُ وَأُوْلُواْ ٱلۡعِلۡمِ قَآئِمَۢا بِٱلۡقِسۡطِۚ
لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلۡعَزِيزُ ٱلۡحَكِيمُ﴾

अल्लाह ने न्याय को स्थापित करते हुए गवाही दी कि उसके सिवा कोई पूजनीय नहीं, और फ़रिश्तों और ज्ञान रखने वालों ने भी यही गवाही दी। उस प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी के सिवा कोई पूज्य नहीं। (आल इमरान: 18)

श्री इब्नुल-क़य्यिम ने कहा: "श्रेष्ट गवाह की ओर से, श्रेष्ठ हस्ती के लिए दी जाने वाली, यह सबसे बड़ी, सबसे महान, सबसे न्यायपूर्ण और सबसे सच्ची गवाही है।"

सारे ईश्वरीय विधान इसी मंत्र पर आधारित हैं, पूरा धर्म इसी के अधिकारों का एक रूप है, सारा प्रतिफल इसी के आधार पर है, सारा दण्ड इसे छोड़ने या इसमें लापरवाही करने पर है। ये बहुत ही ऊँचे दर्जे का मंत्र है, इसके बड़े गुण हैं, यह पूरे इस्लाम का मुख है, यही इस्लाम का प्रथम स्तम्भ है, बल्कि स्तंभों का भी स्तम्भ है, इसी पर इस्लाम की शानदार इमारत खड़ी है, यही एक अल्लाह पर विश्वास की जड़ और उसका सबसे बड़ा पहलू है, इसके बिना विश्वास सही नहीं और इसके बग़ैर ईमान काएम नहीं।

इसी मंत्र पर धर्म की स्थापना हुई और क़िबला खड़ा हुआ। यह अल्लाह के सभी सेवकों पर उसका शुद्ध अधिकार है, यह इस्लाम का मंत्र है, यह शांति के घर (स्वर्ग) की कुंजी है, इसी के माध्यम से लोगों को विभाजित किया गया है, अत; कुछ लोग भाग्यशाली हुए और कुछ दुर्भाग्य, कुछ स्वीकार्य और कुछ धुतकारे हुए। नबी ﷺ ने कहा: अल्लाह को चार शब्द बहुत पसंद है: सुबहान अल्लाह, अल्हमदु लिल्लाह, ला इलाहा इल्लल्लाह, अल्लाहु अकबर (अल्लाह की महिमा हो, अल्लाह की स्तुति हो, कोई पूजनीय नहीं है सिवाय अल्लाह के, अल्लाह सबसे महान है।) (सही मुस्लिम)

यह पवित्रता का वचन है जिसे अल्लाह ने अपने प्यारे बंदों के लिए चुना है। सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा:

﴿وَأَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوَىٰ﴾

और उन्हें परहेज़गारी (धर्मपरायणता) के वचन का पाबन्द रखा। (अल-फत्ह: 26)

यह सबसे विश्वसनीय कड़ा है, जो उसको थाम लेता है वह मुक्ति प्राप्त कर लेता है। अल्लाह का कथन है :

﴿فَمَن يَكْفُرْ بِالطَّاغُوتِ وَيُؤْمِن بِاللَّهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ لَا انفِصَامَ لَهَا﴾

जो व्यक्ति ताग़ूत[1] का इंकार करके अल्लाह पर ईमान ले आयेगा, उसने एक मज़बूत कुन्डा थाम लिया, जिसके टूटने की कोई संभावना नहीं। और अल्लाह ख़ूब सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है। (अल-बक़रह: 256)

ऊंचाई इसका गुण है और अमरता इसकी खासियत, महान अल्लाह ने कहा:

﴿وَكَلِمَةُ اللَّهِ هِيَ الْعُلْيَا﴾

और अल्लाह का वचन ही सर्वोच्च है। (अल-तौबा: 40)

यह पवित्र मंत्र है जिसका अल्लाह ने अपने ग्रंथ में उदाहरण दिया है:

﴿أَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ
أَصْلُهَا ثَابِتٌ وَفَرْعُهَا فِي السَّمَاءِ﴾

(1) अल्लाह के अतिरिक्त पूजी जाने वाली हर वस्तु।

क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह ने कैसी मिसाल पेश की है? अच्छी उत्तम बात एक अच्छे शुभ वृक्ष के सदृश है, जिसकी जड़ गहरी जमी हुई हो और उसकी शाखाएँ आकाश में पहुँची हुई हों। (इब्राहीम: 24)

इसी से सीना खुलता है:

﴿فَمَن يُرِدِ ٱللَّهُ أَن يَهۡدِيَهُۥ يَشۡرَحۡ صَدۡرَهُۥ لِلۡإِسۡلَٰمِۖ﴾

अल्लाह जिस व्यक्ति को हिदायत देने की इच्छा करता है उसका सीना इस्लाम के लिए खोल देता है। (अल-अनआम: 125)

श्री इब्ने-जुरैज (उन पर अल्लाह की दया हो) कहते हैं: अल्लाह "ला इलाहा इल्लल्लाह" (अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है) के माध्यम से सीना खोल देता है।

इसी मंत्र से दिलों की सुरक्षा होती है:

﴿يَوۡمَ لَا يَنفَعُ مَالٞ وَلَا بَنُونَ ۞ إِلَّا مَنۡ أَتَى ٱللَّهَ بِقَلۡبٖ سَلِيمٖ﴾

जिस दिन न माल काम आएगा और न औलाद, सिवाय इसके कि कोई सुरक्षित दिल लिए हुए अल्लाह के पास आया हो। (अल-शुअरा: 88-89)

श्री इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अनहुमा) कहते हैं: "सुरक्षित हृदय वो है जो गवाही दे कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है।"

यह सत्य की पुकार है, जिसमें असत्य नहीं है, ये ऐसा सटीक कथन है जिसमें कोई टेढ़ापन नहीं है, सत्य की वो गवाही है जिसमें कोई झूठ नहीं है, यह वह आदर्श है जिसे अल्लाह ने अपनी रचना में से अपने लिए विशेष किया है और यही वह शब्द है जो पैग़ंबर इब्राहीम (उन पर शांति हो) के बाद उनकी संतान में अमर होने वाला है। सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा:

﴿وَجَعَلَهَا كَلِمَةَۢ بَاقِيَةٗ فِي عَقِبِهِۦ لَعَلَّهُمۡ يَرۡجِعُونَ﴾

और इसी बात को अल्लाह ने उनके पीछे उनकी संतान में बाक़ी रख छोड़ा, ताकि वे पलट आएं। (अल-ज़ुखरुफ: 28)

श्री इब्ने-कसीर (उन पर अल्लाह की दया हो) ने कहा: "वो बात: "अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है" थी; इसे अल्लाह ने इब्राहीम (उन पर शांति हो) के वंश में स्थायी किया, ताकि इब्राहीम के वंश में से अल्लाह जिसे हिदायत दे वो इसी का अनुसरण करे।"

मंत्र "अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है" सृष्टि पर सबसे बड़ा आशीर्वाद है, अल्लाह का कथन है:

﴿وَأَسۡبَغَ عَلَيۡكُمۡ نِعَمَهُۥ ظَٰهِرَةٗ وَبَاطِنَةٗۗ﴾

और अल्लाह ने तुमपर अपनी प्रकट और अप्रकट अनुकम्पाएँ पूर्ण कर दी हैं। (लुक़मान: 20)

श्री सुफयान बिन उयेना कहते हैं: "अल्लाह के इस आशीर्वाद से बढ़कर कोई आशीर्वाद नहीं कि उसने "अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है" का अर्थ समझाया।"

एक ऐसा मंत्र जो दुनिया और उसमें जो कुछ है सब के समान है, पैग़ंबर ﷺ ने कहा: "मेरा ये कहना कि "सुबहानल्लाह, अल्हम्दु लिल्लाह, ला इलाहा इल्लल्लाह, अल्लाहु अकबर" (अल्लाह की महिमा हो, अल्लाह की स्तुति हो, अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और अल्लाह सबसे महान है); उन समस्त चीज़ों से अधिक प्रिय है जिनके ऊपर सूरज उगता है।" (सही मुस्लिम)

ज्ञान और कर्म में यह बंदों का पहला कर्तव्य है। महान अल्लाह ने कहा:

﴿فَٱعۡلَمۡ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا ٱللَّهُ﴾

तो जान लो कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है। (मुहम्मद: 19)

महान इस्लामी विद्वान श्री इब्ने-तैमियह (उन पर अल्लाह की दया हो) ने कहा: "सलफ़[1] और सारे इमाम सहमत हैं कि बंदों को सबसे पहले दो गवाहियों[2] की आज्ञा दी जाएगी।" और यही सबसे अंतिम कर्तव्य भी है। रसूल ﷺ ने कहा: "जिसके अंतिम शब्द: "ला इलाहा इल्लल्लाह" (अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है) हों उसने जन्नत में प्रवेश किया।" (सुनन अबू-दाऊद)

इसका ज्ञान रखने वाला और इसके अनुसार कर्म करने वाला ही सटीक पथ वाला है, सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा:

﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ قَالُواْ رَبُّنَا ٱللَّهُ ثُمَّ ٱسۡتَقَٰمُواْ فَلَا خَوۡفٌ عَلَيۡهِمۡ وَلَا هُمۡ يَحۡزَنُونَ﴾

---

(1) सलफ़: पैग़ंबर मुहम्मद ﷺ की पीड़ी और उसके बाद की दो पीड़ियाँ।

(2) पहली गवाही इस बात की कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूजनीय नहीं, दूसरी गवाही इस बात की कि मुहम्मद ﷺ अल्लाह के बंदे और उसके दूत हैं।

जो लोग कहते हैं कि हमारा प्रभु अल्लाह है, फिर डट जाते हैं, उन पर न कोई भय सवार होगा और न वे दुखी होंगे। (अल-अहक़ाफ: 13)

श्री इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) ने कहा: "अर्थात: "अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है" की गवाही पर डट जाते हैं।"

यदि यह वचन सत्य है तो हृदय अल्लाह के सिवा हर वस्तु से शुद्ध हो जाता है, जो कोई इसके प्रति सच्चा है वह अल्लाह से ही प्रेम करता है, उसके सिवा किसी और से आशा नहीं रखता, उसके सिवा किसी से नहीं डरता, उसे छोड़ कर किसी अन्य पर भरोसा नहीं करता, फिर उसकी अपनी कोई इच्छा बाक़ी नहीं रह जाती।

यह मंत्र धन और रक्त का रक्षक है; प्यारे रसूल ﷺ ने कहा: जो कोई कहता है: "ला इलाहा इल्लल्लाह" (अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है) और उसके अलावा पूजा की जाने वाली हर चीज़ पर अविश्वास करता है; उसका धन और खून वर्जित हो जाता है, और उसका हिसाब सर्वशक्तिमान अल्लाह के पास है। (सही मुस्लिम)

सबसे पहली चीज जिसके साथ इस्लाम का प्रचार शुरू किया जाएगा वह यही मंत्र है, इसी से नबी ﷺ ने अपनी दावत का कार्य शुरू किया, इसी पर नबी ﷺ अपने साथियों से बैअत (निष्ठा का वचन) लेते थे, इसी को देकर नबी ﷺ सुसमाचार प्रचारकों को शहरों में भेजते थे, अत: आपने मुआज़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) को यमन भेजते समय कहा था: "तुम धार्मिक ग्रंथ वालों (यहूदियों और ईसाइयों) के पास जा रहे हो; उन्हें इस बात की गवाही देने के लिए बुलाना कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और मैं अल्लाह का पैग़ंबर हूँ।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

तौहीद का मंत्र समानता का शब्द है जिस पर सृष्टि एकजुट हो सकती है, इसके बिना भेद ही भेद है, महान अल्लाह का कथन है:

﴿قُلْ يَٰٓأَهْلَ ٱلْكِتَٰبِ تَعَالَوْاْ إِلَىٰ كَلِمَةٍ سَوَآءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَلَّا نَعْبُدَ إِلَّا ٱللَّهَ
وَلَا نُشْرِكَ بِهِۦ شَيْـًٔا﴾

कहो: "ऐ किताबवालो! आओ एक ऐसी बात की ओर जिसे हमारे और तुम्हारे बीच समान मान्यता प्राप्त है; यह कि हम अल्लाह के अतिरिक्त किसी की बंदगी न करें और न उसके साथ किसी चीज़ को साझी ठहराएं। (आल इमरान: 64)

जिसने सत्यता के साथ इसे कहा वह सफल हो गया। नबी ﷺ ने कहा: "हे लोगो! कहो: कोई पूजनीय नहीं सिवाय अल्लाह के; सफल हो जाओगे।" (मुस्नद अहमद)

इसको मजबूती से थामने वाला विश्वास की उच्चतम शाखाओं को प्राप्त करता है, नबी ﷺ ने कहा: "ईमान की सत्तर से अधिक शाखाएं हैं, सबसे अधिक फलदायी और गुणकारी शाखा है "ला इलाहा इल्लल्लाह" (अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है) कहना।" (सही मुस्लिम)

जिस आयत में यह मंत्र शामिल है, वह कुरान की सबसे महान आयत[1] है, सय्यिदुल इस्तिग़फ़ार[2] में भी यह मंत्र शामिल है।

पुण्य के कामों में सबसे अधिक सवाब इसी में है, तो जो व्यक्ति दिन में 100 बार यह कहता है: "ला इलाहा इल्लल्लाह वहदहू ला शरीका लहू, लहूलमुल्क, वलहूलहम्द, वहुवा अला कुल्लि शय्इन क़दीर" (अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं, सारा राजत्व उसी का है, समस्त स्तुति उसी की है, वह हर चीज़ में सक्षम है।) तो ये दस दासों को स्वतंत्रता दिलाने के समान है, उसके लिए सौ पुण्य लिखे जाते हैं, सौ पाप मिटाए जाते हैं, यह उस दिन की शाम तक उसके लिए रक्षक होता है और (क़यामत के दिन) इसके क्रम से उत्तम क्रम किसी का नहीं होगा, हाँ जिसने यह काम उस से अधिक मात्रा में क्या होगा उसकी बात और है। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

और "जो व्यक्ति दिन में 10 बार ये कहता है: "ला इलाहा इल्लल्लाह वहदहू ला शरीका लहू, लहूलमुल्क, वलहूलहम्द, वहुवा अला कुल्लि शय्इन क़दीर" (अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं, सारा राजत्व उसी का है, समस्त स्तुति उसी की है, वह हर चीज़ में सक्षम है।) वह पैग़ंबर इस्माईल (उन पर शांति हो) के वंश से चार दासों को स्वतंत्र करने वाले जैसा है।" (सही मुस्लिम)

यह बिना पैसा खर्च किए उच्चतम दान है। अल्लाह के रसूल ﷺ ने कहा: "तौहीद के मंत्र का प्रत्येक जाप एक दान है।" (सही मुस्लिम)

यह कब्र में बंदे के लिए एक मोक्ष है और प्रशन के समय इसी पर उसे जमा दिया जाएगा, नबी ﷺ ने कहा: "जब मुस्लिम से कब्र में प्रश्न पूछा जाता है तो वह गवाही देता है कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और मुहम्मद ﷺ अल्लाह के दूत हैं; यही अर्थ अल्लाह के इस कथन का है:

(1) आयतुलकुर्सी मुराद है (अल-बक़रह: 255)।

(2) अर्थात: क्षमा याचना की उच्चतर दुआ जो सही बुखारी में आई है।

﴿يُثَبِّتُ ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ بِٱلْقَوْلِ ٱلثَّابِتِ فِى ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا وَفِى ٱلْءَاخِرَةِ ۖ وَيُضِلُّ ٱللَّهُ ٱلظَّٰلِمِينَ ۚ وَيَفْعَلُ ٱللَّهُ مَا يَشَآءُ﴾

ईमान लानेवालों को अल्लाह सुदृढ़ बात के द्वारा सांसारिक जीवन में भी और परलोक में भी सुदृढ़ता प्रदान करता है। (इब्राहीम:27) (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

और -अल्लाह की कृपा से- इस मंत्र के भार के सामने पापों के खाते हल्के साबित होंगे। अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया: "एक व्यक्ति को रब के सामने प्रस्तुत किया जाएगा और उसके पापों के 99 खाते फेला दिए जाएंगे, हर खाता नजर की दूरी तक फैला होगा, फिर एक कार्ड निकाला जाएगा जिसमें लिखा होगा: "अशहदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाह वा अशहदु अन्ना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुह" (में गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और मुहम्मद ﷺ अल्लाह के बंदे और दूत हैं।) फिर सारे खाते एक पल्ले में रखे जाएंगे, तो खातों वाला पल्ला उठ जाएगा और कार्ड वाला पल्ला भारी हो जाएगा।" (मुस्नद अहमद)

"यदि सात आकाश और सात पृथ्वी एक पल्ले में रखे जाएं और दूसरे पल्ले में "ला इलाहा इल्लल्लाह" (अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं), तो यह मंत्र उन सब पर भारी पड़ जाएगा। यदि सात आकाश और सात प्रथ्वी एक रहस्यमयी वलय हो जाए; तो यह मंत्र उन्हें काटकर रख देगा।" (मुस्नद अहमद)

इस मंत्र वाले लोग (क़यामत के दिन) सिफ़ारिशी बनेंगे, और परम दयालु अल्लाह के यहाँ उनसे वादा है। सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा:

﴿لَّا يَمْلِكُونَ ٱلشَّفَٰعَةَ إِلَّا مَنِ ٱتَّخَذَ عِندَ ٱلرَّحْمَٰنِ عَهْدًا﴾

उन्हें सिफ़ारिश का अधिकार प्राप्त न होगा। सिवाय उसके, जिसने परम दयालु अल्लाह के यहाँ से एह्द (अनुमोदन) प्राप्त कर लिया हो। (मरयम: 87)

नबी ﷺ की सिफारिश के प्रति सबसे खुश लोग, वे हैं जो इस मंत्र के प्रति ईमानदार और सच्चे हैं। आप ﷺ ने फ़रमाया: "मेरी सिफारिश से लाभान्वित लोग वे होंगे जो सच्चे मन से "ला इलाहा इल्लल्लाह" (अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं) कहते होंगे।" (सही बुखारी)

जो इसे सच्चे दिल से, यक़ीन करते हुए, बिना किसी संदेह के और इसके विपरित से दूर रहते हुए बोलता है तो जन्नत ऐसे व्यक्ति का प्रतिफल है। पैग़ंबर ﷺ ने कहा: "जो बंदा भी कहता है: "ला इलाहा इल्लल्लाह" (अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं), फिर उसी पर

उसकी मृत्यु हो जाती है; तो वह अवश्य जन्नत में प्रवेश करेगा।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

इसके कहने वाले के लिए जन्नत के आठों द्वार खोल दिए जाएंगे, वह जिसमें से चाहेगा प्रवेश करेगा, बल्कि जो कोई इसमें सच्चा हो और उसके अनुसार कर्म भी करता हो, तो उसे (नरक की) आग छुएगी ही नहीं। नबी ﷺ ने कहा: "जो भी सच्चे मन से यह गवाही देता है कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और मुहम्मद ﷺ अल्लाह के बंदे और दूत हैं, अल्लाह उसे जहन्नम (नरक) पर हराम (वर्जित) कर देता है।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम) बल्कि जो व्यक्ति इसे सच्चे मन से कहेगा और उसके मन में कण बराबर भी ईमान होगा तो अल्लाह उसे जहन्नम से निकाल देगा। सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा: "मेरी शक्ति और महिमा की क़सम, मेरे गौरव और महानता की क़सम! मैं जहन्नम से हर उस व्यक्ति को निकाल दूंगा जो कहता है: "ला इलाहा इल्लल्लाह" (अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं)। (सही बुखारी)

बंदे के जीवन के प्रत्येक पल में तौहीद के मंत्र के महत्व के कारण ही शरीअत ने हर हाल और मामले में इसकी पाबंदी करने पर उभारा है, सो "जो व्यक्ति सुबह के समय कहे: "ला इलाहा इल्लल्लाह वहदहू ला शरीका लहू, लहूलमुल्क, वलहूलहम्द, वहुवा अला कुल्लि शयइन क़दीर" (अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं, सारा राजत्व उसी का है, समस्त स्तुति उसी की है, वह हर चीज़ में सक्षम है।) उसे पैग़ंबर इस्माईल (उन पर शांति हो) के वंश से दस दासों को स्वतंत्र करने जितना सवाब (प्रतिफल) मिलेगा, सौ पुण्य लिखे जाएंगे, सौ पाप मिटाए जाएंगे, उसके दस श्रेणियों की पदोन्नति मिलेगी और उस दिन शाम तक शैतान से उसकी रक्षा की जाएगी, अगर शाम के समय कहे तो इतने ही पुरस्कार सुबह तक प्राप्त होंगे।" (सुनन अबू-दाऊद)

अगर कोई इसे वुज़ू[1] के बाद कहे उसके लिए जन्नत (स्वर्ग) के आठों द्वार खोल दिए जाएंगे। पैग़ंबर ﷺ ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति अच्छी तरह वुज़ू करे फिर कहे: "अशहदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाह वा अशहदु अन्ना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुह" (मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और मुहम्मद ﷺ अल्लाह के बंदे और दूत हैं।) उसके लिए जन्नत के आठों द्वार खोल दिए जाते हैं। (सही मुस्लिम)

(1) पवित्रता के लिए निर्धारित अंगों को धोना।

तौहीद के इसी मंत्र से अज़ान [1] का आरम्भ होता है और इसी से अंत। पैग़ंबर ﷺ ने फ़रमाया: जब मुअज़्ज़िन कहे :

अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर

(अल्लाह सबसे महान है, अल्लाह सबसे महान है)

फिर तुम में से कोई जवाब में कहे:

अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर

(अल्लाह सबसे महान है, अल्लाह सबसे महान है)

मुअज़्ज़िन कहे:

अशहदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाह

(मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है)

फिर वह कहे:

अशहदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाह

(मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है)

मुअज़्ज़िन कहे:

अशहदु अन्ना मुहम्मदन रसूलुल्लाह

(मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद ﷺ अल्लाह के पैग़ंबर हैं)

फिर वह कहे:

अशहदु अन्ना मुहम्मदन रसूलुल्लाह

(मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद ﷺ अल्लाह के पैग़ंबर हैं)

मुअज़्ज़िन कहे:

हय्या अलस्सलाह

(आओ नमाज़ की ओर)

फिर वह कहे:

ला हउला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह

(सारी शक्ति और क्षमता अल्लाह ही से है)

जब मुअज़्ज़िन कहे:

हय्या अल-अलफलाह

(आओ सफलता की ओर)

---

(1) नमाज़ की ओर आमंत्रित करने के लिए लगाई जाने वाली पुकार और उस पुकार लगाने वाले को मुअज़्ज़िन कहते हैं।

फिर वह कहे:

ला हउला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह
(सारी शक्ति और क्षमता अल्लाह ही से है)

जब मुअज़्ज़िन कहे:

अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर
(अल्लाह सबसे महान है, अल्लाह सबसे महान है)

फिर वह कहे:

अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर
(अल्लाह सबसे महान है, अल्लाह सबसे महान है)

जब मुअज़्ज़िन कहे:

ला इलाहा इल्लल्लाह
(अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है)

फिर वह कहे:

ला इलाहा इल्लल्लाह
(अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है)

जो व्यक्ति सच्चे मन से ऐसा करेगा वो स्वर्ग में प्रवेश करेगा।" (सही मुस्लिम)

"जो व्यक्ति मुअज़्ज़िन की अज़ान सुनते समय ये कहे: "मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं, एवं मुहम्मद ﷺ अल्लाह के बंदे और रसूल हैं, मैं अल्लाह को प्रभु मान कर, मुहम्मद ﷺ को रसूल मान कर और इस्लाम को दीन (धर्म) मान कर प्रसन्न हूँ।" तो उसके पाप क्षमा कर दिए जाते हैं।" (सही मुस्लिम)

यदि कोई मुस्लिम नमाज़ में खड़ा होता है तो वह तौहीद से ही उसका आरम्भ करता है, नमाज़ तशह्हुद के बिना सही नहीं होती, नमाज़ी सलाम फेरने से पहले अल्लाह से इसी मंत्र द्वारा प्रार्थना करता है: "हे अल्लाह! पूर्व पाश्चात, प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष एवं प्रचुरता से किए गए समस्त पापों और जो तू मुझ से अधिक जानता है, उन सब के लिए मुझे क्षमा करदे, निस्संदेह तू ही आगे पीछे करने वाला है, तेरे अलावा कोई पूजनीय नहीं है।" (सही मुस्लिम)

हर नमाज़ के अंत में वह यह कहता है: "ला इलाहा इल्लल्लाह वहदहू ला शरीका लहू, लहूलमुल्क, वलहूलहम्द, वहुवा अला कुल्लि शयइन क़दीर" (अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं, सारा राजत्व उसी का है, समस्त स्तुति उसी की है, वह हर चीज़ में सक्षम है।) (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

इसी दुआ के साथ वह अल्लाह की स्तुति, प्रशंसा और महानता के जाप[1] को खत्म करता है तो उसके पाप क्षमा कर दिए जाते हैं भले ही वो समुद्री झाग के समान हो। (सही मुस्लिम)

हज के कर्मकांडों में भी पैग़ंबर ﷺ इस मंत्र को याद रखते थे; अत: "आप ﷺ जब सफा और मरवा[2] पर चढ़ते तो क़िबले की ओर मुँह करके अल्लाह की एकता और महानता बयान करते।" (सही मुस्लिम) मुज़दलिफ़ा[3] में: "नबी ﷺ मशअर के पास आऐ, उस पर चढ़े और अल्लाह की स्तुति, एकता और महिमा बयान की।" (सुनन नसाई)

जब आप ﷺ किसी युद्ध से, या हज, या उमरे से लौटते तो धरती की हर ऊंची जगह पर तीन बार अल्लाह की महिमा बयान करते, फिर कहते: "ला इलाहा इल्लल्लाह वहदहू ला शरीका लहू, लहूलमुल्क, वलहूलहम्द, वहुवा अल कुल्लि शयूइन क़दीर" (अल्लाह (ईश्वर) के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं, सारा राजत्व उसी का है, समस्त स्तुति उसी की है, वह हर चीज़ में सक्षम है।) (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

अच्छे कर्मों के मौसम -जैसे ज़ुल-हिज्जा के दस दिन- में तौहीद के मंत्र का अधिक से अधिक जाप करना पसंदीदा कार्य है। इसी तरह रसूल ﷺ अपने उपदेशों का आरम्भ भी इसी तौहीद से करते थे।

लोगों से मिलने जुलने के समय या किसी बैठक में बैठने के समय जहाँ बहुत त्रुटियां हों, अगर बंदा बैठक समाप्ति से पहले यह कहता है: "हे अल्लाह! तेरी स्तुति और महिमा हो, मैं गवाही देता हूँ कि तेरे अलावा कोई पूजनीय नहीं है, मैं क्षमा चाहता हूँ और तेरी ओर पलटता हूँ।" तो उसके उस बैठक में होने वाले पाप क्षमा कर दिए जाते हैं।" (सुनन तिर्मिज़ी)

"रात्री को आँख खुलने पर अगर कोई तौहीद का मंत्र बोलते है, फिर दुआ करता है तो उसकी दुआ कबूल होती है, और अगर वह वुज़ू करके नमाज़ पढ़ता है तो उसकी नमाज़ भी कबूल होती है।" (सही बुखारी)

चिंता और पीड़ा के समय नबी ﷺ कहते थे: "अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है जो महान और सहिष्णु है, अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है जो महान सिंहासन का

---

(1) अर्थात: 33 बार सुबहानल्लाह, 33 बार आल्हम्दु लिल्लाह और 33 बार अलहु अकबर कहने के बाद सोवीं बार में ऊपर दी हुई दुआ पड़ना।

(2) मक्का शहर में पवित्र काबे के पास स्थित दो पहाड़ियाँ जिन के सात चक्कर लगाना हज और उमरे में अनिवार्य होता है।

(3) मक्के में स्ठित हज के स्थानों में से एक स्थान।

प्रभु है, अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है जो आकाशों का प्रभु है, जो धरती का प्रभु है और जो सम्मानजनक सिंहासन का प्रभु है।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

अल्लाह से कुछ माँगने से पूर्व तौहीद के मंत्र द्वारा उसकी स्तुति बयान करना दुआ के कबूल होने का कारण बनता है, अल्लाह का कथन है:

﴿وَذَا ٱلنُّونِ إِذ ذَّهَبَ مُغَٰضِبًا فَظَنَّ أَن لَّن نَّقۡدِرَ عَلَيۡهِ فَنَادَىٰ فِي ٱلظُّلُمَٰتِ أَن لَّآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنتَ سُبۡحَٰنَكَ إِنِّي كُنتُ مِنَ ٱلظَّٰلِمِينَ ۞ فَٱسۡتَجَبۡنَا لَهُۥ وَنَجَّيۡنَٰهُ مِنَ ٱلۡغَمِّۚ﴾

और मछलीवाले (यूनुस) पर भी दया दर्शाई। याद करो जबकि वह अत्यन्त क्रुद्ध होकर चल दिया और समझा कि हम उसे तंगी में न डालेंगे। अन्त में उसने अँधेरों में पुकारा, "तेरे सिवा कोई इष्ट-पूज्य नहीं, महिमावान है तू! निस्संदेह मैं दोषी हूँ।" तब हमने उसकी प्रार्थना स्वीकार की और उसे ग़म से छुटकारा दिया। इसी प्रकार तो हम मोमिनों को छुटकारा दिया करते हैं। (अल-अंबिया: 87-88)

नबी ﷺ ने फ़रमाया: "जब कभी किसी विषय में किसी मुस्लिम व्यक्ति ने पैग़ंबर यूनुस (उन पर शांति हो) की इस दुआ द्वारा अल्लाह से दुआ की तो अल्लाह ने उसकी दुआ अवश्य सुनी।" (सुनन तिर्मिज़ी)

इसी मंत्र से अल्लाह को छोड़ किसी अन्य वस्तु की क़सम खाने का पश्चाताप होता है: मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "जो क़सम खाते समय कहे: लात व उज़्ज़ा[1] की क़सम! उसे "ला इलाहा इल्लल्लाह" (अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है) कहना चाहिए। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

जो कोई मृत्यु के निकट हो, उसके लिए इसे पढ़वाना मुस्तहब[2] है, रसूल ﷺ ने कहा: "अपने मृतकों से "ला इलाहा इल्लल्लाह" (अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं) पढ़ने का आग्रह किया करो। (सही मुस्लिम)

जीवन के अंतिम क्षण में मौजूद ग़ैर धर्म के व्यक्ति को भी इस मंत्र की ओर बुलाया जाएगा, जब पैग़ंबर ﷺ के चाचा अबू तालिब की मृत्यु निकट आई तो आपने चाचा से कहा: "हे चाचा! कहो: "ला इलाहा इल्लल्लाह" (अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है), यह

(1) दो मूर्तियों के नाम जिन्हें मक्का वाले पूजते थे।

(2) अर्थात: पुण्य का काम।

ऐसा वचन है जिसकी मैं ईश्वर के सामने आपके लिए गवाही दूँगा।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

हे मुस्लिमो!

सम्मान तौहीद में है, श्री उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते हैं: "हम ऐसी क़ौम हैं जिन्हें अल्लाह ने इस्लाम द्वारा सम्मानित किया है।" तौहीद की गवाही ही इस्लाम की पहचान और प्रमाण है, उस कथन का कोई लाभ नहीं कर्म जिसके विपरीत हो। जिसने यह मंत्र नहीं बोला उससे लोक परलोक का सुख छूट गया। मुसलामानों की शक्ति और दुर्बलता शब्द और कर्म द्वारा इसी वचन के पालन अनुसार है, अल्लाह और मनुष्य के यहां यही उनका तराज़ू है, अगर उनके यहाँ ये वचन सशक्त हुआ तो अल्लाह उनसे प्रसन्न होगा और वे सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे, लेकिन यदि यह वचन दुर्बल हुआ तो वे अल्लाह से दूर हो जाएंगे और दुर्बल व कायर बन जाएंगे।

मैं शापित शैतान से अल्लाह की शरण में आता हूँ:

﴿فَٱعۡلَمۡ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا ٱللَّهُ وَٱسۡتَغۡفِرۡ لِذَنۢبِكَ وَلِلۡمُؤۡمِنِينَ وَٱلۡمُؤۡمِنَٰتِۗ وَٱللَّهُ يَعۡلَمُ مُتَقَلَّبَكُمۡ وَمَثۡوَىٰكُمۡ﴾

तो जान लो कि अल्लाह के सिवा कोई पूजनीय नहीं है, अपने पापों के लिए और ईमान वाले पुरुषों और महिलाओं के लिए क्षमा मांगो, निस्संदेह अल्लाह तुम सब की गतिविधियों और ठिकाने को ख़ूब जानता है। (मुहम्मद: 19)

पवित्र कुरान के प्रति अल्लाह मुझे और आपको आशीर्वाद दे ...

दूसरा ख़ुतबा

अल्लाह की स्तुति है उसके एहसान पर, उसका धन्यवाद है उस की तोफ़ीक़ और कृपा पर, मैं अल्लाह की शान कों महान मानते हुए गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, उन पर, उनके परिवार पर और उनके साथियों पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद बना रहे।

हे मुस्लिमो!

तौहीद के मंत्र के अर्थ का ज्ञान और उसके अनुसार कर्म और उसके विरुद्ध या विपरीत से दूरी बनाना ही ग्रंथों में मौजूद उसका अनुसरण पर्याप्त करने के लिए शर्त है, सो इसका अर्थ है: अल्लाह के अलावा हर किसी की पूजनीयता का इंकार करना, और पूजनीयता को केवल अल्लाह के लिए साबित करना। क़ुरैश कबीले के बहुदेववादियों ने इसी को नकारा था:

﴿إِنَّهُمْ كَانُوٓاْ إِذَا قِيلَ لَهُمْ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا ٱللَّهُ يَسْتَكْبِرُونَ﴾

उनका हाल यह था कि जब उनसे कहा जाता कि "अल्लाह के सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं है।" तो वे घमंड में आ जाते थे। (अल-साफ़्फ़ात: 35)

अतः केवल ईश्वर के प्रभुत्व को मानने और पूजनीयता का इंकार करने से उन्हें कोई लाभ नहीं हुआ।

जो इस मंत्र का अर्थ जितना अधिक जानता होगा, और उसके अनुसरण का जितना अधिक पालन करता होगा; क़यामत के दिन उसका तराज़ू उतना ही भारी होगा। लोग इसकी शर्तों को पूरा करने की मात्रा के आधार पर ही भिन्न श्रेणियों में बट जाते हैं। इस मंत्र की आत्मा और इसका रहस्य इबादत में अल्लाह को एक करना है, सो जो भी अल्लाह के अधिकारों और इबादत में किसी अन्य को भी साझी करेगा वो इस मंत्र का विरोधाभासी माना जाएगा।

सुखी है वह व्यक्ति जो अपनी तौहीद को बनाए रखता है और उसी पर मर जाता है, और उसके विपरीत कार्य करके, या उसकी गरिमा में कमी करके गंदा नहीं होता। ऐसा (जीवन व मरण) ही अल्लाह के सच्चे सेवकों की तमन्ना होती है:

﴿تَوَفَّنِي مُسْلِمًا وَأَلْحِقْنِي بِٱلصَّٰلِحِينَ﴾

तू मुझे इस दशा में उठा कि मैं मुस्लिम (आज्ञाकारी) हूँ और मुझे अच्छे लोगों के साथ मिला। (यूसुफ: 101)

फिर जान लो कि अल्लाह ने आपको अपने नबी पर शांति व सलाम भेजने का आदेश दिया है…

अल्लाह के निकट सर्वश्रेष्ठ कर्म(1)

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, हम उसकी प्रशंसा करते हैं, उसी से सहायता और अपने पापों की क्षमा मांगते हैं, हम अपने प्राण और कर्म की बुराइयों से उसकी शरण चाहते हैं, वह जिसे सत्य मार्ग पर चला दे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे वह भटका दे उसे कोई सत्य मार्ग पर चला नहीं सकता। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह एक है, उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, सलाम व शांति हो उन पर, उनके परिवार और उनके पवित्र साथियों पर।

अल्लाह की प्रशंसा और नबी पर दरूद के बाद:

ऐ अल्लाह के बंदो! अल्लाह से डरो जैसे की उससे डरने का हक है, और इस्लाम के सशक्त कड़े को मज़बूती से थाम लो।

हे मुस्लिमो!

अल्लाह ने अपने बंदों को पैदा किया, आकाश और धरती की चीज़ों को उनके अधीन बनाया और उन्हें बाहरी और आंतरिक रूप से अपने वरदान से नवाज़ा। ये सब इसलिए किया ताकि बंदे सिर्फ उसी की इबादत करें। अत: लोग आदम (उन पर शांति हो) के बाद दस शताब्दियों तक एक ही ईश्वर की पूजा करते रहे, फिर शैतान ने मूर्तियों की पूजा को कुछ लोगों के सामने सुशोभित किया, और उन्होंने मूर्ति पूजा आरम्भ करदी; इस कारण अल्लाह ने दूतों को भेजा और उनके साथ पुस्तकें भी उतारीं ताकि लोग एक अल्लाह की पूजा की ओर लौट आऐं।

ये सृष्टि के लिए अल्लाह की करुणा ही है कि उसने इसकी फितरत (प्रवृत्ति) को रचना के उद्देश्य के अनुसार बनाया है, चुनांचे प्रत्येक नवजात शिशु एक अल्लाह की इबादत की प्राकृतिक प्रवृत्ति पर पैदा होता है कि वही एकमात्र पूजनीय है कोई अन्य नहीं। सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा:

﴿فِطْرَتَ ٱللَّهِ ٱلَّتِى فَطَرَ ٱلنَّاسَ عَلَيْهَا﴾

(1) ये ख़ुतबा मस्जिद-ए-नबवी में जुमे के दिन 29/10/1431 हिजरी को दिया गया।

अल्लाह की प्रकृति का अनुसरण करो जिस पर उसने लोगों की रचना की है। (अल-रूम: 30)

किन्तु शैतान बंदों को उनके प्रभु की प्रसन्नता से और सुसज्जित शाश्वत स्वर्ग के आशीष से वंचित करने के लिए सृष्टि की प्रकृति को भ्रष्ट करने का प्रयास करता रहता है। एक दिन नबी ﷺ ने अपने भाषण में कहा: "लोगो! सुनो, मेरे प्रभु ने आदेश दिया है कि मैं आज प्राप्त होने वाला कुछ ज्ञान तुम्हें भी दुँ जिससे तुम अनभिज्ञ हो (अल्लाह ने कहा है:) मैंने अपने बंदों को शुद्ध पैदा किया था, फिर शैतान उनके पास आए और उन्हें उनके धर्म से भटका दिया, उनके लिए मेरे द्वारा जायज किए गए कर्मों को वर्जित कर दिया और उन्हें मेरे साथ अन्य को शरीक बनाने का हुक्म दिया, जिसकी अनुमति पर मेंने कोई प्रमाण नहीं उतारा था। (सही मुस्लिम)

इब्लीस[1] सृष्टि को अल्लाह की अवज्ञा के सबसे बड़े पाप; शिर्क में गिरने के लिए कहता है। नबी ﷺ से पूछा गया: "कौन सा पाप सबसे बड़ा है? आप ने कहा: अल्लाह के लिए प्रतिद्वंद्वी बनाना जबकि तुम उसी की रचना हो। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

फिर कई सारे लोगों ने अल्लाह के अलावा अन्य की पूजा की; जैसा कि सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा:

﴿وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ ٱلنَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ﴾

"लेकिन अधिकांश लोग ईमान नहीं लाते।" (हूद: 17)

ईमान की अनुपस्थिति का एक प्रभाव यह है कि बिना ईमान जो भी काम किया जाता है -भले ही वह अच्छा हो- सत्य धर्म ना होने के कारण उसका इनाम नहीं मिलेगा। श्रीमती आएशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने कहा: "ओह, अल्लाह के दूत! इब्ने जुदआन जाहिलिय्यत के ज़माने में रिश्तेदारी के बंधन को बनाए रखता था, ग़रीबों को खिलाता था, तो क्या यह उसके लिए (क़यामत के दिन) लाभदायक होगा? आप ﷺ ने कहा: यह उसके लिए किसी काम का नहीं है। उसने कभी नहीं कहा: "मेरे रब, क़यामत के दिन मेरे गुनाहों को माफ़ कर देना।" (सही मुस्लिम)

यह पाप पापी के लिए अल्लाह के क्रोध, अपमान और क्लेश का कारण है। सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा:

﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ ٱتَّخَذُواْ ٱلْعِجْلَ سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَذِلَّةٌ فِي ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا﴾

(1) सब से बड़े शैतान का नाम।

वास्तव में, जिन्होंने बछड़े को भगवान बना लिया है, वे इस दुनिया के जीवन में अपने प्रभु से क्रोध और अपमान प्राप्त करेंगे। (अल-आराफ़: 152)

शिर्क का अपराधी वेदना, चिन्ता और दर्द भरा जीवन जीता है। महान अल्लाह ने कहा:

﴿وَمَن يُرِدْ أَن يُضِلَّهُۥ يَجْعَلْ صَدْرَهُۥ ضَيِّقًا حَرَجًا كَأَنَّمَا يَصَّعَّدُ فِى ٱلسَّمَآءِ﴾

और अल्लाह जिसे गुमराही में पड़ा रहने देना चाहता है, उसके सीने को तंग और भिंचा हुआ कर देता है; मानो वह आकाश में चढ़ रहा है। (अल-अनआम: 125)

ये अपराध उसे स्वर्ग में प्रवेश करने से वंचित कर देता है और सदा के लिए नरक में धकेल देता है। महान अल्लाह ने कहा:

﴿إِنَّهُۥ مَن يُشْرِكْ بِٱللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ ٱللَّهُ عَلَيْهِ ٱلْجَنَّةَ وَمَأْوَىٰهُ ٱلنَّارُ﴾

जो कोई अल्लाह के साथ शिर्क करता है, अल्लाह ने उसके लिए स्वर्ग को वर्जित कर दिया है, और उसका निवास अग्नि है। (अल-माइदा: 72)

ताकि बंदे शैतान के फंदे में ना फँस जाएं और अपने रब को क्रोधित करके स्वयं का निवास सदा के लिए आग में ना बना लें; इसलिए अल्लाह ने प्रत्येक समुदाये में उन्हें शैतान के आह्वान के खिलाफ चेतावनी देने और दयालु अल्लाह की पूजा की आज्ञा देने के लिए एक दूत भेजा और पुस्तकें उतारीं। उसने क़ुरआन की अधिकांश आयतों में इसी बात की ओर बुलाया, सारा क़ुरआन इसी ओर इंगित करनेवाला है, बल्कि अल्लाह की पुस्तक में प्रथम आदेश इसी बात के प्रति है। सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा:

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ ٱعْبُدُوا۟ رَبَّكُمُ ٱلَّذِى خَلَقَكُمْ﴾

हे लोगो, अपने प्रभु की पूजा करो जिसने तुम्हें बनाया है। (अल-बक़रह: 21)

अर्थात अपने प्रभु को एक स्वीकार करो।

एक पाठक के सामने क़ुरआन का प्रथम निषेध भी इसी (तौहीद) के विपरीत (शिर्क) के प्रति आता है:

﴿فَلَا تَجْعَلُوا۟ لِلَّهِ أَندَادًا وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ﴾

सो अल्लाह के लिए प्रतिद्वंद्वी ना निर्धारित करो जबकि तुम ज्ञान रखते हो। (अल-बक़रह: 22)

सूरह इख़लास एक तिहाई क़ुरआन के समान है; क्योंकि इसमें तौहीद शामिल है। अल्लाह की पुस्तक में सबसे महान आयत आयतुल-कुरसी[1] है, ये भी तौहीद पर आधारित है।

नबी बनने के बाद नबी ﷺ दस साल तक केवल तौहीद (ईश्वर के एकीकरण) की ओर ही बुलाते रहे, इसके अलावा किसी अन्य बात की ओर नहीं बुलाते थे। फिर एक के बाद एक विधान आते गए, किन्तु आप उन सब के साथ मृत्यु तक तौहीद की ओर भी बुलाते रहे।

नबी ﷺ सुबह के समय कहा करते थे: "हमने इस्लाम की प्रवृत्ति पर, तौहीद के वचन पर, अपने नबी मुहम्मद ﷺ के धर्म पर और अपने बाबा इब्राहीम (उन पर शांति हो) के मार्ग पर सुबह की, जो मुस्लिम (आज्ञाकारी) और सबसे कट कर अल्लाह की और रुख करने वाले थे और शिर्क करने वालों में से नहीं थे।" (मुस्नद अहमद) नबी ﷺ अपने दिन का आरम्भ तौहीद के साथ करते थे, चुनांचे फ़ज्र की दो (सुन्नत) रकअतों में सूरह अल-काफिरून और सुरह अल-इख्लास की तिलावत करते थे, और तौहीद से ही आप अपने दिन का अंत करते थे, इसलिए आप रात की जोड़ और बेजोड़ रकत में सूरह अल-काफिरून और सुरह अल-इख्लास पढ़ा करते थे।

और आप ﷺ ने अपनी उम्मत को भी तौहीद की वसिय्यत की, एक देहाती व्यक्ति नबी ﷺ के पास आया और कहा: "मुझे ऐसे कर्म का मार्गदर्शन करें जिसको करके मैं स्वर्ग में प्रवेश कर सकूँ, आप ﷺ ने कहा: अल्लाह की पूजा करो और (पूजा में) उसके साथ किसी अन्य को ना जोड़ो, फ़र्ज़ (अनिवार्य) की गई नमाज़ें अदा करो, फ़र्ज़ ज़कात दो, और रमज़ान के रोज़े रखो। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

नबी ﷺ अपने साथियों को एक अल्लाह की पूजा पर निष्ठा की प्रतिज्ञा लेने का आदेश देते थे। औफ बिन मालिक (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि हम नबी ﷺ के पास नो, आठ या सात लोग थे, तो आपने फ़रमाया: क्या तुम लोग अल्लाह के दूत के हाथ पर निष्ठा की प्रतिज्ञा नहीं लोगे? हमने कहा: अल्लाह के रसूल! हम किस बात पर प्रतिज्ञा लें? तो आपने फ़रमाया: इस बात पर कि तुम अल्लाह ही की पूजा करोगे, उसकी पूजा में किसी अन्य को साथ नहीं मिलाओगे और पांच नमाज़ें पढ़ोगे। (सही मुस्लिम)

जब नबी ﷺ शहरों की ओर धर्मप्रचारकों को भेजते तो उन्हें आदेश देते की लोगों को सबसे पहले तौहीद की ओर बुलाएं, चुनांचे आप ﷺ ने मुआज़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) को यमन

(1) सूरह अल-बकरह: 255

भेजते समय उनसे कहा था: "तुम धार्मिक ग्रंथ वालों (यहूदियों और ईसाइयों) के पास जा रहे हो; उन्हें इस बात की गवाही देने के लिए बुलाना कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और मैं अल्लाह का पैग़ंबर हूँ।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

नबी ﷺ के पास जब कोई प्रतिनिधिमंडल आता तो उसे भी आप सबसे पहले तौहीद की शिक्षा देते। चुनांचे जब अब्द क़ैस का काफिला आया तो आपने उनसे पूछा: तुम एक अल्लाह पर ईमान का मतलब जानते हो? उन्होंने उत्तर दिया कि अल्लाह और उसके रसूल अधिक जानते हैं। तो आपने फ़रमाया: इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूजनीय नहीं है और मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

रसूल गण अपने बेटों के प्रति इस बात से डरते थे की कहीं वह मूर्ति पूजा में शैतान का अनुसरण ना करने लगें, अल्लाह के मित्र इब्राहिम (उन पर शांति हो) कहते हैं:

﴿وَٱجۡنُبۡنِي وَبَنِيَّ أَن نَّعۡبُدَ ٱلۡأَصۡنَامَ﴾

हे प्रभु! मुझे और मेरे पुत्रों को मूर्ति पूजा से बचा लेना। (इब्राहीम: 35)

हमारे नबी ﷺ भी अपनी उम्मत के प्रति इस बात से भय करते थे, इसीलिए आपने फ़रमाया: तुम्हारे प्रति सबसे ज़्यादा मैं जिस बात से डरता हूँ, वह छोटा शिर्क है, पूछा गया कि छोटा शिर्क क्या है? तो आपने फ़रमाया: दिखावे के लिए कोई नेक कर्म करना। (मुस्नद अहमद)

तौहीद बंदों पर अल्लाह का अधिकार है, नबी ﷺ कहते हैं: "हे मुआज़! क्या तुम्हें पता है कि अल्लाह के अधिकार बंदों पर कौन-कौन से हैं? मुआज़ उत्तर देते हैं कि अल्लाह और उसके रसूल अधिक जानते हैं, तो आप ने फ़रमाया: अल्लाह का बंदों पर अधिकार है कि बंदे केवल उसी की पूजा करें और किसी अन्य को इसमें सम्मिलित ना करें।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

तौहीद बंदे को स्वर्ग के करीब और नरक से दूर करती है, एक देहाती नबी ﷺ के पास आया और कहा: "मुझे बताएं कि कौनसा कर्म मुझे स्वर्ग के करीब और नरक से दूर करेगा? तो नबी ﷺ ने उसे रोका और अपने साथियों की ओर देखा फिर कहा: इसे बिल्कुल सत्य का मार्ग मिला है, आपने कहा : क्या बोल रहे थे? उसने दोहराया, नबी ﷺ ने कहा: केवल अल्लाह की पूजा करो और उसके साथ किसी को सम्मिलित ना करो, नमाज़ अदा करो, ज़कात का भुगतान करो और रिश्तेदारी को जोड़े रखो। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

तौहीद के बिना लोक परलोक में कोई सुख नहीं है, नबी ﷺ ने कहा: "कहो: ला इलाहा इल्लल्लाह (अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है); सफल हो जाओगे।" (मुस्नद अहमद)

जिसका अंत तौहीद की गवाही पर होता है वह स्वर्ग में प्रवेश करता है। नबी ﷺ ने कहा: जिसके अंतिम शब्द: "ला इलाहा इल्लल्लाह" (अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है) होते हैं; वह जन्नत में प्रवेश करता है। (सुनन अबू-दाऊद)

जो कोई तौहीद पर मरता है वह जन्नत में प्रवेश करता और नरक से मुक्ति पता है। नबी ﷺ ने कहा: जो कोई भी अल्लाह से इस अवस्था में मिलता है कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक नहीं करता था, तो वह स्वर्ग में प्रवेश करेगा, और जो कोई अल्लाह से इस अवस्था में मिलता है कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक करता था, तो वह नरक में प्रवेश करेगा। (सही मुस्लिम)

दिलों में मौजूद श्रद्धा और शुद्धता की मात्रा के अनुसार ही मूवह्हिदीन (मुस्लिमों) के कर्म क्रम में घटते बढ़ते रहते हैं। एक मुस्लिम के पास सबसे प्रिय वस्तु अपने प्रभु का एकीकरण ही है। उसपर सबसे महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी तौहीद को अशक्तता, खामियों, या उसमें निहित कमियों से बचाना है। श्री इब्नुल-क़य्यिम (उन पर अल्लाह की दया हो) कहते हैं: "तौहीद सबसे नाज़ुक, सबसे पवित्र, सबसे साफ सुथरी और सबसे शुद्ध चीज़ है, तो निम्नतम चीज़ भी उसको गंदा करके उस पर प्रभाव डाल सकती है, सफेद कपड़े की भांति जिसमें हल्का सा दाग भी प्रभाव डालता है, और शफ़्फाफ़ आईने की भांति जिसमें निम्नतम चीज़ भी अपना प्रभाव छोड़ देती है।"

सर्वशक्तिमान अल्लाह ने अपने नबियों को संदेश भेजा कि अगर उनसे भी शिर्क का अपराध हो जाएगा तो उनके सारे कर्म बर्बाद हो जाएंगे, जब नबियों का यह हाल है तो दूसरे लोगों का तो पूछना ही क्या! सर्वशक्तिमान अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿وَلَقَدْ أُوحِيَ إِلَيْكَ وَإِلَى ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِكَ لَئِنْ أَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ ٱلْخَٰسِرِينَ﴾

तुम्हारी ओर और जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं उनकी ओर भी प्रकाशना की जा चुकी है कि "यदि तुमने शिर्क किया तो तुम्हारा किया-धरा अनिवार्यतः अकारथ जाएगा और तुम अवश्य ही घाटे में पड़नेवालों में से हो जाओगे।" (अल-ज़ुमर: 65)

इसीलिए पैग़ंबर इब्राहीम (उन पर शांति हो) भी शिर्क से डरते थे, काबे का निर्माण करते समय उन्होंने अपने रब से दुआ की थी:

﴿وَٱجۡنُبۡنِي وَبَنِيَّ أَن نَّعۡبُدَ ٱلۡأَصۡنَامَ﴾

"मुझे और मेरे बेटों को मूर्ति-पूजा से बचाना।" (इब्राहीम: 35)

जब अल्लाह के प्रिय मित्र शिर्क के प्रति इतने संवेदनशील हैं तो दूसरों को तो शिर्क के प्रति और भी संवेदनशील होना चाहिए।

अपने बच्चों को धर्म का मूल निर्देश सिखाना और उसके बारे में प्रश्न पूछना नबियों का तरीका रहा है, पैग़ंबर याक़ूब (उन पर शांति हो) अपने जीवन के अंतिम क्षणों में अपने बेटों से तौहीद के बारे में प्रश्न पूछते हैं:

﴿أَمۡ كُنتُمۡ شُهَدَآءَ إِذۡ حَضَرَ يَعۡقُوبَ ٱلۡمَوۡتُ إِذۡ قَالَ لِبَنِيهِ مَا تَعۡبُدُونَ مِنۢ بَعۡدِيۖ قَالُواْ نَعۡبُدُ إِلَٰهَكَ وَإِلَٰهَ ءَابَآئِكَ إِبۡرَٰهِـۧمَ وَإِسۡمَٰعِيلَ وَإِسۡحَٰقَ إِلَٰهٗا وَٰحِدٗا وَنَحۡنُ لَهُۥ مُسۡلِمُونَ﴾

क्या तुम मौजूद थे जब याक़ूब की मृत्यु का समय आया? जब उसने अपने बेटों से कहा: "तुम मेरे पश्चात किसकी इबादत करोगे?" उन्होंने कहा, "हम आपके इष्ट-पूज्य और आपके पूर्वज इब्राहीम और इसमाईल और इसहाक़ के इष्ट-पूज्य की बंदगी करेंगे -जो अकेला इष्ट-पूज्य है, और हम उसी के मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं।" (अल-बक़रह: 133)

हमारे नबी मुहम्मद ﷺ एक छोटी लड़की से पूछते हैं: अल्लाह कहाँ है? तो वह कहती है: आसमान में है। (सही मुस्लिम)

सही अक़ीदे की पुस्तकों का अध्ययन करना और विद्वानों की मंडली से चिपके रहना दृढ़ता के कारणों में से एक है, नबी ﷺ ने कहा: "मैं तुम्हारे बीच दो चीजें छोड़ कर जा रहा हूँ, इन दोनों के होते हुए तुम कभी नहीं भटकोगे: अल्लाह की पुस्तक और मेरा तरीका।" (मुस्तद्रक हाकिम)

शैख मुहम्मद बिन अब्दुल वह्हाब (उन पर अल्लाह की दया हो) कहते हैं: "नमाज़ सहित तमाम इबादतों के ज्ञान से भी पहले तुम्हारे लिए सबसे महत्वपूर्ण तौहीद का ज्ञान है।"

सत्य धर्म पर स्थिरता की दुआ करना नबियों का मार्ग है; पैग़ंबर यूसुफ (उन पर शांति हो) ने कहा:

﴿تَوَفَّنِي مُسۡلِمٗا وَأَلۡحِقۡنِي بِٱلصَّٰلِحِينَ﴾

तू मुझे इस दशा में उठा कि मैं मुस्लिम (आज्ञाकारी) हूँ और मुझे अच्छे लोगों के साथ मिला। (यूसुफ: 101)

निर्माता की तौहीद की महिमा करना, उसके महत्व को समझना और संदेह से दूर रहना; सत्य मार्गदर्शन की प्राप्ति के साधन हैं।

मैं शापित शैतान से अल्लाह की शरण में आता हूँ

﴿فَٱعۡلَمۡ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا ٱللَّهُ وَٱسۡتَغۡفِرۡ لِذَنۢبِكَ وَلِلۡمُؤۡمِنِينَ وَٱلۡمُؤۡمِنَٰتِۗ وَٱللَّهُ يَعۡلَمُ مُتَقَلَّبَكُمۡ وَمَثۡوَىٰكُمۡ﴾

तो जान लो कि अल्लाह (ईश्वर) के सिवा कोई पूजनीय नहीं है, अपने पापों के लिए और ईमान वाले पुरुषों और महिलाओं के लिए क्षमा मांगो, निसंदेह अल्लाह तुम सब की गतिविधियों और ठिकाने को ख़ूब जानता है। (मुहम्मद: 19)

अल्लाह मुझे और आपको पवित्र कुरान के प्रति आशीर्वाद दे...

दूसरा ख़ुतबा

अल्लाह की स्तुति है उसके एहसान पर, उसका धन्यवाद है उस की तोफ़ीक़ और कृपा पर, मैं अल्लाह की शान को महान मानते हुए गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, उन पर, उनके परिवार पर और उनके साथियों पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद बना रहे।

हे मुस्लिमो!

तौहीद आत्मा को शुद्ध करने का सबसे बड़ा साधन है, इसे केवल अल्लाह के अलावा पूजा की जाने वाली सभी चीजों के इंकार से ही प्राप्त किया जा सकता है -यही तौहीद की गवाही का अर्थ भी है- नबी ﷺ ने कहा: "जो कोई कहता है कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और अल्लाह के अलावा पूजी जाने वाली हर चीज़ का इंकार करता है; तो उसका धन और रक्त हराम (सम्मानजनक) है और उसका हिसाब किताब सर्वशक्तिमान अल्लाह के पास है। (सही मुस्लिम)

जो तौहीद सथापित करता है उसका संकट समाप्त हो जाता है, उसे अपने प्रभु की ख़ुशी प्राप्त होती है, उसके कर्म स्वीकार किए जाते हैं, उसके इनाम बढ़ा दिए जाते हैं, उसका जीवन पवित्र हो जाता है, उसके पाप क्षमा कर दिए जाते हैं और उसे स्वर्ग में बिना हिसाब किताब प्रवेश मिल जाता है। अतः सत्य धर्म और उस पर जमे रहने से बढ़ कर कोई आशीष नहीं।

फिर जान लो कि ईश्वर ने अपने नबी पर शांति की दुआ का आदेश दिया है...

अल्लाह की महानता[1]

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, हम उसकी प्रशंसा करते हैं उसी से सहायता और अपने पापों की क्षमा मांगते हैं, हम अपने प्राण और कर्म की बुराइयों से उसकी शरण चाहते हैं, वह जिसे सत्य मार्ग पर चला दे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे वह भटका दे उसे कोई सत्य मार्ग पर चला नहीं सकता, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह एक है, उसका कोई साझी नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, सलाम व शांति हो उन पर, उनके परिवार और उनके पवित्र साथियों पर।

अल्लाह की प्रशंसा और नबी पर दरूद के बाद:

ऐ अल्लाह के बंदो! अल्लाह से डरो जैसे की उससे डरने का हक है और इस्लाम के सशक्त कड़े को मज़बूती से थाम लो।

हे मुस्लिमो!

अल्लाह ने बंदों को गैर-अस्तित्व से अस्तित्व दिया, उन्हें वरदान प्रदान किया, उनसे संकट और कष्ट दूर किए। स्वभाविक प्रवृत्ति वाले लोग अपने साथ दयालुता और अच्छाई करने वालों से प्यार करते हैं, प्राणों के लिए अपने प्रभु को जानने की आवश्यकता खान पान करने और सांस लेने की आवश्यकता से बढ़कर है, लोक परलोक में अल्लाह की पहचान, इबादत और उसके प्रेम से अधिक कोई सुख नहीं है, अल्लाह को सबसे अधिक जानने वाला उसके प्रति सबसे अधिक सम्मान और विश्वास भी रखने वाला होता है।

मन की दासता अंगों की दासता से बड़ी, अधिक और स्थायी होती है, ये हमेशा अनिवार्य होती है, जबकि अंगों के कर्म भी वास्तव में मन के सुधार के लिए ही होते हैं। श्री इब्नुल-क़य्यिम (उन पर अल्लाह की दया हो) ने कहा: "अल्लाह बंदे को अपने यहाँ वही स्थान देता है जो स्थान बंदा अपने मन में अल्लाह को देता है।" जब सृष्टि अपने प्रभु को जान लेती है तो उसका प्राण संतुष्ट होता है और मन उसी की ओर आराम पाता है। जो अल्लाह और उसके गुणों के बारे में अधिक जानकार है; अल्लाह पर उसकी निर्भरता अधिक सही

(1) ये ख़ुतबा मस्जिद-ए-नबवी में जुमे के दिन 18/05/1432 हिजरी को दिया गया।

और मज़बूत होती है, और दासता में वो सबसे अधिक पूर्ण होता है, वह अल्लाह की सबसे अधिक महिमा करता है और सभी नामों और गुणों के साथ उसकी पूजा करता है।

महान अल्लाह के सबसे अच्छे नाम हैं -उसके नाम प्रशंसा और महिमा वाले हैं- उसके उच्चतम गुण हैं -उसके गुण पूर्णता के गुण हैं- नबी ﷺ रुकू[1] की अवस्था में कहते थे:

"सर्वशक्तिमान, साम्राज्य वाली, स्वाभिमान वाली, महान हस्ती पाक है।" (सुनन नसाई)

वो हर चीज़ में परिपूर्ण है, नबी ﷺ कहा करते थे:

"मैं आपकी पर्याप्त प्रशंसा नहीं कर सकता, आप वैसे ही हैं जैसा कि आपने स्वयं की प्रशंसा की है" (सही मुस्लिम)

आकाश व धरती में मौजूद सभी प्राणी अल्लाह के किसी भी प्रकार के दोष और कमी से शुद्ध होने का वर्णन करते हैं; उस महान हस्ती ने कहा:

﴿سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِي ٱلۡأَرۡضِۖ وَهُوَ ٱلۡعَزِيزُ ٱلۡحَكِيمُ﴾

"जो कुछ आकाश में और पृथ्वी में है, वह अल्लाह की महिमा करता है, वह महान बुद्धिमान है।" (अल-हश्र: 1)

वे सभी उसे सजदा[2] करते हैं; सर्वशक्तिमान ने कहा:

﴿وَلِلَّهِ يَسۡجُدُ مَا فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِي ٱلۡأَرۡضِ مِن دَآبَّةٖ وَٱلۡمَلَٰٓئِكَةُ وَهُمۡ لَا يَسۡتَكۡبِرُونَ﴾

"जो कुछ आकाश में है और जो कुछ पृथ्वी में है, चाहे धरती पर चलने वाले हों या फरिश्ते हों सभी अल्लाह को सजदा करते हैं, वे घमंड नहीं करते।" (अल-नह्ल: 49)

वही पैदा करता है और आज्ञा देने का अधिकार भी उसी को है, उसने जो भी बनाया मजबूती से बनाया, जो भी पैदा किया बहुत खूब पैदा किया। उसने आकाश और पृथ्वी की रचना करने से पचास हज़ार साल पूर्व ही प्राणियों के भाग्य लिखे। उसी का शासन शासन है, उस में कोई उसका साझी नहीं, उसके निर्णय को कोई पलटने वाला नहीं, उसके आदेश को कोई टालने वाला नहीं, वो जिवित है उसे कभी मृत्यु नहीं आएगी, सारी सृष्टि उसकी पकड़ के अधीन है, वही जीवन और मरण देता है, वही हंसाता और रुलाता है, वही समृद्ध और गरीब बनाता है, वही अपनी इच्छा अनुसार गर्भ में आकार देता है।

(1) रुकू: नमाज़ में झुकना।

(2) सजदा: अल्लाह की महिमा के आगे अपने माथे को एक खास अवस्था में जमीन पर रख देना। सजदा नमाज़ का सबसे म्हत्वपूर्ण अंग है।

﴿ مَّا مِن دَآبَّةٍ إِلَّا هُوَ ءَاخِذُۢ بِنَاصِيَتِهَآۚ ﴾

चलने-फिरनेवाला जो प्राणी भी है, उसकी चोटी उसी के हाथ में है। (हूद: 56)

वह अपनी इच्छानुसार उनका प्रबंधन करता है। बंदों के दिल उसकी दो उंगलियों के बीच होते हैं, वह उन्हें अपनी इच्छानुसार उलटता पलटता रहता है, उनकी पैशानी उसके हाथ में होती है और मामलात की डोर उसके निर्णय और आदेश से बंधी है।

कोई दावेदार उससे लड़ नहीं सकता, न ही उस पर कोई आधिपत्य स्थापित कर सकता है, अगर पूरा समुदाय किसी को हानि पहुंचाने के लिए इकट्ठा हो जाए और वो हानि अल्लाह ने ना लिखी हो तो कोई उसे हानि नहीं पहुँचा सकता, इसी प्रकार यदि सारा समुदाय किसी को लाभ दिलाने के लिए इकट्ठा हो जाए तो वो अल्लाह की इच्छा के बिना, उसे लाभ नहीं दिला सकता।

उसके दंड को कोई टाल नहीं सकता ना ही किसी संकट को उसके अलावा कोई दूर कर सकता है। जो चाहता है पैदा करता है, और जो भी कार्य करता है अपनी इच्छा अनुसार ही करता है:

﴿لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ﴾

उससे उसके कार्यों के बारे में नहीं पूछा जा सकता (अल-अंबिया: 23)

किन्तु सृष्टि से पूछा जाएगा, वो स्वयं विधमान है, उसे सृष्टि से सहायता की आवश्यकता नहीं है, सब पर उसी का आधिपत्य है, ग़ैब (परोक्ष) की कुंजियां उसी के पास हैं, उसके अलावा कोई ग़ैब को नहीं जानता, उसकी जानकारी फरिश्तों से भी ओझल है, वे भी नहीं जानते कि कल किसकी मृत्यु होगी या ब्रह्माण्ड में क्या होने वाला है।

वह अपने बंदों के मामलात का प्रबंधन करने वाला राजा है, वह आज्ञा देता और रोकता है, प्रदान करता और वंचित करता है, वह गिराता और उठाता है और उसके आदेश समय अनुसार आगे पीछे आते रहते हैं और उसकी इच्छा अनुसार लागू होते हैं, इसलिए उसने जो चाहा वह हुआ और जो नहीं चाहा वह नहीं हुआ।

﴿يَسْـَٔلُهُۥ مَن فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِۚ كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِى شَأْنٍ﴾

आकाशों और धरती में जो भी है उसी से माँगता है। उसकी नित्य नई शान है। (अल-रहमान: 29)

संकट दूर करना, टूटे को जोड़ना, ग़रीब को धन देना और प्रार्थना कबूल करना उसके कुछ काम हैं, उसने अपने बारे में कहा:

﴿ وَمَا كُنَّا عَنِ ٱلْخَلْقِ غَٰفِلِينَ ﴾

"और हम सृष्टि से बे-खबर नहीं हैं।" (अल-मूमिनून: 17)

उसका ज्ञान सब कुछ समेटे हुए है; जो हुआ, जो हो रहा है, जो होगा और जो नहीं हुआ वो सब कुछ जानता है। उसकी अनुमति के बिना एक कण नहीं हिलता, उसकी जानकारी के बिना एक पत्ता नहीं गिरता, उससे कोई गोपनीय वस्तु नहीं छिपी है, रहस्य और सार्वजनिक उसके लिए बराबर है, सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा:

﴿سَوَآءٌ مِّنكُم مَّنْ أَسَرَّ ٱلْقَوْلَ وَمَن جَهَرَ بِهِۦ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍۭ بِٱلَّيْلِ وَسَارِبٌۢ بِٱلنَّهَارِ ﴾

तुम में से कोई चुपके से बात करे या ज़ोर से, कोई रात के वक़्त छुपा हुआ हो या दिन के वक़्त चल-फिर रहा हो, वे सब (अल्लाह के ज्ञान में) बराबर हैं। (अल-रअद: 10)

अपने सिंहासन पर रहते हुए भी वह सृष्टि की वाणियों को सुनता है, श्रीमती आएशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) कहती हैं: "समस्त प्रशंसा उस अल्लाह के लिए है जिसके सुनने की क्षमता ने तमाम वाणियों को घेर रखा है, एक पक्षकार महिला नबी ﷺ के पास आई और उसने आपसे बातचीत की, मैं घर के कोने में थी और उनकी बातों को नहीं सुन पा रही थी, इसी बीच अल्लाह ने आयत उतार दी:

﴿قَدْ سَمِعَ ٱللَّهُ قَوْلَ ٱلَّتِى تُجَٰدِلُكَ فِى زَوْجِهَا وَتَشْتَكِىٓ إِلَى ٱللَّهِ وَٱللَّهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَآ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ سَمِيعٌۢ بَصِيرٌ﴾

अल्लाह ने उस स्त्री की बात सुन ली जो अपने पति के विषय में तुमसे झगड़ रही है और अल्लाह से शिकायत किए जाती है। अल्लाह तुम दोनों की बातचीत सुन रहा है। निश्चय ही अल्लाह सब कुछ सुननेवाला, देखनेवाला है। (अल-मुजादला: 1)

बंदों के सारे कर्म घुप अंधेरी रात में भी उससे छिपे नहीं रहते, महान अल्लाह ने फ़रमाया:

{ٱلَّذِى يَرَىٰكَ حِينَ تَقُومُ * وَتَقَلُّبَكَ فِى ٱلسَّٰجِدِينَ﴾

जो तुम्हें देख रहा होता है, जब तुम खड़े होते हो। और सजदा करनेवालों में तुम्हारी चलत-फिरत को भी वह देखता है। (अल-शुअरा: 219-218)

वह अल्लाह आसमानों के ऊपर से घुप अंधेरी रात में चिकने पत्थर पर काली चींटी के पदचिन्हों को भी देख लेता है।

आकाश और पृथ्वी में उसके भण्डार भरे हुए हैं, उसके हाथ उदारता से फैले हुए हैं, दिन व रात उसकी उदारता जारी है, जैसे चाहता है खर्च करता है, बहुत दानी व उदारवादी है, माँगने से पहले ही प्रदान कर देता है और माँगने के बाद भी प्रदान करता है। वो हर रात्री जब तीसरा पहर शेष होता है निकट के आकाश में उतरता है और कहता है: है कोई मुझे पुकारने वाला मैं उसकी पुकार स्वीकार करूँ? है कोई मुझ से माँगने वाला मैं उसे प्रदान करूँ? और जो उससे नहीं माँगता वो उससे नाराज़ होता है।

उसने अपनी नवाज़िश के दरवाज़े अपनी सृष्टि के लिए खोल दिए हैं, अत: उसने समुद्र को मनुष्य के अधीन किया, नदियों को बहाया और बड़ी मात्रा में आजीविका उप्लभ्द कराई। हर किसी की रोजी उस तक पहुँचादी, पृथ्वी के पेट में चींटियों, हवा में पक्षियों और पानी में मछलियों को आजीविका प्रदान की:

﴿وَمَا مِن دَآبَّةٍ فِي ٱلۡأَرۡضِ إِلَّا عَلَى ٱللَّهِ رِزۡقُهَا﴾

धरती में चलने-फिरनेवाला जो प्राणी भी है उसकी रोज़ी अल्लाह के ज़िम्मे है। (हूद: 6)

उसकी जीविका सबको विस्तारित है; इसलिए अपने साम्राज्य में माँ के गर्भ में पलने वाले कमज़ोर बच्चे को भी जीविका देता है और मज़बूत व्यक्ति के लिए भी जीविका की व्यवस्था करता है। वो उदार है, दान और उदारता से प्रेम करता है, अगर उससे माँगा जाता है तो देता है, और अन्य के सामने कोई ज़रूरत रखे जाने से नाराज़ होता है, हर भलाई उसी की ओर से है:

﴿وَمَا بِكُم مِّن نِّعۡمَةٍ فَمِنَ ٱللَّهِۖ﴾

तुम्हारे पास जो भी आशीष है वो अल्लाह की ओर से है। (अल-नह्ल: 53)

उसका भरण-पोषण कभी समाप्त नहीं होता; नबी ﷺ ने कहा: "तुम्हारा क्या अनुमान है कि अल्लाह ने आकाश और पृथ्वी के निर्माण के बाद से कितना खर्च किया है? उस के बावजूद उसके सीधे हाथ के खजाने में कोई कमी नहीं आई।" (सही मुस्लिम)

यदि सभी बंदे एक साथ उससे माँगने लगें और वो सबकी माँगें पूरी करता चला जाए तब भी उसके साम्राज्य में कोई कमी नहीं आएगी। नबी ﷺ ने कहा कि अल्लाह कहता है: "हे मेरे बंदो! यदि तुम सबके सब मनुष्य और जिन्न एक ही मैदान में खड़े हो जाओ, फिर तुम मुझसे माँगो; और मैं प्रत्येक व्यक्ति की माँग पूरी कर दूँ, तो भी मेरे साम्राज्य में केवल उतनी ही कमी आएगी जितनी कमी एक सुई को समुद्र में डाल कर निकालने से समुद्र में आती है।" (सही मुस्लिम)

कर्म के इनाम को अल्लाह कई गुणा बढ़ा देता है; उसके यहाँ एक अच्छा काम दस से सात सौ गुणा और उससे भी अधिक बढ़ा दिया जाता है। आज्ञाकारिता के थोड़े से समय को वो ज़्यादा कर देता है, अत: क़द्र की रात[1] एक हज़ार महीनों से बेहतर है, हर महीने के तीन दिन उपवास करना अनंत काल के उपवास के समान है, जब बंदा उसकी प्रसन्नता की प्राप्ति हेतु दान करता है तो उसे कई गुणा बढ़ा कर लोटाता है। उसकी उदारता आशा से बढ़कर होती है, इसलिए वह स्वर्गवासियों को वो सब देगा जो किसी आँख ने नहीं देखा, किसी कान ने नहीं सुना, और किसी इंसान के दिल ने कभी उसकी कल्पना भी नहीं की।

अगर बंदा अल्लाह की खातिर कोई चीज़ त्याग देता है तो अल्लाह उसे उससे बेहतर चीज़ देता है। वह अपनी सारी सृष्टि से धनी है, हर चीज़ उसका ऋणी है

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ أَنتُمُ ٱلۡفُقَرَآءُ إِلَى ٱللَّهِۖ وَٱللَّهُ هُوَ ٱلۡغَنِيُّ ٱلۡحَمِيدُ﴾

ऐ लोगो! तुम्ही अल्लाह के मोहताज हो और अल्लाह तो निस्पृह, स्वप्रशंसित है। (फ़ातिर: 15)

ना बंदे अल्लाह को लाभ देने की स्थिति में पहुँच सकते हैं कि वे उसे लाभ दे सकें, ना क्षति पहुँचाने की स्थिति में पहुँच सकते हैं कि उसे क्षति पहुँचाएं, वह बहुत उच्च और महान है, उसकी कुर्सी उसका पायदान है, उस कुर्सी ने आकाशों और धरती को घेर रखा है, कुर्सी की तुलना में सात आकाश ऐसे हैं जैसे किसी ढाल में कुछ सिक्के पड़े हों, कुर्सी अर्श पर इस तरह है जैसे एक कड़ा किसी विशाल मैदान में पड़ा हो, उसका अर्श सबसे विशाल सृष्टि है, अर्श के नीचे समुद्र है, अर्श को फरिश्ते उठाए हुए हैं जिनके कानो की लौ से कंधों तक की दूरी सात सौ साल की है, हमारा प्रभु उसी अर्श पर विराजमान है जैसे उसकी महिमा व वैभव को शोभा देता है, उसे अर्श और उसके नीचे की समस्त चीजों की कोई ज़रूरत नहीं है।

उसने हर चीज़ को घेर रखा है, उसे कोई घेर नहीं सकता, नेत्रों तक उसकी पहुँच है मगर दृष्टि उसे नहीं देख सकती, उसकी शक्ति ने सभी प्राणियों को घेर रखा है, सृष्टि उसकी दृष्टि में कमज़ोर है, भले ही वह प्राणियों की दृष्टि में बड़ी हो। अत: कयामत के दिन सर्वशक्तिमान अल्लाह आकाशों को लपेट कर सीधे हाथ में पकड़ लेगा, फिर कहेगा: "मैं राजा हूँ, कहाँ हैं अभिमानी? कहाँ हैं घमंड करने वाले? फिर ज़मीनों को अपनी मुट्ठी में लेगा, और कहेगा: मैं राजा हूँ, शूरवीर कहाँ हैं? कहाँ हैं अभिमानी?" (सही मुस्लिम) "वो एक उंगली पर आकाशों को रखेगा, एक उंगली पर जमीनों को, एक उंगली पर पानी और पाताल को और एक उंगली

(1) रमजान के आखिरी दस दिनों में पाई जाने वाली एक रात।

पर समस्त सृष्टि को, फिर उन सब को हिला देगा फिर कहेगा: मैं ही राजा हूँ, मैं ही राजा हूँ।" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम) जब वह कोई वचन बोलता है तो आकाश में कपकपी पैदा हो जाती है और आकाश वाले मूर्छित हो जाते हैं, सबसे पहले जिब्रील (उन पर शांति हो) को होश आता है, और आकाश अल्लाह से भयभीत होते हैं, सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा:

﴿تَكَادُ ٱلسَّمَٰوَٰتُ يَتَفَطَّرۡنَ مِن فَوۡقِهِنَّۚ﴾

करीब है कि आकाश अपने ऊपरी भाग से फट पड़ें। (मरयम: 90)

श्री ज़ह्हाक कहते हैं: "अर्थात अल्लाह की महानता और उसके वैभव से आकाश के टुकड़े-टुकड़े हो जाएं।"

वह बलवान है, "सोता नहीं है, ना नींद उसको शोभा देती है, तराज़ू उठाता और झुकाता है, उसके पास रात के कर्म दिन के कर्म से पहले पेश किए जाते हैं, उसका पर्दा प्रकाश है, अगर वो खोल दे तो उसके चेहरे की चमक सृष्टि को दृष्टि की पहुँच तक जला कर भस्म कर दे।" (सही मुस्लिम)

वही मामलों की योजना बनाता है:

﴿يُدَبِّرُ ٱلۡأَمۡرَ مِنَ ٱلسَّمَآءِ إِلَى ٱلۡأَرۡضِ ثُمَّ يَعۡرُجُ إِلَيۡهِ فِي يَوۡمٖ كَانَ مِقۡدَارُهُۥٓ أَلۡفَ سَنَةٖ مِّمَّا تَعُدُّونَ﴾

वह आकाश से लेकर धरती तक हर काम की व्यवस्था ख़ुद करता है, फिर वह काम एक ऐसे दिन में उसके पास ऊपर पहुँच जाता है जिसकी मात्रा तुम्हारी गिनती के हिसाब से एक हज़ार साल होती है। (अल-सजदा: 5)

﴿وَلَوۡ أَنَّمَا فِي ٱلۡأَرۡضِ مِن شَجَرَةٍ أَقۡلَٰمٞ وَٱلۡبَحۡرُ يَمُدُّهُۥ مِنۢ بَعۡدِهِۦ سَبۡعَةُ أَبۡحُرٖ مَّا نَفِدَتۡ كَلِمَٰتُ ٱللَّهِۚ إِنَّ ٱللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٞ﴾

और धरती में जितने पेड़ हैं अगर वो क़लम बन जाऐं, और जो समुद्र है इसके अ़लावा सात समुद्र और मिल जाऐं, (और वो सियाही बनकर अल्लाह के गुण लिखें) तब भी अल्लाह की बातें समाप्त नहीं होंगी। सत्य यह है कि अल्लाह प्रभुत्वशाली एवं अत्यंत ज्ञानी है। (लुक़मान: 27)

वो शक्तिशाली है, जब किसी चीज़ की इच्छा करता है तो कहता है: हो जा, सो वो हो जाती है। उसका काम पलक झपकने के समान है; बल्कि इससे भी शीघ्र। उसके पास सैनिक हैं जिन्हें कोई नहीं जानता। उसने लूत (उन पर शांति हो) की बस्ती को उखाड़ फेंका और उसके ऊपरी भाग को नीचे कर दिया।

जब बनी इस्राइल (यहूद) ने तौरात के आदेशों को अस्वीकार कर दिया तो प्रभु ने एक बादल की तरह पर्वत को उनके ऊपर उठा दिया, वे भयभीत हो गए कि कहीं उन पर गिर ना पड़े। अल्लाह एक पर्वत पर प्रकाशमान हुआ तो पर्वत टुकड़ों में बिखर गया, जब यह दृश्य मूसा (उन पर शांति हो) ने देखा तो मूर्छित हो गए।

जब समय सीमा समाप्त हो जाएगी, तो अल्लाह पृथ्वी को झटका देगा, फिर चूर चूर कर देगा और पहाड़ों को टुकड़े-टुकड़े कर देगा।

पहली बार जब सूर (भोंपू) में फ़रिश्ता इस्राफील फूंक मारेगा तो सृष्टि घबरा जाएगी, दूसरी बार फूंक मारेगा तो मूर्छित हो जाएगी, तीसरी बार फूंक मरेगा तो दोबारा जिंदा होकर मैदान में एकत्रित हो जाएगी, फिर अल्लाह अंतिम फैसले के लिए आएगा, उसके आने से भय और भव्यता के मारे आकाश फट पड़ेगा।

सर्वशक्तिमान अल्लाह वर्णनकर्ताओं के वर्णन और प्रशंसा करने वालों की प्रशंसा से ऊपर है, कोई उसके समान नहीं, उसका कोई उदाहरण नहीं, कोई प्रतिबिंब नहीं। नबियों ने अपने प्रभु को जाना तो उन्होंने भक्ति और उसके प्रति समर्पण बढ़ा दिया, अत: दाऊद (उन पर शांति हो) एक दिन उपवास करते और एक दिन बिना उपवास के रहते थे, हमारे नबी मुहम्मद ﷺ रात में उठते और जब तक पैर सूज नहीं जाते, नमाज़ में खड़े रहते थे और इब्राहीम (उन पर शांति हो) बहुत पश्चाताप करने वाले और क्षमा माँगने वाले थे, जो भी नबियों के रास्ते पर चलेगा वो सुख-समृद्धि प्राप्त करेगा।

मैं शापित शैतान से अल्लाह की शरण में आता हूँ

﴿وَمَا قَدَرُوا۟ ٱللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِۦ وَٱلْأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُۥ يَوْمَ ٱلْقِيَـٰمَةِ وَٱلسَّمَـٰوَٰتُ مَطْوِيَّـٰتٌۢ بِيَمِينِهِۦ ۚ سُبْحَـٰنَهُۥ وَتَعَـٰلَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ﴾

उन्होंने अल्लाह की क़द्र न जानी, जैसी उसकी क़द्र जाननी चाहिए थी। हालाँकि क़यामत के दिन सारी की सारी धरती उसकी मुट्ठी में होगी और आकाश उसके दाएँ हाथ में लिपटे हुए होंगे। महान और उच्च है वह उससे, जो वे साझी ठहराते हैं। (अल-ज़ुमर: 67)

अल्लाह मुझे और आपको पवित्र क़ुरआन के प्रति आशीर्वाद दे...

दूसरा ख़ुतबा

अल्लाह की स्तुति है उसके एहसान पर, उसका धन्यवाद है उस की तोफ़ीक़ और कृपा पर, मैं अल्लाह की शान कों महान मानते हुए गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके भक्त और दूत हैं, उन पर, उनके परिवार पर और उनके साथियों पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद बना रहे।

हे मुस्लिमो!

अल्लाह को अपनी स्तुति सबसे अधिक प्रिय है, इसीलिए उसने स्वयं अपनी स्तुति की। लोगों के बीच एक दूसरे से श्रेष्ठता का सिद्धांत केवल अल्लाह को जानने, उससे प्रेम करने और उसकी स्तुति करने पर आधारित है, जिसने पवित्र मन से अल्लाह को जान लिया वो अवश्य उस से प्रेम व उसकी महिमा करेगा, और जितना प्रेम बढ़ेगा उतनी ही आज्ञाकारिता बढ़ेगी।

पाप अल्लाह की महिमा और श्रद्धा को कमज़ोर कर देता है, यदि बंदे के हृदय में अल्लाह की श्रद्धा और महानता स्थापित हो जाए तो कोई भी उसकी अवज्ञा करने का साहस ना करे, वास्तव में हर अवज्ञा अल्लाह से अज्ञानता के कारण ही होती है।

अल्लाह की महिमा आज्ञाकारिता से बढ़ती है, इबादत का सबसे बड़ा कार्य जिसके द्वारा एक बंदा अपने प्रभु के निकट आता है: पूजा के कार्यों को अल्लाह के साथ विशेष करना है, अत: बंदा उसके अलावा किसी से प्रार्थना ना करे, किसी से मदद न माँगे और उसके अलावा किसी के लिए इबादत ना करे।

जो कोई अल्लाह के अलावा किसी की उपासना करता है; तो ईश्वर के स्थान को अनुचित आंकता है और शिर्क में पड़कर स्वयं से अन्याय करता है। जिसे अल्लाह ने ईमान और तौहीद के सही पथ पर लगा दिया है उस पर अनिवार्य है कि दूसरों को भी अल्लाह पर ईमान और तौहीद की ओर बुलाए।

तो जान लें कि ईश्वर ने आपको अपने नबी ﷺ पर आशीर्वाद और शांति भेजने की आज्ञा दी है।...

अल्लाह की महिमा[1]

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, हम उसकी प्रशंसा करते हैं उसी से सहायता और अपने पापों की क्षमा मांगते हैं, हम अपने प्राण और कर्म की बुराइयों से उसकी शरण चाहते हैं, वह जिसे सत्य मार्ग पर चला दे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे वह भटका दे उसे कोई सत्य मार्ग पर चला नहीं सकता। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह एक है, उसका कोई साझी नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, सलाम व शांति हो उन पर, उनके परिवार और उनके पवित्र साथियों पर।

अल्लाह की प्रशंसा और नबी पर दरूद के बाद:

ऐ अल्लाह के बंदो! अल्लाह से डरो जैसे की उससे डरने का हक है और इस्लाम के सशक्त कड़े को मज़बूती से थाम लो।

हे मुस्लिमो!

ज्ञान का सम्मान उसके विषय के सम्मान से जुड़ा होता है, महान ईश्वर का ज्ञान सबसे सम्मानित और शुद्धतम ज्ञान है, उसे जानने की आवश्यकता सभी ज़रूरतों से ऊपर है, बल्कि यह आवश्यकताओं का मूल है।

अल्लाह ने बंदों की रचना अपने प्रति प्रेम और ज्ञान की प्रवृत्ति पर की है, और हृदय को भी इसी लिए पैदा किया गया है:

﴿فِطۡرَتَ ٱللَّهِ ٱلَّتِي فَطَرَ ٱلنَّاسَ عَلَيۡهَاۚ لَا تَبۡدِيلَ لِخَلۡقِ ٱللَّهِۚ﴾

अल्लाह की उस प्रवृत्ति (का अनुसरण करो) जिसपर उसने लोगों को पैदा किया है। अल्लाह की बनाई हुई संरचना बदली नहीं जा सकती। (अल-रूम: 30)

यही शुद्धता है जिस पर हर शिशु का जन्म होता है, जिन्नात और मनुष्य के शैतान सर्जित जीवों को उनकी प्रवृत्ति से हटाना चाहते हैं, क़ुदसी हदीस में महान अल्लाह कहता है: "मैंने अपने समस्त बंदों को शुद्धतम फितरत (प्रवृत्ति) पर बनाया है, फिर उनके पास शैतान

(1) ये ख़ुतबा मस्जिद-ए-नबवी में जुमे के दिन 24/05/1437 हिजरी को दिया गया।

आए और उन्हें उनके धर्म से भटका दिया। (सही मुस्लिम) प्रत्येक मुसलमान अपने (शुद्ध) स्वभाव की रक्षा का पाबंद है, ताकि विकृत लोग अपने वास्तविक स्वभाव में लौट आएं और ईमान वाले ईमान में वृद्धि करें।

अल्लाह ने अपने प्रभुत्व और पूजनीयता को प्रमाणित करने के लिए अपनी निशानियों को स्थापित किया है, अगर समुद्र का सारा जल इंक बन जाए और अन्य समुद्र भी लाए जाएं तो भी अल्लाह के शब्द समाप्त नहीं होंगे और ना ही उसके प्रमाण की निशानियां खत्म होंगी।

रसूलों को फितरत (प्राकृतिक वृत्ति) की स्थापना करने तथा इसे पूर्ण स्वरुप देने के लिए भेजा गया था, ईश्वर को उसके कार्यों के साथ एकल करके प्रभुत्व में उसे अकेला मानना; पैग़ंबरों द्वारा लाई गईं सबसे महान शिक्षाओं में से एक है। यह ईमान के सिद्धांतों में से एक सिद्धांत है, और तौहीद का एक ऐसा प्रकार है जिसके कारण अल्लाह ने बंदों की रचना की है, इसी तरह यह पूजनीयता में उसकी ऐकता का भी प्रमाण है, इसी के द्वारा ईश्वर ने स्वयं को इबादत के साथ विशेष करने को प्रमाणित किया है। इसमें शिर्क करना शिर्क की सबसे बड़ी और सबसे घृणित क़िस्म है, जो इसका हक अदा नहीं करता वही पूजनीयता में ईश्वर की एकता के मामले में भी ग़लती कर जाता है।

महान अल्लाह अपनी आत्मीयता, गुणों और कार्यों में परिपूर्ण है, उस महामहिम के गुणों में से एक रुबूबियत (प्रभुत्व) है; इसमें उसका कोई साझी नहीं है, जैसे उसकी उलूहियत (पूजनीयता) में कोई साझी नहीं, अल्लाह का कथन है:

﴿قُلْ أَغَيْرَ ٱللَّهِ أَبْغِى رَبًّا وَهُوَ رَبُّ كُلِّ شَىْءٍ﴾

कहो: "क्या मैं अल्लाह से भिन्न कोई और रब ढूढूँ, जबकि हर चीज़ का रब वही है! (अल-अनआम: 164)

वह सृजन, प्रभुत्व, पालन-पोषण और प्रबंधन में अकेला है, वही एक निर्माता है, उसके साथ कोई भी निर्माता नहीं है, आकाश और पृथ्वी का निर्माता है, उसने जो कुछ भी बनाया है, वह ठीक ठीक और सबसे अच्छा बनाया है, वह सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता है, फिर जैसे उसने आरम्भ में सृष्टि की, कयामत के दिन उसी तरह पुनर्स्थापित करेगा, यह कार्य उसके लिए बहुत सामान्य है, अल्लाह के अतिरिक्त कोई भी उपासना के योग्य नहीं है, अल्लाह ही केवल उपासना के योग्य है; क्योंकि वह निर्माता है:

﴿أَفَمَن يَخْلُقُ كَمَن لَّا يَخْلُقُ ۗ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ﴾

फिर क्या जो पैदा करता है वह उस जैसा हो सकता है, जो पैदा नहीं करता? फिर क्या तुम्हें होश नहीं होता? (अल-नह्ल: 17)

वह महान हस्ती ही राजा है, सारा राजत्व उसी का है :

﴿ذَٰلِكُمُ ٱللَّهُ رَبُّكُمْ لَهُ ٱلْمُلْكُ ۚ وَٱلَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِهِۦ مَا يَمْلِكُونَ مِن قِطْمِيرٍ﴾

वही अल्लाह तुम्हारा रब है। उसी की बादशाही है। उससे हटकर जिनको तुम पुकारते हो वे खजूर की गुठली के छिलके के भी मालिक नहीं। (फ़ातिर: 13)

वह अपनी सृष्टि का मालिक है, आकाश व धरती में जो कुछ है सब उसी का है, समस्त सृष्टि उसकी उपासना और महिमा में लीन हैं, हर एक उसके आगे नतमस्तक है।

वही स्वामी है जिसका कोई साझी नहीं, सारे लोग उसके दास हैं:

﴿إِن كُلُّ مَن فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ إِلَّآ ءَاتِى ٱلرَّحْمَٰنِ عَبْدًا﴾

आकाशों और धरती में जो कोई भी है रहमान के पास एक बन्दे के रूप में आनेवाला है। (मरयम: 93)

उसका राजस्व पूर्ण और हमेशा के लिए है, वो लोक परलोक का स्वामी है, परलोक में वो प्रकट होगा और कहेगा:

﴿لِّمَنِ ٱلْمُلْكُ ٱلْيَوْمَ﴾

आज किसका राज है? (ग़ाफिर: 16)

फिर वह स्वयं उत्तर देगा:

﴿لِلَّهِ ٱلْوَٰحِدِ ٱلْقَهَّارِ﴾

अल्लाह का, जो अकेला सबपर क़ाबू रखनेवाला है। (ग़ाफिर: 16)

वह महामहिम अपनी सृष्टि और अपने प्रभुत्व के मामलों के प्रबंधन में अकेला है, इसलिए सारा मामला उसी के हाथ में है।

﴿أَلَا لَهُ ٱلْخَلْقُ وَٱلْأَمْرُ﴾

सुनो, उसी की सृष्टि है और उसी का आदेश है। (अल-आराफ़: 54)

वही आदेश देता और निषेध करता है, रचना और पोषण करता है, प्रदान करता और रोकता है, गिराता और उठाता है, सम्मान और अपमान करता है और जीवन और मृत्यु देता है:

﴿يُكَوِّرُ ٱلَّيۡلَ عَلَى ٱلنَّهَارِ وَيُكَوِّرُ ٱلنَّهَارَ عَلَى ٱلَّيۡلِۖ وَسَخَّرَ ٱلشَّمۡسَ وَٱلۡقَمَرَۖ﴾

रात को दिन पर लपेटता है और दिन को रात पर लपेटता है। और उसने सूर्य और चन्द्रमा को वशीभुत कर रखा है। (अल-ज़ुमर: 5)

﴿يُخۡرِجُ ٱلۡحَيَّ مِنَ ٱلۡمَيِّتِ وَيُخۡرِجُ ٱلۡمَيِّتَ مِنَ ٱلۡحَيِّ وَيُحۡيِ ٱلۡأَرۡضَ بَعۡدَ مَوۡتِهَاۚ﴾

जीवित को मृत से निकालता है और मृत को जीवित से निकालता है, और धरती को उसकी मृत्यु के पश्चात जीवन प्रदान करता है। (अल-रूम: 19)

सभी प्राणी उसकी इच्छा और आधिपत्य के अधीन हैं, सेवकों के दिल और उनके अग्रभाग उसके हाथ में हैं, मामलों की लगाम उसी के निर्णय और भाग्य के साथ बंधी है, वो हर प्राण के करतूत पर साक्षी है, आकाश और पृथ्वी उसकी आज्ञा से काएम हैं।

﴿وَيُمۡسِكُ ٱلسَّمَآءَ أَن تَقَعَ عَلَى ٱلۡأَرۡضِ إِلَّا بِإِذۡنِهِۦٓۚ﴾

और उसने आकाश को धरती पर गिरने से रोक रखा है। उसकी अनुज्ञा हो तो बात दूसरी है। (अल-हज: 65)

﴿إِنَّ ٱللَّهَ يُمۡسِكُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضَ أَن تَزُولَاۚ﴾

अल्लाह ही आकाशों और धरती को थामे हुए है कि वे टल न जाएँ। (फ़ातिर: 41)

﴿يَسۡـَٔلُهُۥ مَن فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِۚ كُلَّ يَوۡمٍ هُوَ فِي شَأۡنٖ﴾

आकाश और धरती में हर कोई उसी से माँगता है और वो हर दिन एक नई शान में होता है। (अल-रहमान: 29)

पाप को छमा करना, भटके को मार्गदर्शन करना, संकट दूर करना, टूटे को जोड़ना, ग़रीब को धनि करना और प्रार्थना कबूल करना उसके कुछ काम हें।

﴿وَمَا كُنَّا عَنِ ٱلۡخَلۡقِ غَٰفِلِينَ﴾

"और हम सृष्टि से बे-खबर नहीं हैं।" (अल-मूमिनून: 17)

उसके हुक्म लगातार आते रहते हैं, उसकी इच्छा प्रभावी है, उसकी अनुमति के बिना ब्रह्माण्ड में एक कण नहीं हिलता, इसलिए जो उसने चाहा हुआ और जो नहीं चाहा नहीं हुआ, जो चाहता है रचना करता है और जो चाहता है कार्य करता है, उसका काम निर्धारित होता है, जो देता है उसे कोई रोक नहीं सकता, जो कुछ रोक ले उसे कोई दे नहीं सकता,

उसके निर्णय को कोई टाल नहीं सकता, उसके आदेश को कोई पलट नहीं सकता, उसकी इच्छा को कोई हटा नहीं सकता और उसके वचन को बदलने वाला कोई नहीं।

उसने आकाश और पृथ्वी के निर्माण से पचास हज़ार वर्ष पूर्व ही सृष्टि के आयामों का भाग्य लिख दिया था। अगर समस्त सृष्टि किसी ऐसी चीज़ पर एकत्रित हो जाए जो अल्लाह द्वारा भाग्य में नहीं लिखी गई है, तो वे इसे करने में सक्षम नहीं होगी, और अगर वे एक साथ इकट्ठा होकर (भाग्य के अनुसार) होने वाली किसी चीज़ को रोकना चाहें तो वे सब मिल कर भी उसे रोक नहीं सकते। यदि सारा समुदाय किसी व्यक्ति को हानि पहुँचाने के लिए इकट्ठा हो जाए और अल्लाह उसकी हानि नहीं चाहता तो वे उसको हानि नहीं पहुँचा सकते, यदि वे उसके लाभ के लिए इकट्ठे हों और अल्लाह ने उसके लाभ की अनुमति न दी हो तो वे उसे लाभ नहीं दिला सकते। वह जिसे चाहता है उपकार स्वरुप सीधे पथ पर लगाता है और जिसे चाहता है न्याय स्वरूप भटका देता है, जब किसी चीज़ की इच्छा करता है तो कहता है: "हो जा" तो वो हो जाती है:

﴿لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْـَٔلُونَ﴾

उससे उसके कार्यों के बारे में नहीं पूछा जा सकता, किन्तु उनसे पूछा जाएगा। (अल-अंबिया: 23)

उसकी वाणी सबसे सुंदर है, उसके शब्दों का कोई आरम्भ है ना अंत :

﴿وَلَوْ أَنَّمَا فِى ٱلْأَرْضِ مِن شَجَرَةٍ أَقْلَٰمٌ وَٱلْبَحْرُ يَمُدُّهُۥ مِنۢ بَعْدِهِۦ سَبْعَةُ أَبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمَٰتُ ٱللَّهِ﴾

और धरती में जितने पेड़ हैं अगर वो क़लम बन जाऐं, और जो समुद्र है इसके अ़लावा सात समुद्र और मिल जाऐं, (और वो सियाही बनकर अल्लाह का ज्ञान लिखें) तब भी अल्लाह की बातें समाप्त नहीं होंगी। (लुक़मान: 27)

उसका ज्ञान हर वस्तु में समाहित है, जो हुआ और जो होगा और जो नहीं हुआ और नहीं होगा; सब कुछ वो जानता है। सृष्टि ने क्या किया है और वो क्या करेगी; उसे हर चीज़ की खबर है, वह जानता है कि भूमि और समुद्र में क्या हो रहा है, एक पत्ता भी उसकी जानकारी में आए बिना नहीं गिरता।

﴿لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَلَا فِى ٱلْأَرْضِ﴾

और उससे आकाशों और धरती में कणभर भी कोई चीज़ औझल नहीं। (सबा: 3)

जो कुछ हम से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष है वह सभी कुछ जानता है, वह जानता है कि दिल किस बारे में फुसफुसाते हैं, दिलों के रहस्य क्या हैं वह जानता है, उसे पता है कि मादा गर्भ में क्या ढोती है, ग़ैब (अनदेखे) की चाबियाँ केवल उसे ही पता हैं, सृष्टि का समस्त ज्ञान उसके ज्ञान की तुलना में समुद्र की एक बूंद के भाँति है, जो कुछ वे जानते हैं वह भी उसी की इच्छा से जानते हैं। एक गौरैया ने समुद्र में चोंच मारी तो श्री ख़ज़िर ने पैग़ंबर मूसा (उन पर शांति हो) से कहा: "मेरे और तुम्हारे ज्ञान ने ईश्वर के ज्ञान में से उतना ही कम किया है जितना इस गौरैया ने समुद्र में से कम किया है।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

उसकी सुनवाई ने समस्त वाणियों को घेर रखा है, इसलिए उससे असहमति या उस पर संदेह न करो। एक महिला ने अपने पति के बारे में नबी ﷺ से शिकायत की और आएशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) घर के कोने में थीं, इस लिए वह शिकायतकर्ता के शब्द समझ नहीं पा रही थीं, जबकि ईश्वर सात आकाशों के ऊपर से उसके वचन को सुन रहा था, फिर प्रभु ने अपना शब्द अवतीर्ण किया:

﴿قَدْ سَمِعَ ٱللَّهُ قَوْلَ ٱلَّتِى تُجَـٰدِلُكَ فِى زَوْجِهَا وَتَشْتَكِىٓ إِلَى ٱللَّهِ وَٱللَّهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَآ﴾

अल्लाह ने उस स्त्री की बात सुन ली जो अपने पति के विषय में तुमसे झगड़ रही है और अल्लाह से शिकायत किए जाती है। अल्लाह तुम दोनों की बातचीत सुन रहा है। (अल-मुजादलह: 1)

उसकी दृष्टि सब दृश्य वस्तुओं पर छाई हुई है, सो रात के अन्धकार में भी बंदों के काम उससे छिपे नहीं हैं, वो उनके सब कामों की घात में है।

क्योंकि सृष्टि उसी की रचना है सो हुक्म भी उसी का चलेगा। अल्लाह ने कहा:

﴿إِنِ ٱلْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ﴾

हुक्म अल्लाह के अलावा किसी का नहीं। (यूसुफ: 40)

उसके विधान, सीमाएं और कानून सबसे अच्छे हैं, उनसे अच्छा कोई फैसला नहीं।

﴿وَهُوَ خَيْرُ ٱلْحَـٰكِمِينَ﴾

और वह सबसे अच्छा न्यायाधीश है। (यूनुस: 109)

वह शासन करता है, उसके निर्णय को कोई टालने वाला नहीं।

﴿وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ أَحَدًا﴾

तुम्हारा प्रभु किसी पर अन्याय नहीं करता। (अल-कह्फ: 49)

उससे अधिक दयालु कोई नहीं, वह दयालुओं का दयालु है, बच्चे के प्रति दयालु माँ से ज़्यादा दयालु है, उसकी दया हर चीज़ को घेरे हुए है, उसके पास सौ दयाएं हैं, उस ने बस एक ही दया को धरती पर उतारा है, सारी प्राणी उसी एक के द्वारा आपस में दया करती है, और दया के निन्यानवे हिस्सों को उस ने अपने पास रोक रखा है।

वो उदार है, उससे बढ़ कर कोई उदार नहीं, वह अपनी रचना के लिए दान और उपकार पसंद करता है, उन्हें ऊपर से भी और नीचे से भी नवाज़ता रहता है, उसकी योग्यता महान है और उसके खजाने कभी खत्म नहीं होते:

﴿۞ قُلْ مَن يَرْزُقُكُم مِّنَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ﴾

कहो कौन आकाशों और धरती से, तुम्हें रोज़ी देता है? (सबा: 24)

उसका हाथ भरा हुआ है, खर्च करने से उसमें कोई कमी नहीं आती, "वो रात दिन लुटाने वाला है", नबी ﷺ ने फ़रमाया: "तुम्हारा कुछ अनुमान है कि अल्लाह ने आकाश और पृथ्वी के निर्माण के बाद से कितना ज़यादा खर्च किया है? उस के बावजूद उसके सीधे हाथ के खजाने में कोई कमी नहीं आई।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

वह बंदों की दुआओं का जवाब देता है, अल्लाह कहता है:

﴿وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِى عَنِّى فَإِنِّى قَرِيبٌ ۖ أُجِيبُ دَعْوَةَ ٱلدَّاعِ إِذَا دَعَانِ ۖ﴾

और जब तुमसे मेरे बन्दे मेरे सम्बन्ध में पूछें, तो मैं तो निकट ही हूँ, पुकारने वाले की पुकार का उत्तर देता हूँ, जब वह मुझे पुकारता है। (अल-बक़रह: 186)

ईश्वर के लिए किसी भी अवश्यकता को पूरा करना कोई बड़ी बात नहीं। यदि प्रथम से अंतिम तक और इंसान से जिन्न तक सारे बंदे एक जगह उठ खड़े हों और उससे मांग करें और वह उन में से हर एक को उसकी मांग के अनुसार प्रदान करदे तो उसके खज़ाने में उतनी ही कमी आएगी जितनी कमी समुद्र में सुई डालने से समुद्र में आती है।

उस महामहिम ने हर प्राणी की आजीविका का भार लिया है -चाहे वह मानव जाति से हो, जिन्न से हो, मुस्लिम हो या काफिर- अल्लाह ने कहा:

﴿وَمَا مِن دَآبَّةٍ فِى ٱلْأَرْضِ إِلَّا عَلَى ٱللَّهِ رِزْقُهَا﴾

धरती में चलने-फिरने वाला जो प्राणी भी है उसकी रोज़ी अल्लाह के ज़िम्मे है। (हूद: 6)

वह सबसे अच्छा आजीविका प्रदान करने वाला है, उस ने भलाई के द्वार खोल रखे हैं, उसी ने समुद्र को अधीन बनाया, नदियों को बहाया, आजीविका जारी की, अपने बंदों को बिना माँगे ही बहुत से उपकार दिए, और जो कुछ वे मांगते हैं वो भी दिया। वह अपने बंदों के समक्ष प्रशन भी प्रस्तुत करता है, सो हर रात को कहता है: "कौन है जो मुझ से माँगे और मैं उसे प्रदान करूँ?" (सही मुस्लिम) हर भलाई उसी की ओर से है:

﴿وَمَا بِكُم مِّن نِّعۡمَةٖ فَمِنَ ٱللَّهِۖ﴾

तुम्हारे पास जो भी नेमत (अनुग्रह) है वह अल्लाह ही की ओर से है। (अल-नह्ल: 53)

हर प्राणी को आजीविका पहुँचाता है, सो गर्भ में शिशु को, बिलों में चींटियों को, आकाश में पक्षियों को और जल की गहराईयों में मछलियों को भी आजीविका देता है:

﴿وَكَأَيِّن مِّن دَآبَّةٖ لَّا تَحۡمِلُ رِزۡقَهَا ٱللَّهُ يَرۡزُقُهَا وَإِيَّاكُمۡۚ﴾

कितने ही चलनेवाले जीवधारी हैं, जो अपनी रोज़ी उठाए नहीं फिरते, किन्तु अल्लाह ही उन्हें रोज़ी देता है और तुम्हें भी! (अल-अंकबूत: 60)

वह निकट और प्रत्युत्तर देनेवाला है, जो उस से न माँगे उस पर क्रोधित होता है, अपने पालनहार के सिवा किसी और से लोभ करने वाला वंचित है, कोई व्यक्ति कष्टदायक बात सुनकर उतना सब्र नहीं करता जितना अल्लाह करता है; वे ईश्वर के साथ साझीदार बनाते हैं, उसकी सन्तान होने की घोषणा भी करते हैं, फिर भी वह उन्हें क्षमा करता है और उनका भरण-पोषण करता रहता है।

उसने अपनी कृपा और उदारता से आज्ञाकारियों को (पुण्य कमाने की) शक्ति प्रदान की, शक्ति देने के बाद उन्हें उनके कर्मों का फल भी दिया, वह बहुत सराहने वाला है, थोड़े से कर्म पर ज़्यादा प्रतिफल देता है, और अधिक पर अत्याधिक देता है, उसके यहाँ एक पुण्य के लिए दस गुना से कई गुना तक अधिक प्रतिफल है, उसने स्वर्ग में अपने सेवकों के लिए वह आशीश तय्यार किया है जो ना तो किसी आँख ने देखा, ना किसी कान ने सुना और ना ही मनुष्य के दिल पर उसका खयाल गुज़रा है, वह इतना सब कुछ करने के बाद भी उन को प्रसन्न करने का प्रयास करेगा, उनसे पूछेगा: "क्या तुम संतुष्ट हो? वे (स्वर्ग-वासी) कहेंगे: हम क्यों न ख़ुश हों जबकि तूने हमें वह दिया है, जो अपनी सृष्टि में से किसी को नहीं दिया। ईश्वर कहेगा: मैं तुम्हें इससे भी अच्छी चीज़ दूँगा, वे कहेंगे: भला इससे अच्छा भी कुछ हो सकता है! ईश्वर कहेगा: में अपनी प्रसन्नता तुम्हें देता हूँ, इसके बाद मैं तुमसे कभी क्रोधित नहीं होऊँगा।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

वह आत्मनिर्भर और दृढ़ है, जीव अपनी आवश्यकताओं में उसी पर निर्भर हैं, वह एक संपूर्ण स्वामी है, जिसके अंदर खोखलापन[1] नहीं:

﴿لَمۡ يَلِدۡ وَلَمۡ يُولَدۡ ۝ وَلَمۡ يَكُن لَّهُۥ كُفُوًا أَحَدُۢ﴾

न उसने किसी को जन्म दिया और ना उसे किसी ने जन्म दिया है, और न ही उसका कोई समकक्ष है। (अल-इख़लास: 3-4)

﴿مَا ٱتَّخَذَ صَٰحِبَةً وَلَا وَلَدًا﴾

उसने अपने लिए न तो कोई पत्नी बनाई और न सन्तान। (अल-जिन्न: 3)

﴿وَلَمۡ يَكُن لَّهُۥ شَرِيكٌ فِي ٱلۡمُلۡكِ وَلَمۡ يَكُن لَّهُۥ وَلِيٌّ مِّنَ ٱلذُّلِّۖ﴾

और न बादशाही में उसका कोई सहभागी है और न ऐसा ही है कि वह दीन-हीन हो जिसके कारण बचाव के लिए उसका कोई सहायक मित्र हो। (अल इसरा: 111)

﴿وَمَا كَانَ مَعَهُۥ مِنۡ إِلَٰهٍۚ﴾

और न उसके साथ कोई अन्य पूज्य-प्रभु है। (अल-मूमिनून: 91)

उसकी कृपा के बिना उसकी आज्ञाकारी नहीं हो सकती, उसके ज्ञान में आए बिना अवज्ञा भी नहीं हो सकती, वह अपनी सृष्टि से स्वतंत्र और आत्मनिर्भर है, (ब्रह्माण्ड में) जो कुछ भी है उसी के द्वारा स्थापित है और वे सब उसके मोहताज हैं।

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ أَنتُمُ ٱلۡفُقَرَآءُ إِلَى ٱللَّهِۖ وَٱللَّهُ هُوَ ٱلۡغَنِيُّ ٱلۡحَمِيدُ﴾

ऐ लोगो! तुम्ही अल्लाह के मुहताज हो और अल्लाह तो निस्पृह, स्वप्रशंसित है। (फ़ातिर: 15)

आज्ञाकारी की आज्ञाकारिता से उसे कोई लाभ नहीं होता, इसी प्रकार अवज्ञाकारी की अवज्ञा से उसे नुकसान भी नहीं होता। अगर समस्त जिन्न एवं मनुष्य सबसे बड़े परहेज़गार आदमी के हृदय के अनुसार हो जाएं तो ईश्वर के राजस्व में कुछ भी बढ़ोतरी नहीं होगी, इसी प्रकार अगर समस्त जिन्न एवं मनुष्य सबसे बड़े अनैतिक व्यक्ति के हृदय के अनुसार हो जाएं तो भी ईश्वर के राजस्व में कुछ भी कमी नहीं होगी, ना बंदे ईश्वर को लाभ देने की स्थिति में

(1) अर्थात: उसे खाने पीने की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि खान पान मोहताज होने का प्रतीक होता है।

पहुँच सकते हैं कि उसे लाभ पहुँचाएं और ना ही हानि पहुँचाने की स्थिति में पहुँच सकते हैं कि उसे हानि पहुँचाएं।

वो जीवित और आत्मस्थापित है, न उसे नींद आती है ना ऊंघ, इंसाफ़ के तराज़ू को झुकाता और उठाता है, "उसके पास रात के कर्म दिन के कर्म से पहले उठाए जाते हैं और दिन के कर्म रात के कर्म से पहले उठाए जाते हैं, उसका पर्दा नूर (प्रकाश) है, अगर वो पर्दा उठा दे तो उसके चेहरे की चमक समस्त चीज़ों को, उसकी निगाह जहाँ तक पहुँचती है वहाँ तक जलाकर भस्म कर दे।"

वह महान, पराक्रमी और बलवान है, गर्व उसका वस्त्र है और महानता उसकी चादर, वो शक्तिशाली है, उसका कोई सहायक नहीं, सर्वोच्च और अद्वितीय है, उसके चेहरे को छोड़कर संसार की हर चीज़ नाशवान है।

उसने हर चीज़ को घेर रखा है, उसे पा लेने की क्षमता किसी में नहीं:

﴿لَّا تُدۡرِكُهُ ٱلۡأَبۡصَٰرُ وَهُوَ يُدۡرِكُ ٱلۡأَبۡصَٰرَۖ﴾

निगाहें उसे नहीं पा सकतीं, बल्कि वही निगाहों को पा लेता है। (अल-अनआम: 103)

﴿وَٱلۡأَرۡضُ جَمِيعٗا قَبۡضَتُهُۥ يَوۡمَ ٱلۡقِيَٰمَةِ وَٱلسَّمَٰوَٰتُ مَطۡوِيَّٰتُۢ بِيَمِينِهِۦۚ﴾

और क़यामत के दिन सारी की सारी धरती उसकी मुट्ठी में होगी और आकाश उसके दाएँ हाथ में लिपटे हुए होंगे। (अल-ज़ुमर: 67)

उसको किसी प्राणी के यहाँ सिफारिशी नहीं बनाया जा सकता, और उसकी अनुमति के बिना कोई सिफारिश कर भी नहीं सकता। उसकी कुर्सी (पैरों के स्थान) ने आकाश और पृथ्वी को घेर रखा है, "कुर्सी अर्श में इस तरह है जैसे कोई कड़ा विशाल मैदान में डाल दिया गया हो।"

अर्श (सिंहासन) सभी सृष्टियों में सबसे बड़ा है, उसे ऐसे फ़रिश्ते थामे हुए हैं जिन के कान की लोब से कंधे तक का स्थान सात सौ वर्ष की दूरी के बराबर है।

अल्लाह अपने अर्श के ऊपर है -जैसा कि महामहिम के अनुरूप है- वह सिंहासन और उससे निचली वस्तुओं का मोहताज नहीं:

﴿تَكَادُ ٱلسَّمَٰوَٰتُ يَتَفَطَّرۡنَ مِن فَوۡقِهِنَّۚ﴾

निकट है कि आकाश ऊपर की ओर से फट पड़ें। (मरयम: 90)

अर्थात: अल्लाह की महानता के डर से आकाश फट सकते हैं। जब वह बोल कर कोई संदेश देता है तो आकाश गंभीर रूप से कांपने लगता है, आकाश वाले मूर्च्छित हो जाते हैं और अल्लाह के लिए सजदे में गिर पड़ते हैं।

वह सर्वप्रथम है, उससे पहले कुछ भी नहीं, वो सनातन है, उसके बाद कुछ भी नहीं, वो ऊंचा है उसके ऊपर कुछ भी नहीं, वो भीतर है उस से भीतर कुछ भी नहीं, सब कुछ करने में सक्षम है, वह सर्वशक्तिमान है, सारी शक्तियां उसी की हैं, आकाश और धरती में कोई उसे विवश नहीं कर सकता, उसका मामला पलक झपकने जैसा है, बल्कि उससे भी तीव्र। उस के पास ऐसी सेनाएं हैं जिन्हें केवल वही जानता है। जब दुनिया का विषय समाप्त हो जाएगा तो वो पृथ्वी को हिला डालेगा, पहाड़ों को चला देगा और उन्हें टुकड़े टुकड़े कर देगा, एक फूंक से सृष्टि घबरा उठेगी, दूसरी फूंक से मूर्छित हो जाएगी और तीसरी से पुनरूत्थान कर जमा हो जाएगी।

वह पवित्र और महामहिम है जो हर दोष और कमी से पाक है, उसके पास उच्चतम पूर्णता है, सर्वोच्च प्रज्वलित सुन्दरता है, ना कोई उसके समान है ना उस जैसा कोई है, ना उसका समनाम है ना उदाहरण।

﴿ لَيۡسَ كَمِثۡلِهِۦ شَيۡءٞۖ وَهُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلۡبَصِيرُ ﴾

उसके सदृश कोई चीज़ नहीं। वही सबकुछ सुनता, देखता है। (अल-शूरा: 11)

हे मुस्लिमो!

जिस प्रभु के गुण और कार्य ये हैं क्या हमें ऐसे प्रभु से प्रेम, उसकी स्तुति और प्रशंसा और केवल उसी के लिए आराधना नहीं करनी चाहिए?

जो कोई भी अल्लाह को जानता है वह उसके निकट आता है, उस के आगे झुक कर स्वयं को गिरा देता है, उस से परिचित और संतुष्ट हो जाता है, उसी से प्रतिफल की आशा करता है, उसकी सज़ा से डरता है, अपनी ज़रूरतों को उसी के सामने प्रस्तुत करता है और उसी पर भरोसा रखता है।

जो कोई ईश्वर की स्तुति करता और अधिक से अधिक उसकी प्रशंसा करता है वह ऊंचा हो जाता है, क्योंकि स्तुति जितनी अल्लाह को प्रिय है उतनी किसी को भी प्रिय नहीं, इसी कारण वह स्वयं की स्तुति करता है। जो ईश्वर से प्रेम करता है और उसकी पूजा करता है; ईश्वर उससे प्रेम करता है, उससे प्रसन्न होता और उसे स्वर्ग में प्रवेश देता है।

मैं शापित शैतान से अल्लाह की पनाह में आता हूँ

﴿إِنَّ ٱللَّهَ رَبِّي وَرَبُّكُمۡ فَٱعۡبُدُوهُۚ هَٰذَا صِرَٰطٞ مُّسۡتَقِيمٞ﴾

"निस्संदेह अल्लाह मेरा भी रब है और तुम्हारा भी, अतः तुम उसी की बंदगी करो। यही सीधा मार्ग है।" (आल इमरान: 51)

अल्लाह मुझे और आपको पवित्र कुरान के प्रति आशीर्वाद दे...

दूसरा ख़ुतबा

अल्लाह की स्तुति है उसके एहसान पर, उसका धन्यवाद है उस की तोफ़ीक़ और कृपा पर, मैं अल्लाह की शान कों महान मानते हुए गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, उन पर, उनके परिवार पर और उनके साथियों पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद बना रहे।

हे मुस्लिमो!

जो अल्लाह के साथ सृष्टि में से किसी को साझी बनाता है वह संसार के प्रभु को कम आंकता है, उसे प्रभु के प्रति ग़लत भ्रम है, ऐसा करके वह दूसरों को ईश्वर के बराबर कर देता है।

शिर्क सभी कार्यों (पुण्य) को तबाह कर देता है, ऐसे अपराधी को अल्लाह माफ नहीं करेगा और ना उसे स्वर्ग में प्रवेश देगा, वह अनंतकाल के लिए आग में रहेगा। शिर्क फितरत (मानव स्वभाव) में आने वाला एक महान बदलाव और धरती का सबसे बड़ा बिगाड़ है, यही हर संकट की जड़ और हर रोग का कुंड है, इसकी हानि बहुत बड़ी है और इसका जोखिम भयावह है।

पापों का अपशगुन बहुत बड़ा होता है, यदि यह बंदे के भीतर एकत्र हो जाएं तो उसका अंत कर देते हैं, यह व्यक्ति और उसके हृदय के बीच रुकावट बन जाते हैं। दृष्टि में पाप जितना छोटा होता है अल्लाह के यहाँ वह उतना ही बड़ा होता है, तो पाप के छोटेपन पर मत जाओ, बल्कि उस ईश्वर की महिमा को देखो जिसकी अवज्ञाकारी तुम कर रहे हो।

फिर जान लो कि अल्लाह ने आपको अपने प्यारे नबी पर शांति व सलाम भेजने का आदेश दिया है...

बंदे का अपने रब को पहचानना(1)

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, हम उसकी प्रशंसा करते हैं, उसी से सहायता और अपने पापों की क्षमा मांगते हैं, हम अपने प्राण और कर्म की बुराइयों से उसकी शरण चाहते हैं। वह जिसे सत्य मार्ग पर चला दे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे वह भटका दे उसे कोई सत्य मार्ग पर चला नहीं सकता, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह एक है, उसका कोई साझी नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, सलाम व शांति हो उन पर, उनके परिवार और उनके पवित्र साथियों पर।

अल्लाह की प्रशंसा और नबी पर दरूद के बाद:

ऐ अल्लाह के बंदो! अल्लाह से डरो जैसे की उससे डरने का हक है, क्योंकि सुख मार्गदर्शन के पीछे चलने में है और दुख ख्वाहिश का साथ देने में है।

हे मुस्लिमो!

अल्लाह ने सृष्टि की रचना की ताकि उसके प्रति आज्ञाकारिता और समर्पण हो, पूर्ण प्रसन्नता अल्लाह को जानने और उस पर विश्वास करने में है, बंदे का अपने प्रभु को पहचानना; वह पहला सिद्धांत है जिसका ज्ञान मनुष्य के लिए अनिवार्य है, क़ब्र में सबसे पहले इसी के बारे में प्रशन किया जाएगा। अल्लाह ने संसार की रचना गैर-अस्तित्व से की, मनुष्यों के (जीवन को) अपनी कृपा से भर दिया और उनकी आजीविका का दायित्व लिया:

﴿وَمَا مِن دَآبَّةٖ فِي ٱلۡأَرۡضِ إِلَّا عَلَى ٱللَّهِ رِزۡقُهَا﴾

धरती में चलने-फिरनेवाला जो प्राणी भी है उसकी रोज़ी अल्लाह के ज़िम्मे है। (हूद: 6)

संसारों को अस्तित्व दिया जबकि इससे पूर्व वो कुछ भी नहीं थे:

﴿هَلۡ أَتَىٰ عَلَى ٱلۡإِنسَٰنِ حِينٞ مِّنَ ٱلدَّهۡرِ لَمۡ يَكُن شَيۡـٔٗا مَّذۡكُورًا﴾

(1) ये ख़ुतबा मस्जिद-ए-नबवी में जुमे के दिन 15/02/1426 हिजरी को दिया गया।

मनुष्य पर काल-खंड का ऐसा समय भी बीता है कि वह कोई ऐसी चीज़ न था जिसका उल्लेख किया जाता। (अल-इंसान: 1)

वह ऐसा रब है जो रचना में, आजीविका देने में और योजना बनाने में अकेला है:

﴿أَلَا لَهُ ٱلۡخَلۡقُ وَٱلۡأَمۡرُۗ تَبَارَكَ ٱللَّهُ رَبُّ ٱلۡعَٰلَمِينَ﴾

सुनो, उसी की सृष्टि है और उसी का आदेश है। अल्लाह सारे संसार का रब, बड़ी बरकतवाला है। (अल-आराफ़: 54)

वो एकता में अद्वितीय, महानता और शक्ति के साथ संपन्न है, सभी मामलों की बागडोर उसके हाथों में है, वह मज़बूत और शक्तिशाली है, अपने बंदों का प्रभु है, वह इस बात पर असहमत है कि उसे छोड़ कर किसी और के लिए पूजा की जाए:

﴿إِن تَكۡفُرُواْ فَإِنَّ ٱللَّهَ غَنِيٌّ عَنكُمۡۖ وَلَا يَرۡضَىٰ لِعِبَادِهِ ٱلۡكُفۡرَۖ وَإِن تَشۡكُرُواْ يَرۡضَهُ لَكُمۡۗ﴾

यदि तुम इंकार करोगे तो अल्लाह तुमसे निस्पृह है। यद्यपि वह अपने बन्दों के लिए इंकार को पसन्द नहीं करता, किन्तु यदि तुम कृतज्ञता दिखाओगे, तो वह उसे तुम्हारे लिए पसंद करता है। (अल-ज़ुमर: 7)

अल्लाह ने प्रत्येक प्राणी में अपनी एकता का संकेत देने वाला प्रमाण खड़ा किया है, ताकि अपने प्रभु के प्रति हृदय का लगाव बढ़े, दो लगातार प्रमाण हमें ईश्वर की एकता की याद दिलाते रहते हैं, एक रात जो ढकती है और एक दिन जो (प्रकाशित) प्रकट होता है, प्रत्येक दूसरे को तेज़ी से पकड़ना चाहता है:

﴿يُغۡشِي ٱلَّيۡلَ ٱلنَّهَارَ يَطۡلُبُهُۥ حَثِيثٗا﴾

वह रात को दिन पर ढांकता है जो तेजी से उसका पीछा करने में सक्रिय है। (अल-आराफ़: 54)

सूर्य और चंद्रमा बुद्धिमानों को चकाचौंध करने वाले एक निर्धारित व निश्चित मार्ग में दौड़ते हैं, एक चमकता है तो दूसरा अस्त हो जाता है, बिल्कुल सटीक चाल है, कोई आगे या पीछे नहीं होता:

﴿لَا ٱلشَّمۡسُ يَنۢبَغِي لَهَآ أَن تُدۡرِكَ ٱلۡقَمَرَ وَلَا ٱلَّيۡلُ سَابِقُ ٱلنَّهَارِۚ وَكُلّٞ فِي فَلَكٖ يَسۡبَحُونَ﴾

न सूर्य ही से हो सकता है कि चाँद को जा पकड़े और न रात दिन से आगे बढ़ सकती है। सब एक-एक कक्षा में तैर रहे हैं। (यासीन: 40)

हमें ढोती भूमि और हमें छाया देता आकाश, दोनों ही हमारे लिए अपरिहार्य हैं, (यह सब) शक्तिशाली परिपूर्ण निर्माण, और बिना पूर्व उदाहरण के रचना करने वाले अल्लाह का प्रबंधन है:

﴿هَٰذَا خَلْقُ ٱللَّهِ فَأَرُونِى مَاذَا خَلَقَ ٱلَّذِينَ مِن دُونِهِۦ﴾

यह तो अल्लाह की संरचना है। अब तनिक मुझे दिखाओं कि उससे हटकर जो दूसरे (तुम्हारे ठहराए हुए प्रुभ) हैं उन्होंने क्या पैदा किया है? (लुक़मान: 11)

एक मुस्लिम इस महान ब्रह्माण्ड के शासक का दास होने पर गौरवान्वित होता है:

﴿قُلْ إِنَّنِى هَدَىٰنِى رَبِّىٓ إِلَىٰ صِرَٰطٍ مُّسْتَقِيمٍ﴾

कहो कि मेरे रब ने मुझे सीधा मार्ग दिखा दिया है। (अल-अनआम: 161)

वह केवल इस ब्रह्माण्ड के महामहिम रब की पूजा करता है, उसे छोड़ कर दूसरे के लिए किसी भी प्रकार की इबादत नहीं करता, संकट के समय उसी की शरण लेता है और प्रत्यक्ष और गुप्त में केवल उसी से डरता है:

﴿وَإِن يَمْسَسْكَ ٱللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُۥٓ إِلَّا هُوَ﴾

यदि अल्लाह तुम्हें कोई हानि पहुँचाए, तो उसके सिवा उसे दूर करनेवाला कोई नहीं। (यूनुस: 107)

इसलिए एक मुस्लिम इस बात से नहीं डरता कि मरे हुए उसे हानि पहुँचाएंगे, न उनसे भलाई की आशा रखता है।

केवल उसी से डरने से बुद्धि में वृद्धि होती है, मन को शांति और आत्मा को सुकून मिलता है, जो अपने रब से डरता है वह किसी से नहीं डरता, बल्कि वह हृदय का दृढ़, अंगों का शालीन और एक ऐसी आत्मा से धन्य हो जाता है जो ईश्वर के अलावा किसी से मानूस (परिचित) नहीं होती:

﴿فَلَا تَخَافُوهُمْ وَخَافُونِ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ﴾

अतः तुम उनसे न डरो बल्कि मुझी से डरो, यदि तुम ईमानवाले हो। (आल इमरान: 175)

श्री अबू-सुलैमान दारानी (उन पर अल्लाह की दया हो) कहते हैं: "मन से जब भी अल्लाह का डर निकल जाता है वो खराब हो जाता है।"

ईश्वर का सबसे करीबी बंदा वह है जो उससे सबसे अधिक डरता है, नबी ﷺ कहते हैं: "वास्तव में, मैं अल्लाह का सबसे अधिक जानकार और उससे सबसे अधिक डरने वाला हूँ" (सही बुखारी व सही मुस्लिम) यह ईमान के दायित्वों व आवश्यकताओं में से एक है। और जो केवल अपने प्रभु से ही डरता है उसके लिए स्वर्ग के द्वार खोल दिए जाते हैं:

﴿وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِۦ جَنَّتَانِ﴾

और जो अपने रब के सामने खड़े होने से डरता है, उसके लिए दो स्वर्ग हैं। (अल-रहमान: 46)

विद्वान कहते हैं: "अल्लाह अपने बंदे के साथ दो भय नहीं जोड़ता; जो दुनिया में उससे डरता है, क़यामत के दिन वो अमन में रहेगा और जो दुनिया में उसके डर के बिना रहेगा (अर्थात: ग़लत काम करेगा) उसे आख़िरत में भय में घिरना पड़ेगा।" तो याद रखो कि रब तुम्हें देख रहा है और अपने निर्माता से डरते रहो, तुम अल्लाह के निकट सृष्टि में सबसे धन्य हो जाओगे।

वांछित की पूर्ति या अनैच्छिक से सुरक्षा के लिए अल्लाह के अलावा किसी और से आशा न करो, अर्थात किसी कमी को दूर करने, किसी बीमारी से उबरने, आजीविका माँगने, या कल्याण लाने के लिए अल्लाह से ही उम्मीद रखो, किसी ओर से नहीं; क्योंकि सृष्टि स्वभाविक रूप से दुर्बल है, वो स्वयं के लिए लाभ लाने और खुद से नुकसान दूर करने में असमर्थ हैं, तो फिर दूसरों के लिए तो अधिक असमर्थ होंगे, कोई भी प्राणी यदि किसी सृष्टि से आशा बाँधता है तो उसे निराशा के सिवा कुछ हाथ नहीं आएगा, इसलिए अपनी आशाओं और उम्मीदों को अल्लाह के अलावा अन्य के साथ ना बाँधो; क्यूंकि इससे केवल शून्य ही मिलेगा और भिक्षा वाला अपमान अलग होगा। अल्लाह की कृपा, एहसान और दान की आशा करो; क्यूंकि जो अल्लाह के पास है उसकी आशा करना इबादत (पूजा) है, अल्लाह के लिए दिल को झुका देना आत्म-सम्मान है, इसी में मर्तबा बढ़ता है और उम्मीद की प्राप्ति होती है।

अपने मामले निर्माता को सौंपने में प्राण को आराम मिलता है, निर्माता से बंदे का रिश्ता तब मज़बूत हो जाता है जब वो ये याद रखता है कि अल्लाह प्राण की स्थिति के बारे में सब कुछ जानने वाला, इसके प्रति दयालु और इसकी परेशानी हटाने में सक्षम है। तो फिर क्यूँ ऐसी सृष्टि से बँधना जो हानि को दूर करने में बेबस है और कुछ भी देने में कंजूस है? जबकि रब ही सब कामों के लिए काफ़ी है; यदि आवश्यकताओं को उसके हवाले कर दो और अपने मामलों की बागडोर उसे सौंप दो तो वह उनके लिए जिम्मेदार बन जाता है।

﴿وَمَن يَتَوَكَّلْ عَلَى ٱللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُۥٓ﴾

जो अल्लाह पर भरोसा करता है तो वह उसके लिए काफ़ी हो जाता है। (अल-तलाक़: 3)

धन्य है वो व्यक्ति जो अल्लाह की दया की इच्छा रखता है, उसकी सजा से भयभीत होता है और अपने स्वामी की पूजा में विनम्र और झुका होता है, इन्ही आलोकित स्तुतियों से नबियों के घर सुसज्जित होते थे, महामहिम अल्लाह ने ज़करिय्या (उन पर शांति हो) और उनके परिवार के बारे में बताया:

﴿إِنَّهُمْ كَانُوا۟ يُسَـٰرِعُونَ فِى ٱلْخَيْرَٰتِ وَيَدْعُونَنَا رَغَبًا وَرَهَبًا ۖ وَكَانُوا۟ لَنَا خَـٰشِعِينَ﴾

निश्चय ही वे नेकी के कामों में एक-दूसरे से आगे बढ़ने का प्रयास करते थे, हमें ईप्सा (चाह) और भय के साथ पुकारते थे और हमारे आगे दबे रहते थे। (अल-अंबिया: 90)

सारे नबी अल्लाह के पास जो है उसकी चाह में पहल करने वाले होते थे; महामहिम ईश्वर ने अपने नबी मुहम्मद ﷺ से कहा:

﴿وَإِلَىٰ رَبِّكَ فَٱرْغَب﴾

और अपने रब से लौ लगाओ। (अल-शर्ह: 8)

यह चाहत बंदे के प्रति पापों की मात्रा अनुसार घट जाती है और विश्वास में वृद्धि के समय बढ़ जाती है। श्री इब्नुल-कय्यिम (उन पर अल्लाह की दया हो) ने कहा: "यदि अल्लाह अपने बंदे के लिए अच्छा चाहता है तो उसे शक्ति देता है कि वह अपने रब के प्रति इच्छा और विस्मय में अपनी पूरी क्षमता और पूरी कोशिश झोंक दे; वे दोनों (इच्छा और विस्मय) सफलता की सामग्री हैं, क्यूंकि दिल में इच्छा और भय जितना स्थापित होता है उतनी ही सफलता मिलती है।"

सृष्टि का डर अपमान और निरादर है, जो भी अपने निर्माता से डरता है वह प्रिय बन कर जीता है, अपने जीवन में खुश रहता है और अपनी अंतर्दृष्टि को प्रबुद्ध करके सीख प्राप्त करता है, महामहिम ईश्वर ने कहा:

﴿سَيَذَّكَّرُ مَن يَخْشَىٰ﴾

जो डरता है वह बहुत जल्द सीख प्राप्त कर लेगा। (अल-आला: 10)

ऐसा व्यक्ति उपदेशों और पाठों से सीख प्राप्त करता है, महामहिम ईश्वर ने कहा:

﴿إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبۡرَةٗ لِّمَن يَخۡشَىٰٓ﴾

निश्चित रूप से इसमें डरने वाले के लिए एक सीख है। (अल-नाज़िआत: 26)

अल्लाह की पुस्तक उस व्यक्ति के लिए सुख का माध्यम और अनुस्मृति बन जाती है:

﴿مَآ أَنزَلۡنَا عَلَيۡكَ ٱلۡقُرۡءَانَ لِتَشۡقَىٰٓ * إِلَّا تَذۡكِرَةٗ لِّمَن يَخۡشَىٰ﴾

हमने यह कुरान तुम पर इसलिए नहीं उतारा कि तुम दुख में पड़ जाओ यह तो बस डरने वाले के लिए अनुस्मृति ही है। (ताहा: 2-3)

यह उसके लिए अल्लाह की ओर से क्षमा और प्रचुर अनुदान का कारण बनता है:

﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ يَخۡشَوۡنَ رَبَّهُم بِٱلۡغَيۡبِ لَهُم مَّغۡفِرَةٞ وَأَجۡرٞ كَبِيرٞ﴾

जो लोग परोक्ष में रहते हुए अपने रब से डरते हैं उनके लिए क्षमा और बड़ा बदला है। (अल -मुल्क: 12)

अतः अपने रब को अपनी दृष्टि के सामने रखो, उसकी योजना और दंड से स्वयं को सुरक्षित ना समझो, जीविका के रुक जाने, उपचार में देरी या दुख के समाधान के विषय में अल्लाह के सिवा किसी से मत डरो, महामहिम ईश्वर ने कहा:

﴿فَلَا تَخۡشَوۡهُمۡ وَٱخۡشَوۡنِي وَلِأُتِمَّ نِعۡمَتِي عَلَيۡكُمۡ وَلَعَلَّكُمۡ تَهۡتَدُونَ﴾

तुम उन से ना डरो मुझसे डरो, ताकि मैं तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दूँ और तुम सीधे रास्ते पर चलने लगो। (अल-बक़रह: 150)

बंदा अपने आप में कमज़ोर और अपने ईश्वर सर्वशक्तिमान अल्लाह की मदद का मोहताज होता है, अत: वो उस सर्वश्रेष्ठ अल्लाह से मदद मांगकर ही स्वयं को सृष्टि के आगे हाथ फेलाने से मुक्त कर सकता है। जो अपनी आवश्यकता प्राप्त करने की कोशिश करता है और उस की प्राप्ति में वो अल्लाह से मोहताज बनकर मदद नहीं माँगता तो उसके सामने रास्ते बंद कर दिए जाते हैं, और कमाई के सारे रास्ते कठिन हो जाते हैं। नबी ﷺ ने अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से कहा था: "हे लड़के! मैं तुम्हें वचन सिखा रहा हूँ; तुम अल्लाह (के आदेशों) की रक्षा करो अल्लाह तुम्हारी रक्षा करेगा, अल्लाह (के आदेशों) की रक्षा करो तुम उसे अपने सामने पाओगे, यदि मांगो तो अल्लाह से मांगो, यदि मदद चाहो तो अल्लाह से मदद चाहो।" (सुनन तिर्मिज़ी)

अल्लाह से मदद माँगने पर ही धर्म की निर्भरता है:

﴿إِيَّاكَ نَعۡبُدُ وَإِيَّاكَ نَسۡتَعِينُ﴾

हम केवल तेरी ही इबादत करते हैं और तुझी से मदद मांगते हैं। (अल-फातिहा: 4)

नबियों ने अपनी कौमों को इसी का आदेश दिया:

﴿قَالَ مُوسَىٰ لِقَوۡمِهِ ٱسۡتَعِينُواْ بِٱللَّهِ وَٱصۡبِرُوٓاْۖ﴾

मूसा ने अपनी कोम से कहा: अल्लाह से मदद मांगो और धैर्य रखो। (अल-आराफ़: 128)

महान इस्लामी विद्वान इब्ने-तैमियह कहते हैं: "केवल अल्लाह की पूजा करना और उसी से मदद माँगना ही धर्म है।"

बंदे की निस्पृहता रब से रिश्ता मज़बूत करने में है, ये अपने बंदों पर ईश्वर की कृपा ही है कि जो उससे जुड़ा रहता है वह उसकी सहायता करता है, अल्लाह की आज्ञा पालन करने और उससे सहायता माँगने से जीविका आसान हो जाती है और उस पर भरोसे और निर्भरता के द्वारा वो बढ़ती जाती है, सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा:

﴿وَمَن يَتَّقِ ٱللَّهَ يَجۡعَل لَّهُۥ مَخۡرَجٗا * وَيَرۡزُقۡهُ مِنۡ حَيۡثُ لَا يَحۡتَسِبُۚ﴾

जो अल्लाह से डरता है अल्लाह उसके लिए रास्ते निकाल देता है और उसे ऐसी जगह से जीविका प्रदान करता है जहाँ से उसका अनुमान भी नहीं होता। (अल-तलाक़: 3)

जीवन संकट और अनैच्छिक चीजों से भरा हुआ है, महामहिम ईश्वर कहता है:

﴿لَقَدۡ خَلَقۡنَا ٱلۡإِنسَٰنَ فِي كَبَدٍ﴾

निस्संदेह हमने मनुष्य को कष्ट के साथ पैदा किया है। (अल-बलद: 4)

जिन और इंसान में हर मनुष्य का एक दुश्मन होता है, और इन दुश्मनों में सबसे प्रमुख इबलीस है (उस पर अल्लाह की लानत हो), महामहिम अल्लाह ने कहा:

﴿إِنَّ ٱلشَّيۡطَٰنَ لَكُمۡ عَدُوّٞ فَٱتَّخِذُوهُ عَدُوًّاۚ﴾

वास्तव में, शैतान तुम्हारा दुश्मन है, इसलिए तुम भी उसे दुश्मन के रूप में ही देखो। (फ़ातिर: 6)

बुराई से बचाव के लिए इंसान को अल्लाह की पनाह और उसकी सीमाओं में शरण लेनी ही पड़ेगी, क्योंकि अल्लाह के अंदर शक्ति और पराक्रम की विशेषता है; अत: जो उसकी पनाह में रहेगा उसे कभी कोई आहत नहीं कर सकेगा और कारण होते हुए भी नुकसान उस से दूर रहेगा। नबी ﷺ ने कहा: "जो किसी स्थान में उतरे फिर कहे: मैं अल्लाह की मखलूक़ की बुराइयों से उसके पूर्ण शब्दों की शरण चाहता हूँ, तो जब तक वह उस स्थान को नहीं छोड़ेगा तब तक उसे कुछ भी नुकसान नहीं होगा।" (सही मुस्लिम) श्री कुर्तुबी (उन पर

अल्लाह की दया हो) ने कहा: ‘‘जब से मैंने यह खबर सुनी है, मैंने इस पर अमल किया है; जब तक मैंने इसे छोड़ न दिया तब तक किसी चीज़ ने मुझे नुकसान नहीं पहुँचाया, फिर यूँ हुआ कि रात के समय महदियह स्थान पर एक बिच्छू ने मुझे डंक मार दिया, तब मुझे आभास हुआ कि मैं इन शब्दों के द्वारा रब की शरण लेना भूल गया था।"

प्राणी हानि का सामना करती रहती है, उसका जीवन तब तक सुखी नहीं हो सकता जब तक कि वो अल्लाह को मज़बूती से न पकड़ ले और उसकी शरण न लेले, इसलिए कि नफा-नुकसान अल्लाह के हाथ में है, जो भी तुम्हें नुकसान पहुंचाना चाहता है अल्लाह की मर्ज़ी के बिना उसकी आरज़ू पूरी नहीं हो सकती; नबी ﷺ ने कहा: "और जान लो कि सारा समुदाय तुम्हें कुछ नुकसान पहुंचाने हेतु इकट्ठा हो जाए तो वो तुम्हें उतना ही नुकसान पहुंचा सकता है जितना अल्लाह ने तुम्हारे विरुद्ध लिखा होगा।" (सुनन तिरमिज़ी)

अल्लाह ने अपने नबी ﷺ को आदेश दिया है कि वह समस्त सृष्टि, अंधेरे और ईर्ष्यालु की बुराई से सुबह के रचेता अल्लाह की शरण लें, क्यूंकि जो अल्लाह ब्रह्माण्ड से रात के अंधेरे को दूर करने में सक्षम है; वह शरणार्थी से वह सब भी दूर करने में सक्षम होगा जिससे शरणार्थी भयभीत होता और डरता है। जो हर मामले में अल्लाह की शरण लेता है वह दुष्ट लोगों और षडयंत्रकारियों से एक मज़बूत किले में (सुरक्षित) हो जाता है।

विपत्ति में हमारे रब के सिवा कोई पनाह नहीं है, उसके सिवा हमारे लिए कोई शरण नहीं है, अल्लाह की पनाह और शरण माँगने वाला सबसे विशिष्ट प्रकार की दुआ का सहारा लेता है, विपत्ति और साज़िशों में घिरने पर महान रब की मदद माँगना नबियों की पद्धति है। महामहिम ईश्वर ने कहा:

﴿إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ أَنِّي مُمِدُّكُم بِأَلْفٍ مِّنَ الْمَلَائِكَةِ مُرْدِفِينَ﴾

"जब तुमने अपने प्रभु से मदद मांगी और उसने तुम्हें उत्तर दिया: "मैं एक दूसरे के पीछे एक हज़ार फरिश्तों के साथ तुम्हारी सहायता करूंगा।" (अल-अनफाल: 9)

महामहिम ने यह भी कहा:

﴿أَمَّن يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ﴾

"संकट में घिरे व्यक्ति (की पुकार) का, जब वह पुकारता है, कौन जवाब देता है?" (अल नम्ल: 62)

जो मरे हुओं को पुकारता है, उसकी पुकार नहीं सुनी जाती, उसकी ज़रूरतें उठाई नहीं जातीं, महामहिम अल्लाह ने कहा:

﴿وَٱلَّذِينَ تَدۡعُونَ مِن دُونِهِۦ مَا يَمۡلِكُونَ مِن قِطۡمِيرٍ ۝ إِن تَدۡعُوهُمۡ لَا يَسۡمَعُواْ دُعَآءَكُمۡ وَلَوۡ سَمِعُواْ مَا ٱسۡتَجَابُواْ لَكُمۡۖ﴾

अल्लाह के अतिरिक्त जिनको तुम पुकारते हो वह खजूर की गुठली की झिल्ली के भी मालिक नहीं हैं, अगर तुम उन्हें पुकारोगे तो वह तुम्हारी याचना नहीं सुन सकते, अगर सुन भी लें तो तुम्हारी याचना का जवाब नहीं दे सकते। (फ़ातिर: 13-14)

यदि तुम पर कोई विपत्ति आ पड़े और संकट बहुत बढ़ जाए तो परोक्ष के ज्ञाता अल्लाह से सहायता मांगो:

﴿إِنَّمَآ أَمۡرُهُۥٓ إِذَآ أَرَادَ شَيۡـًٔا أَن يَقُولَ لَهُۥ كُن فَيَكُونُ﴾

उसका मामला तो यह है कि जब वह किसी चीज़ की इच्छा करता है तो वह कहता है: "हो जा" तो वह चीज़ हो जाती है। (यासीन: 82)

बंदों के कार्यों (इबादत) द्वारा ईश्वर की एकता को मानना विश्वास की पवित्रता, समाज की व्याप्त खुशी और आत्मा की शांति का कारण है।

मैं शापित शैतान से अल्लाह की पनाह में आता हूँ

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ ٱعۡبُدُواْ رَبَّكُمُ ٱلَّذِي خَلَقَكُمۡ وَٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تَتَّقُونَ ۝ ٱلَّذِي جَعَلَ لَكُمُ ٱلۡأَرۡضَ فِرَٰشٗا وَٱلسَّمَآءَ بِنَآءٗ وَأَنزَلَ مِنَ ٱلسَّمَآءِ مَآءٗ فَأَخۡرَجَ بِهِۦ مِنَ ٱلثَّمَرَٰتِ رِزۡقٗا لَّكُمۡۖ فَلَا تَجۡعَلُواْ لِلَّهِ أَندَادٗا وَأَنتُمۡ تَعۡلَمُونَ﴾

ऐ लोगो! तुम अपने रब की इबादत करो जिसने तुम्हें और तुमसे पहले के लोगों को पैदा किया है; ताकि तुम परायणता अपना सको, वही है जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को फर्श और आकाश को छत बनाया, और आकाश से पानी उतारा, फिर उसके द्वारा हर प्रकार के फल तुम्हारी रोजी के लिए पैदा किए, अतः जब तुम जानते हो तो अल्लाह के समकक्ष न ठहराओ। (अल-बक़रह: 21-22)

अल्लाह मुझे और आपको पवित्र कुरआन के प्रति आशीर्वाद दे...

दूसरा ख़ुतबा

अल्लाह की स्तुति है उसके एहसान पर, उसका धन्यवाद है उस की तोफ़ीक़ और कृपा पर, मैं अल्लाह की शान को महान मानते हुए गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके भक्त और दूत हैं, उन पर, उनके परिवार पर और उनके साथियों पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद बना रहे।

अल्लाह की प्रशंसा और नबी पर दरूद के बाद:

हे मुस्लिमो!

अल्लाह के साथ मन को जोड़े रखने से खुशी और अच्छाई के द्वार खुलते हैं, और तौबा (पश्चाताप) और क्षमा माँगने से बुराई के द्वार बंद हो जाते हैं। पापों को छोड़ने में ही मन की भलाई है। प्रेम, भय और कृपा के साथ अल्लाह की ओर हृदय के आकर्षण में ही दुनिया का आनंद है; क्यूंकि भय तुम्हें अल्लाह की अवज्ञा से दूर रखता है, आशा उसके आज्ञापालन की ओर ले जाती है और प्रेम उसकी ओर खींच लाता है। अत: अपने सभी कर्मों को पूरी तरह से अल्लाह के लिए ही अंजाम दो, ये कर्म बाहरी और आंतरिक रूप से परिपूर्ण होने चाहियें, इस निश्चितता के साथ कि अल्लाह रहस्यों, इरादों और छिपी हुई हर चीज़ से अवगत है।

फिर जान लो कि अल्लाह ने तुम्हें अपने प्यारे नबी पर रहमत और सलाम भेजने का हुक्म दिया है...

मुस्लिम की आस्था[1]

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, हम उसकी प्रशंसा करते हैं, उसी से सहायता और अपने पापों की क्षमा मांगते हैं, हम अपने प्राण और कर्म की बुराइयों से उसकी शरण चाहते हैं। वह जिसे सत्य मार्ग पर चला दे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे वह भटका दे उसे कोई सत्य मार्ग पर चला नहीं सकता। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह एक है, उसका कोई साझी नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, सलाम व शांति हो उन पर, उनके परिवार और उनके पवित्र साथियों पर।

अल्लाह की प्रशंसा और नबी पर दरूद के बाद:

हे अल्लाह के बंदो! अल्लाह से डरो जैसे डरना चाहिए, जो अपने रब से डरेगा वही मुक्ति पाएगा, जो उस पर ईमान लाएगा उसे कोई नुकसान नहीं होगा, जो उस से आशा बाँधेगा वो उसके लिए आशा का उत्तम केंद्र साबित होगा।

हे मुस्लिमो!

इस्लाम धर्म अत्यंत उत्तम है, यह सभी मानव हितों के लिए एक व्यापक धर्म है, इसमें पूजा पद्धति, व्यवहार आचरण तथा दंड के एसे प्रावधान शामिल हैं जो व्यक्ति और समूह को शुद्ध करते हैं, समाज को अराजकता और उथल-पुथल से बचाते हैं, मानव प्राणों को बुरे कर्म और घृणित कार्यों से रोकते हैं, ईश्वर के विरुद्ध उनके विद्रोह को लगाम देते हैं और इंसान को नीच कर्मों और खराब व्यवहार से ऊपर उठाते हैं। किसी भी व्यक्ति के जीवन में धर्म को थामे बिना कोई खुशी नहीं है। अच्छाई बढ़ती रहती है, ईमान की वृद्धि से उसका इनाम भी बढ़ता जाता है, जबकि शिर्क (बहूदेववाद) से सारे कर्म तबाह हो जाते हैं।

कुरैश कबीले में ऐसे लोग थे जो इबादत करते थे, हज करते थे, उमरा करते थे, दान देते थे, रिश्तेदारी निभाते थे, अतिथि का सम्मान करते थे, इस बात को स्वीकार करते थे कि अल्लाह केवल एक है जो रचना व योजना में अकेला है, वे संकट के समय अल्लाह के लिए शुद्ध इबादत करने लगते थे, लेकिन वे अपने और ईश्वर के बीच कुछ मध्यस्थ बनाते थे, उन्हें

(1) ये ख़ुतबा मस्जिद-ए-नबवी में जुमे के दिन 14/12/1421 हिजरी को दिया गया।

पुकारते, उनके लिए बलिदान पेश करते, उनके लिए मन्नत मांगते थे, उनसे मदद मांगते थे ताकि वे उनकी सिफारिश करें, उनका भ्रम था कि ये मध्यस्थ अल्लाह के सबसे करीब एक साधन हैं, इसलिए अल्लाह ने मुहम्मद ﷺ को भेजा ताकि वो अपने पिता इब्राहीम (उन पर शांति हो) के धर्म का नवीनीकृत करें, उन्हें बताएं कि पूजा पूरी तरह से अल्लाह का अधिकार है और उनके ऐसे कर्मों ने उनकी सभी पूजाएं दूषित कर दी हैं, फिर आप ﷺ ने उनसे लड़ाई की ताकि प्रार्थना, कुर्बानी, मन्नत, मदद की पुकार और सभी प्रकार की इबादत (आराधना) केवल अल्लाह के लिए हो।

बीमारों के उपचार, पापों की क्षमा, और उन अन्य चीज़ों की याचना जिन्हें करने में अल्लाह के अतिरिक्त कोई सक्षम नहीं है: इन सब को महान अल्लाह के अलावा किसी ओर से नहीं माँगा जा सकता, क़ब्र और समाधि के पास दुआ या नमाज़ के लिए नहीं जाया जाएगा, हाँ, कब्रें मृतकों का आवास मात्र हैं, फिर ये क़ब्र वालों के लिए आनंद हैं या नरक।

क़ब्र वालों से मदद माँगना सबसे बड़ी अवज्ञा का एक रूप है। सृजित प्राणी से उसकी छमता से परे मदद माँगना ऐसे ही है जैसे एक डूबता व्यक्ति किसी डूबते से मदद मांग रहा हो। कोई भी किसी सृजित प्राणी से पूर्ण आशा रखता है तो उसका अनुमान अवश्य निराशाजनक होता है। सो अल्लाह की ओर मुख करो; ईश्वर साधन के साथ और साधन के बिना भी, ज़रूर प्रदान करता है, और ऐसी जगह से देता है जहाँ से तुम्हें अनुमान भी नहीं होता और अल्लाह ही एक अभिभावक और सहायक के रूप में पर्याप्त है।

शिर्क (बहुदेववाद) का प्रायश्चित: तौहीद ही है, अच्छे कर्म बुरे कर्मों को मिटा देते हैं। जो अपनी आवश्यकता पूर्ण करने हेतु अल्लाह के अतिरिक्त अन्य से आशा रखे और हृदय को अपने रचेता से जोड़ने के बजाय कहीं ओर फेर दे; तो वह एक काल्पनिक जीवन जीता है और असंभव की चाह रखता है।

अल्लाह के सिवा मन्त्रों और तावीज़ों से नुक़सान दूर करने की प्रार्थना करना; अल्लाह के सिवा किसी और से ख़ुद को जोड़ना है, नबी ﷺ फ़रमाते हैं: "निस्संदेह मन्त्र, तावीज़ और जादू शिर्क हैं।" (मुस्नद अहमद)

तावीज़ एक निर्जीव वस्तु है जो अल्लाह के किसी निर्णय को टाल नहीं सकती, न किसी संकट से रक्षा कर सकती है, न ही अनैच्छिक चीज़ों को रोक सकती है और न ही चाहत पूर्ण कर सकती है, जो भी इसे बच्चों या महिलाओं या अन्य लोगों की गर्दन पर लटकाएगा अल्लाह उसे उसी (तावीज़ के हवाले) सौंप कर उसे निराश छोड़ देगा। इसलिए ईश्वर से जुड़े रहो, अपनी ज़रूरतों को उसी के सामने पेश करो, उसकी पनाह लो, और अपने

मामलों को उसे सौंप दो; तुम्हारी ज़रूरत के लिए वही पर्याप्त होगा और तुम्हारा सीना भी खुल जाएगा।

﴿وَمَن يَتَوَكَّلْ عَلَى ٱللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُۥٓ﴾

जो अल्लाह पर भरोसा करेगा तो वह उसके लिए काफ़ी है। (अल-तलाक़: 3)

जब अल्लाह अपने ऊपर भरोसा करने वाले बंदे के लिए काफी हो जाता है और उसका बचाव करने लगता है तो शत्रु के लिए उसके अंदर कोई प्रलोभन नहीं रहता। (अल्लाह पर) अपने भरोसे को कमज़ोरी न बनाओ और कमज़ोरी को भरोसे का नाम न दो।

जादूगरों और ज्योतिषियों के पास आना और उनके अंधविश्वास को सही मानना तथा परोक्ष और भविष्य की चीज़ों के बारे में उनसे प्रश्न करना, उनसे चीजों में हेरफेर का अनुरोध करना या इन सब बातों से संतुष्टि; ईमान में दोष, अल्लाह पर भरोसे में ख़राबी, लिखे हुए (नसीब) पर बेसब्री और तक़दीर पर क्रोधित होना है, नबी ﷺ फ़रमाते हैं: "जो किसी पुजारी (टोना-टोटका वाले बाबा) या ज्योतिषी के पास जाता है और उसकी बातों को सत्य मानता है; तो वह मुहम्मद ﷺ पर अवतीर्ण शरीअत का इंकार करता है।" (मुस्नद अहमद)

अल्लाह के अनुदान को किसी उत्सुक की उत्सुकता नहीं खींच सकती, न ही नफरत करने वाले की नफरत उसे रोक सकती है। श्री हसन अल-बसरी (उन पर अल्लाह की दया हो) कहते हैं: "जब मुझे ज्ञात हुआ कि मेरी जीविका दूसरा नहीं खा सकता तो मेरा दिल संतुष्ट हो गया।" टोना-टोटका करने वाले के पास जाने से न अनुदान में वृद्धि होती है न मृत्यु में देरी। श्री कुर्तुबी (उन पर अल्लाह की दया हो) कहते हैं: "जो लोग उन्हें रोकने पर सक्षम हैं जैसे मुहतसिब (इस्लामी पुलिस) उन पर अनिवार्य है कि वे सख्ती से (जादू टोना वालों और उनके पास आने जाने वालों को) रोकें।"

यदि तुम सच्चे भी हो तो भी अपने रब का सम्मान करते हुए अपनी क़सम की रक्षा करो और अल्लाह के नाम या उसके किसी गुण की ही क़सम खाओ, उस पवित्र हस्ती के सिवा किसी और -जैसे: काबा, नबी, अमानत और पीर वली- की क़सम न खाओ।

अल्लाह की नियति, उसकी रचना और उसके प्रबंधन के बारे में निश्चित रहो, उसके कष्ट और निर्णय के प्रति धैर्य रखो, उसकी आज्ञा के प्रति समर्पित रहो; क्योंकि संसार कष्टों और दोषों से भरा हुआ है, इसका मूल स्वरूप कष्टों और भयावहताओं पर है; इसलिए तक़दीर (नियति) पर विश्वास रखो; इस पर विश्वास धर्म के स्तंभों में से एक है। हर कामना पूरी नहीं होती, हाँ, प्रार्थना में तत्परता और ईश्वर की ओर पूरी तरह मुड़ने से दरवाज़े खुल जाते हैं और इच्छा पूरी हो जाती है।

मोमिन (आस्तिक) पर अनिवार्य है कि उसका भय और आशा एक समान हों, यदि उनमें से एक भी दूसरे से अधिक होता है तो बंदे का नाश हो जाएगा; सो जिसका भय अधिक होता है वह एक तरह की निराशा में गिर जाता है, इसी प्रकार जिसकी आशा अधिक होती है वह अल्लाह के विधान से स्वंय को सुरक्षित समझने लगता है, प्रशंसनीय भय वह है जो आपको अल्लाह के निषेधों से दूर रखता है।

यदि तुम्हारे दिल में कर्म की मिठास का आभास न हो तो कर्म पर दोष लगाओ, क्योंकि ईश्वर तो सराहने वाली हस्ती है। इस दुनिया में एक जन्नत है, जो इसमें प्रवेश नहीं करेगा वह आख़िरत के स्वर्ग में भी प्रवेश नहीं करेगा। वंचित है वह जिसके दिल पर अपने अल्लाह से पर्दा पड़ा है, क़ैदी है वह जिसकी कामनाओं ने उसे दास बना लिया है। अल्लाह के घरों में नमाज़ कायम करना ईमान में वृद्धि लाता है, मुकुट को उज्जवल करता है और निषिद्ध कार्यों से रोके रखता है। सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा:

﴿وَأَقِمِ ٱلصَّلَوٰةَۖ إِنَّ ٱلصَّلَوٰةَ تَنۡهَىٰ عَنِ ٱلۡفَحۡشَآءِ وَٱلۡمُنكَرِ﴾

और नमाज़ क़ायम करो, क्योंकि नमाज़ अभद्रता और बुराई से रोकती है। (अल-अंकबूत: 45)

हलाल खान पान ईमान की सुरक्षा और अच्छे व्यवहार का प्रमाण, तथा दुआ की कबूलियत का साधन है, नबी ﷺ कहते हैं: "हे साद! अपना खाना पान पवित्र रखो, तुम ऐसे व्यक्ति बनोगे जिसकी दुआ कबूल की जाती है।" सूदी लेनदेन या हराम चीजों को बरतने से दूरी बनाए रखो; तुम्हारी आत्मा को बुलंदी मिलेगी और तुम्हारा मन शुद्ध होगा।

दूसरों के साथ अपना व्यवहार अल्लाह की खातिर प्रेम और घृणा के नियमों के अनुसार करो, क्यूंकि जो लोगों के क्रोध में भी अल्लाह की खुशी को तलाश करता है; अल्लाह उस के लिए लोगों के बोझ की तरफ से काफी हो जाता है।

अत्याचार से सावधान रहो; अत्याचार परलोक में दोहरा अंधकार है। पीड़ित की दुआ सुनी जाती है और उसकी मांग पूरी होती है, इसलिए दूसरों के अधिकारों को न रोको, उन अधिकारों का हनन न करो। अत्याचार जहाँ भी होगा वहाँ या तो कोई नेकी छोड़ी जा रही होगी या कोई पाप किया जा रहा होगा। महान अल्लाह कहता है:

﴿وَمَن يَظۡلِم مِّنكُمۡ نُذِقۡهُ عَذَابٗا كَبِيرٗا﴾

जो कोई तुममें से अत्याचार करेगा उसे हम बड़ी यातना का मज़ा चखाएँगे। (अल-फ़ुर्क़ान: 19)

समझदार व्यक्ति वह है जो दूसरों के दोषों को छोड़ कर स्वयं के दोषों में व्यस्त रहता है और अपने प्रभु की आज्ञापालन का प्रयास करता है। अल्लाह की ओर चलने वाले के पास एक आकांक्षा होनी चाहिए जो उसको चलाती रहे और उसे ऊंचाई प्रदान करती रहे, और साथ ही ज्ञान होना चाहिए जो उसे प्रबुद्ध करे और उसका मार्गदर्शन करता रहे। सो उपकार देखने और आत्मा के दोष को पढ़ने के बीच ईश्वर की ओर चलते रहो, ग़ीबत (पीठ पीछे बुराई) और झूठा आरोप लगा कर मुस्लिमों के मान सम्मान पर प्रहार करने से सावधान रहो। नबी ﷺ कहते हैं: "आपका खून, आपका धन और आपसी सम्मान उतना ही पवित्र है जितना कि आपका आज का (सम्मानित) दिन, आपके इस (सम्मानित) महीने में, इस (सम्मानित) शहर में।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

हसद और नफ़सानी ख्वाहिश तुम्हें किसी पर झूठे आरोप लगाने पर न उकसाएं; क्योंकि हसद दण्ड के हिसाब से सबसे गंभीर आचरण है और मनुष्य का स्वभाव अपनी शैली के लोगों पर बढ़ाई जताने के प्रेम पर है। निंदनीय है वो जो तक़दीर पर क्रोध के अनुसार कार्य करता है या ईर्ष्या के शिकार व्यक्ति की निंदा करने लग जाता है। इसलिए अपने भीतर इस दुर्गुण से नफरत करो, इसके समक्ष तक़वा (धर्मपरायणता) का उपयोग करो; क्यूंकि जो भी रब से डरता है और धैर्य रखता है; अल्लाह उसे उसकी धर्मपरायणता द्वारा लाभान्वित करता है, (साथ ही) सर्वोच्च नैतिकता से सुसज्जित हो जाओ और इबादत (पूजा) में निरंतरता बनाए रखो; क्यूंकि अत्यधिक इबादत दिखावे को दूर करती है, अल्लाह से मदद मांगना घमंड को रोकता है और आपस में अच्छाई का आदेश देना और बुराई से रोकना संकट को दूर करता है। छोटे बड़े पाप से बचो; क्यूंकि यह दिल और शरीर को कमज़ोर करता है, उपहार को दूर करता और नाराज़ी लाता है। शैतान इंसान के आगे अवज्ञा को बना-सजा कर प्रस्तुत करता है, सज़ा को भुला देता है और उसे दया की बहुतायत की ओर इंगित करता है; ताकि उसे बार-बार पाप में गिराए और ईश्वर और परलोक की ओर उसकी चाल को कमज़ोर कर दे। उस शैतान ने इंसान के लिए फंदे लगा रखे हैं, उसने संकटों को चाहा है, तो तुम उसके पदचिन्हों पर मत चलो, उसके खिलाफ युद्ध से पीछे ना हटो, अच्छे कर्म अधिक से अधिक करते रहो; क्यूंकि पुण्य के बाद पुण्य करते जाना उसके स्वीकार होने का चिन्ह है।

मैं शापित शैतान से अल्लाह की पनाह में आता हूँ

﴿وَأَنَّ هَٰذَا صِرَاطِي مُسْتَقِيمًا فَاتَّبِعُوهُ ۖ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَن سَبِيلِهِ ۚ ذَٰلِكُمْ وَصَّاكُم بِهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ﴾

और यह कि यही मेरा सीधा मार्ग है, तो तुम इसी पर चलो और दूसरे मार्गों पर न चलो कि वे तुम्हें उसके मार्ग से हटाकर इधर-उधर भटका देंगे। यह वह बात है जिसकी उसने तुम्हें वासिय्यत की है, ताकि तुम (पथभ्रष्टता से) बचो।" (अल-अनआम: 153)

अल्लाह मुझे और आपको पवित्र कुरआन के प्रति आशीर्वाद दे...

दूसरा ख़ुतबा

अल्लाह की स्तुति है उसके एहसान पर, उसका धन्यवाद है उस की तोफ़ीक़ और कृपा पर, मैं अल्लाह की शान को महान मानते हुए गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके भक्त और दूत हैं, उन पर, उनके परिवार पर और उनके साथियों पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद बना रहे।

अल्लाह की प्रशंसा और नबी पर दरूद के बाद:

हे मुस्लिमो!

निश्चित ही जीवन के साथ मृत्यु है, दुनिया के साथ आखिरत है, हर चीज़ का एक हिसाब किताब लेने वाला है, हर चीज पर एक निगरानी करने वाला है, हर पुण्य पर उपहार है, हर बुराई पर दंड है और हर चीज़ का समय लिखित (निर्धारित) है। निश्चय ही तुम्हारा एक साथी होगा जो तुम्हारे साथ दफनाया जाएगा, परन्तु उस समय वह जीवित रहेगा और तुम अजीवित होगे; यदि वह उदार होगा तो तुम्हारा सम्मान करेगा, यदि वह नीच होगा तो तुम्हारा अपमान करेगा, फिर उसे तुम्हारे साथ ही उठाया जाएगा, और तुम (दोबारा जीवन में) उसके बिना नहीं उठाए जाओगे, उसके बारे में ही तुमसे पूछा जाएगा, इसलिए उसे अच्छा बनाओ, यदि वह अच्छा रहा तो तुम उससे परिचित रहोगे, परंतु वह बुरा रहा तो तुम उससे घबराहट महसूस करोगे। वह साथी तुम्हारा अपना कर्म है।

अतः अधिक से अधिक भले कर्म करो, अपने धर्म पर डट जाओ, उसको मज़बूत करने पर लगे रहो, उसके निषिद्ध कार्यों से बचो, उसके आदेश का पालन करो, अपने धर्म के मूल को थाम लो, उसकी आवश्यकताओं को पूरा करो, ईमान, ज्ञान और अच्छे कर्म से स्वयं को सुसज्जित करो। फटकार वाले पाठों से सीख प्राप्त करो, क़ुरआन के उपदेशों पर सोच बिचार करो, क्यूंकि वे सत्य सूचनाएं हैं, जीवन भर अल्लाह को याद करते रहो, उसके ज़िक्र (याद) की कोई रिक्तता या समाप्ति नहीं है, अपनी कमियों के लिए अधिकाधिक क्षमा मांगो और तौफीक़ (भले कर्म की क्षमता प्रदान करने) के लिए अल्लाह का धन्यवाद करो।

फिर अल्लाह की सर्वश्रेष्ठ रचना मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ﷺ पर दरूद व सलाम भेजो क्यूंकि तुम्हारे रब ने अपने नबी पर सलाम भेजने का हुक्म दिया है...

अल्लाह के प्रति अच्छा विचार[1]

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, हम उसकी प्रशंसा करते हैं, उसी से सहायता और अपने पापों की क्षमा मांगते हैं, हम अपने प्राण और कर्म की बुराइयों से उसकी शरण चाहते हैं। वह जिसे सत्य मार्ग पर चला दे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे वह भटका दे उसे कोई सत्य मार्ग पर चला नहीं सकता। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह एक है, उसका कोई साझी नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं। सलाम व शांति हो उन पर, उनके परिवार और उनके पवित्र साथियों पर।

अल्लाह की प्रशंसा और नबी पर दरूद के बाद:

अल्लाह के बंदो! अल्लाह से डरो जैसे डरना चाहिए और इस्लाम के सबसे मज़बूत कड़े को थामे रहो।

हे मुस्लिमो!

तौहीद भक्तों पर अल्लाह का अधिकार है, इसी के साथ अल्लाह ने अपने दूत भेजे और अपनी पुस्तकें उतारीं। तौहीद की वास्तविकता है: अल्लाह को इबादत (पूजा, वंदना) के साथ एक मानना। हर ऐसे कथन और कर्म का नाम इबादत है जिस से अल्लाह प्रेम करता और प्रसन्न होता है, चाहे वो कथन और कर्म बाहरी हो या आंतरिक; क्योंकि मन की भी एक विशेष भक्ति होती है, इसकी भक्ति अंगों की भक्ति से अधिक महत्वपूर्ण, सर्वाधिक और स्थायी होती है, अत: मन के कर्म ईमान में दाखिल होने में अंगों के कर्मों से अधिक श्रेष्ठता रखते हैं।

जो ईमान; ज्ञान और गुणवत्ता के रूप में दिल के अंदर स्थापित होता है वही अभीष्ट मूल है, प्रत्यक्ष क्रियाएं उसकी पूरक और पालनकर्ता होती हैं, वे (क्रियाएं) दिल के कर्म की मध्यस्थता के बिना सटीक और स्वीकार्य नहीं हैं, यह इबादत की आत्मा और मूल हैं, यदि प्रत्यक्ष कर्म उससे रहित हैं, तो वे बिना आत्मा के मृत शरीर की तरह हैं। दिल के सुधार से पूरे

(1) ये ख़ुतबा मस्जिद-ए-नबवी में जुमे के दिन 18/04/1439 हिजरी को दिया गया।

शरीर का सुधार होता है, नबी ﷺ ने कहा: "शरीर में एक मांस का टुकड़ा है, यदि यह ठीक है तो पूरा शरीर ठीक रहता है और यदि यह खराब हो जाता है तो पूरा शरीर खराब हो जाता है। और वह टुकड़ा दिल है।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

भक्तों की एक दूसरे पर वरीयता उनके दिल में जो कुछ है उसके आधार पर होती है, इसी के आधार पर कर्मों की वरीयता होती है, यही अपने भक्तों के लिए प्रभु के ध्यान का केंद्र है, नबी ﷺ ने कहा: "अल्लाह आपके शरीर और आपके रूप को नहीं देखता, लेकिन वह आपके दिल और आपके कार्यों को देखता है।" (सही मुस्लिम)

दिल के सबसे महत्वपूर्ण कर्मों में से एक: अल्लाह के बारे में अच्छा विचार रखना है; यह इस्लाम के दायित्वों तथा तौहीद के अधिकारों और कर्तव्यों में से एक है। इसका व्यापक अर्थ है: हर विचार जो अल्लाह की हस्ती, उसके नामों और गुणों की पूर्णता के अनुरूप हो। यह अल्लाह को जानने और पहचानने की एक शाखा है, यह अल्लाह की दया, महिमा, परोपकारिता, क्षमता, ज्ञान और उसके अच्छे चुनाव की प्रचुरता को जानने पर आधारित है, क्यूंकि जब इन सबकी पूरी जानकारी होती है तभी आवश्यक रूप से बंदे का अपने अल्लाह के बारे में अच्छा विचार बनता है, और कभी यह अच्छा विचार अल्लाह के कुछ नामों और गुणों (के प्रभाव) को देखने से भी उत्पन्न होता है।

अल्लाह के नामों और गुणों के अर्थ की वास्तविकता जिसके दिल में स्थापित हो जाती है उसे अल्लाह के प्रत्येक नाम और गुण के हिसाब से अल्लाह के प्रति अच्छा विचार हासिल हो जाता है; क्योंकि (अल्लाह की) प्रत्येक विशेषता की एक विशेष भक्ति होती है और उसी से संबंधित एक अच्छा विचार भी।

अल्लाह की पूर्णता, महिमा, सुंदरता, और अपनी रचना पर उसकी उदारता; उस शक्तिशाली हस्ती के बारे में अच्छा विचार रखने पर मजबूर करते हैं, इसी प्रकार अल्लाह ने अपने भक्तों को आज्ञा दी है:

﴿وَأَحْسِنُوٓاْ ۛ إِنَّ ٱللَّهَ يُحِبُّ ٱلْمُحْسِنِينَ﴾

और अच्छे से अच्छा तरीक़ा अपनाओ। निस्संदेह अल्लाह अच्छे से अच्छा काम करनेवालों को पसंद करता है। (अल-बक़रह 195)

श्री सुफ़यान सौरी (उन पर अल्लाह की दया हो) ने कहा: "अल्लाह के बारे में अच्छा गुमान रखो।"

इस के महान स्थान के कारण ही नबी ﷺ ने मृत्यु से पहले इस पर बहुत ज़ोर दिया था, श्री जाबिर (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि: मैंने मृत्यु से तीन दिन पहले अल्लाह के दूत ﷺ

को फ़रमाते हुए सुना: "तुम में से प्रत्येक व्यक्ति को इस दशा में मौत आनी चाहिए कि वह सर्वशक्तिमान अल्लाह के बारे में अच्छा गुमान रखता हो।" (सही मुस्लिम)

अल्लाह ने अपने विनम्रतापूर्वक अधीन रहने वाले बंदों की अपने प्रति अच्छा विचार रखने पर प्रशंसा की है, उसने उन के लिए इबादत को आसान और सहायक बनाकर शीघ्र शुभ सन्देश का प्रबंध कर दिया है, महामहिम अल्लाह ने कहा:

﴿وَٱسۡتَعِينُواْ بِٱلصَّبۡرِ وَٱلصَّلَوٰةِۚ وَإِنَّهَا لَكَبِيرَةٌ إِلَّا عَلَى ٱلۡخَٰشِعِينَ ۝ ٱلَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُم مُّلَٰقُواْ رَبِّهِمۡ وَأَنَّهُمۡ إِلَيۡهِ رَٰجِعُونَ﴾

धैर्य और नमाज़ से मदद लो, और निस्संदेह यह (नमाज़) बहुत कठिन है, किन्तु उन लोगों के लिए नहीं जो विनम्र होते हैं; जो समझते हैं कि उन्हें अपने रब से मिलना है और उसी की ओर उन्हें पलटकर जाना है। (अल-बक़रह: 45-46)

रसूलों (उन पर शांति हो) ने ईश्वर के बारे में अपने ज्ञान में उच्च स्थान प्राप्त कर रखा था, इसीलिए उन्होंने रब के प्रति अच्छे विचार के कारण अपने मामलों को उसी के हवाले कर दिया था। अत: पैग़ंबर इब्राहीम (उन पर शांति हो) ने श्रीमती हाजर और उनके पुत्र इस्माइल (उन पर शांति हो) को काबे के पास छोड़ दिया था, उस समय मक्का में कोई नहीं था, वहाँ पानी भी नहीं था। इब्राहीम (उन पर शांति हो) जब जाने के लिए मुड़े तो हाजर भी उनके पीछे हो लीं और कहा: "हे इब्राहीम! आप हमें इस घाटी में छोड़कर कहाँ जा रहे हैं जहाँ कोई मनुष्य या कुछ भी नहीं है? वह बार बार कहती रहीं, इब्राहीम (उन पर शांति हो) ने उनकी एक न सुनी, तब हाजर ने कहा: क्या अल्लाह ने आपको ऐसा करने की आज्ञा दी है? इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने कहा: हाँ, तो हाजर ने कहा: फिर वह हमें नष्ट नहीं होने देगा।" (सही बुखारी) तो उसके बाद जो हुआ वो ईश्वर के प्रति उनके अच्छे विचार का परिणाम था, चुनांचे वहाँ एक धन्य पानी का झरना फूट पड़ा, काबा आबाद हुआ, हाजर की स्मृति अमर हो गई, इस्माईल (उन पर शांति हो) नबी बने और उन ही के वंशज में अंतिम नबी और दूतों के इमाम मुहम्मद ﷺ आए।

पैगंबर याकूब (उन पर शांति हो) ने अपने दो बेटों को खो दिया, लेकिन उन्होंने धैर्य नहीं खोया और अपने मामले को ये कहते हुए अल्लाह के हवाले कर दिया:

﴿إِنَّمَآ أَشۡكُواْ بَثِّي وَحُزۡنِيٓ إِلَى ٱللَّهِ﴾

मैं तो अपनी परेशानी और अपने ग़म की शिकायत अल्लाह ही से करता हूँ। (यूसुफ: 86)

इस दौरान उनका मन अल्लाह के प्रति अच्छे विचार से भरा रहा, (उनका विचार था) कि अल्लाह ही सबसे उत्तम रक्षक है, उन्होंने कहा था:

﴿عَسَى ٱللَّهُ أَن يَأْتِيَنِى بِهِمْ جَمِيعًا ۚ إِنَّهُۥ هُوَ ٱلْعَلِيمُ ٱلْحَكِيمُ﴾

बहुत सम्भव है कि अल्लाह उन सबको मेरे पास ले आए। वह तो सर्वज्ञ, अत्यन्त तत्वदर्शी है। (यूसुफ: 83)

उन्होंने अपने बेटों को भी इसी का आदेश दिया और कहा :

﴿يَٰبَنِىَّ ٱذْهَبُوا۟ فَتَحَسَّسُوا۟ مِن يُوسُفَ وَأَخِيهِ وَلَا تَا۟يْـَٔسُوا۟ مِن رَّوْحِ ٱللَّهِ ۖ إِنَّهُۥ لَا يَا۟يْـَٔسُ مِن رَّوْحِ ٱللَّهِ إِلَّا ٱلْقَوْمُ ٱلْكَٰفِرُونَ﴾

ऐ मेरे बेटो! जाओ और यूसुफ़ और उसके भाई की टोह लगाओ और अल्लाह की सदयता से निराश न हो। अल्लाह की सदयता से तो केवल कुफ़्र करनेवाले ही निराश होते हैं। (यूसुफ: 83)

बनी-इस्राईल को असहनीय पीड़ा हुई, मगर संकट की विषमता के बावजूद अल्लाह के प्रति उनका अच्छा विश्वास ही आशा की किरन और निकलने का रास्ता था, सो मूसा (उन पर शांति हो) ने अपनी क़ौम से कहा:

﴿ٱسْتَعِينُوا۟ بِٱللَّهِ وَٱصْبِرُوٓا۟ ۖ إِنَّ ٱلْأَرْضَ لِلَّهِ يُورِثُهَا مَن يَشَآءُ مِنْ عِبَادِهِۦ ۖ وَٱلْعَٰقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ﴾

अल्लाह से सम्बद्ध होकर सहायता प्राप्त करो और धैर्य से काम लो। धरती अल्लाह की है, वह अपने बन्दों में से जिसे चाहता है, उसका वारिस बना देता है। और अंतिम परिणाम तो डर रखनेवालों ही के लिए है। (अल-आराफ़: 128)

मूसा (उन पर शांति हो) और उनकी क़ौम के लिए स्थिति गंभीर हो गई, क्यूंकि उनके सामने समुद्र और पीछे फिरऔन और उसकी सेना थी, ऐसे समय

﴿قَالَ أَصْحَٰبُ مُوسَىٰٓ إِنَّا لَمُدْرَكُونَ﴾

मूसा के साथियों ने कहा, "हम तो पकड़े गए!" (अल-शुआरा: 61)

तो (ऐसी स्थिति में भी) अल्लाह से वार्तालाप करने वाले नबी का उत्तर अल्लाह के प्रति उनके विशाल विश्वास और सर्वशक्तिमान रब के बारे में उनकी अच्छी राय की गवाही देता है:

﴿قَالَ كَلَّآۖ إِنَّ مَعِيَ رَبِّي سَيَهۡدِينِ﴾

उसने कहा: कदापि नहीं, मेरे साथ मेरा रब है। वह अवश्य मेरा मार्गदर्शन करेगा। (अल-शुआरा: 61)

फिर ऐसी ईश-वाणी आई जिसकी कल्पना किसी ने नहीं की थी:

﴿فَأَوۡحَيۡنَآ إِلَىٰ مُوسَىٰٓ أَنِ ٱضۡرِب بِّعَصَاكَ ٱلۡبَحۡرَۖ فَٱنفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرۡقٖ كَٱلطَّوۡدِ ٱلۡعَظِيمِ * وَأَزۡلَفۡنَا ثَمَّ ٱلۡأٓخَرِينَ * وَأَنجَيۡنَا مُوسَىٰ وَمَن مَّعَهُۥٓ أَجۡمَعِينَ * ثُمَّ أَغۡرَقۡنَا ٱلۡأٓخَرِينَ﴾

तब हमने मूसा की ओर प्रकाशना की: "अपनी लाठी सागर पर मार।" तो वह फट गया और (उसका) प्रत्येक टुकड़ा एक बड़े पहाड़ की भाँति हो गया। और हम दूसरों को भी निकट ले आए। हमने मूसा को और उन सबको जो उसके साथ थे, बचा लिया। और दूसरों को डूबो दिया। (अल-शुआरा: 63-66)

अल्लाह की भक्ति और उसके प्रति अच्छे विचार के विषय में लोगों में सबसे महान: हमारे नबी मुहम्मद ﷺ हैं, आपको आपकी क़ौम ने पीड़ा दी तो आपने अल्लाह के वादे और उसके धर्म की विजय पर भरोसा किए रखा। आपसे पहाड़ के फरिश्ते ने कहा: यदि आप चाहें तो उन (शत्रुओं) को दो पहाड़ों के बीच पीस दूँ! तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: बल्कि मुझे आशा है कि इनकी कोख से ऐसी औलाद निकलेगी जो एक अल्लाह की इबादत करेगी और उसके साथ किसी को साझी नहीं बनाएगी। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

अत्यंत कठिन और घोर संकट में भी हमारे नबी ﷺ रब के प्रति अच्छे विचार को नहीं त्यागते थे; आप को मक्का से निकाल दिया गया, रास्ते में आपने एक गुफा में शरण ली, इसलिए अविश्वासियों ने आपका पीछा किया, जब उन्होंने आपको घेर लिया, तो आपने अपने साथी से उसी अच्छे विचार की पुष्टि करते हुए कहा :

﴿لَا تَحۡزَنۡ إِنَّ ٱللَّهَ مَعَنَاۖ﴾

"शोक मत करो, निस्संदेह अल्लाह हमारे साथ है।" (अल-तौबा: 40)

अबू-बकर (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि मैं ने गुफा में नबी ﷺ से कहा था: "अगर उन (शत्रुओं) में से कोई अपने पाऊँ की ओर देख ले तो अपने कदमों के नीचे से हमें देख लेगा, आप ﷺ ने फ़रमाया: हे अबू बकर! उन दो मनुष्यों के प्रति तुम्हारा क्या खयाल है जिनका तीसरा अल्लाह है?" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

आप ﷺ का इतना कुछ नुकसान हुआ, पीड़ा और चौतरफा लड़ाई से आपका सामना हुआ; लेकिन इन सब बातों के बावुजूद आप इस धर्म के युगों-युगों तक क्षितिज तक पहुँचने के प्रति आश्वस्त रहे, आप कहते थे: "आवश्यक ही यह धर्म वहाँ तक पहुँचेगा जहाँ तक दिन और रात की पहुँच है, अल्लाह हर कच्चे-पक्के मकान में इस धर्म को प्रवेश दिला कर ही रहेगा, चाहे किसी सम्मानित का सम्मान हो या किसी अपमानित का अपमान।" (मुस्नद अहमद) एक देहाती ने नबी ﷺ के सामने तलवार तान दी, जबकि आप सो रहे थे, आप फ़रमाते हैं: "जब मैं बेदार हुआ तो देखा कि उसके हाथ में तलवार चमक रही है, उसने कहा: मुझसे तुम्हें कौन बचाएगा? तो मैंने तीन बार कहा: अल्लाह। फिर आप ﷺ ने उसे दंड नहीं दिया और वह व्यक्ति बैठ गया। (सही बुखारी व सही मुस्लिम) मुस्नद अहमद के वर्णन में है कि "उस देहाती के हाथ से तलवार गिर गई थी।"

नबियों के बाद, सृष्टि में अल्लाह के प्रति सबसे अधिक अच्छा विचार रखने वाले सहाबा[1] थे, अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿ٱلَّذِينَ قَالَ لَهُمُ ٱلنَّاسُ إِنَّ ٱلنَّاسَ قَدْ جَمَعُواْ لَكُمْ فَٱخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ إِيمَٰنًا وَقَالُواْ حَسْبُنَا ٱللَّهُ وَنِعْمَ ٱلْوَكِيلُ﴾

ये वही लोग हैं जिनसे लोगों ने कहा, "तुम्हारे विरुद्ध लोग इकट्ठा हो गए हैं, अतः उनसे डरो।" तो इस चीज़ ने उनके ईमान को और बढ़ा दिया। और उन्होंने कहा, "हमारे लिए तो बस अल्लाह काफ़ी है और वही सबसे अच्छा कार्य-साधक है।" (आल इमरान: 173)

इब्नुद-दग़िन्नह श्री अबू-बकर (रज़ियल्लाहु अन्हु) के पास (अविश्वासियों के संदेश के साथ) आया कि अबू-बकर नमाज़ और क़ुरआन की तिलावत छुपाकर करें वर्ना वह उनकी शरण वापस करदें, अर्थात इब्नुद-दग़िन्नह चाहता था कि श्री अबू-बकर को रक्षा देने के प्रण से मुक्त हो जाए और क़ुरैश के अविश्वासी श्री अबू-बकर पर नियंत्रण पा लें, ऐसी स्थिति में श्री अबू-बकर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा: "मैं तुम्हारी पनाह तुम्हें वापस लौटाता हूँ और अल्लाह की शरण से संतुष्ट होता हूँ।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

श्री उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते हैं: अल्लाह के दूत नबी ﷺ ने हमें दान करने का आदेश दिया, इत्तेफाक से (उस समय) मेरे पास धन भी था, तो मैंने (दिल ही दिल में) कहा: "अगर मैं किसी दिन श्री अबू-बकर से आगे निकल सकता हूँ तो आज ही उनसे आगे निकल

---

(1) अंतिम नबी मुहम्मद ﷺ के साथियों को सहाबा कहा जाता है।

सकता हूँ। कहते हैं कि: मैं आधा धन लेकर आ गया, कहते हैं कि: नबी ﷺ ने पूछा: अपने परिवार के लिए क्या छोड़ा है? तो मैंने कहा: इतना ही छोड़ा है (जितना लेकर आया हूँ), और श्री अबू बकर अपने पास जो कुछ था सब लेकर आ गए, जब नबी ﷺ ने उनसे पूछा कि अपने परिवार के लिए क्या छोड़ा है? तो उन्होंने जवाब दिया कि उनके लिए अल्लाह और उसके रसूल को छोड़ आया हूँ। (सुनन अबू-दाऊद)

श्रीमती खदीजा (रज़ियल्लाहु अन्हा) दुनिया की महिलाओं की सरदार हैं, जब ईश-वाणी का आरम्भ हुआ था तो नबी ﷺ उनके पास आए और कहा: "मुझे अपनी जान खतरे में लग रही है, उस समय खदीजा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने आपसे कहा था: ऐसा कभी नहीं हो सकता, प्रसन्न रहें, अल्लाह की क़सम, अल्लाह आपको कभी अपमानित नहीं करेगा, आप तो रिश्ते निभाते हैं, सच बोलते हैं, बोझ उठाते हैं, ग़रीब की सहायता करते हैं, अतिथि का सत्कार करते और सत्य के कामों में मदद करते हैं।" (सही बुखारी व सहीह मुस्लिम)

उम्मत के सलफ़ (पूर्वज) भी इसी मार्ग पर चले, सुफ़यान (उन पर अल्लाह की दया हो) कहते हैं: "मुझे पसंद नहीं कि मेरे हिसाब (अर्थात पुण्य और पाप का बदला देने) का अधिकार मेरे माता पिता के ज़िम्मे हो, मेरा रब मेरे लिए मेरे माता पिता से भी अच्छा है"। सईद बिन जुबैर (उन पर अल्लाह की दया हो) की दुआ थी: "हे अल्लाह! मैं तुझ से तुझ पर सच्चा भरोसा और तेरे प्रति अच्छा विचार माँगता हूँ"।

जिन्नों में भी नेक बंदे हैं, अल्लाह के प्रति उनके विचार अच्छे हैं, उनको अल्लाह की ताकत और उसके अथाह ज्ञान पर विश्वास होता है। उनका कथन इस प्रकार होता है:

﴿وَأَنَّا ظَنَنَّآ أَن لَّن نُّعْجِزَ ٱللَّهَ فِى ٱلْأَرْضِ وَلَن نُّعْجِزَهُۥ هَرَبًا﴾

और यह कि हमने समझ लिया कि हम न धरती में कहीं जाकर अल्लाह के क़ाबू से निकल सकते हैं, और न आकाश में कहीं भागकर उसके क़ाबू से निकल सकते हैं। (अल-जिन्न: 12)

अल्लाह के कुछ बंदे ऐसे होते हैं कि अगर वे अल्लाह की क़सम खा लें तो अल्लाह उस क़सम को पूरा कर देता है, ऐसा क़सम के कारण नहीं; बल्कि अच्छे विचार के कारण होता है। मोमिन हर समय और हर हालत में अपने रब के प्रति अच्छे विचार रखता है। और उसके सबसे अच्छे विचार अल्लाह को पुकारते और उसकी निकटता पर यक़ीन के साथ उससे बातचीत करते समय होते हैं; कि वह दुआ करने वालों की दुआ कबूल करता और आशा रखने वाले को निराश नहीं करता है।

तौबा (पश्चाताप) करने वाले व्यक्ति का अपने रब के प्रति अच्छा विचार तौबा कबूल होने के कारणों में से एक है। नबी मुहम्मद ﷺ अपने रब से वर्णित करते हुए फरमाते हैं: "मेरे भक्त ने पाप किया है, फिर उसे ज्ञान हुआ कि उसका एक प्रभु है जो पाप को क्षमा भी करता है और उस पर पकड़ भी करता है, (हे भक्त) अब तू जो चाहे कर; मैंने तुझे क्षमा कर दिया है।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

कठिनाइयों और संकटों के समय अच्छे विचार खुलकर सामने आते हैं और बुरे विचार छट जाते हैं। उहुद के मैदान में स्थिरता ईमान वाले बंदों की पहचान थी, जबकि उनके अतिरिक्त लोग अल्लाह के प्रति जाहिलिय्यत वाले विचार में पड़ गए थे। अहज़ाब के युद्ध में भी अल्लाह के प्रति विचार अनेक हो गए थे, अल्लाह ने एक दल के बारे में कहा:

﴿هُنَالِكَ ٱبْتُلِىَ ٱلْمُؤْمِنُونَ وَزُلْزِلُوا۟ زِلْزَالًا شَدِيدًا ۝ وَإِذْ يَقُولُ ٱلْمُنَٰفِقُونَ وَٱلَّذِينَ فِى قُلُوبِهِم مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا ٱللَّهُ وَرَسُولُهُۥٓ إِلَّا غُرُورًا﴾

उस समय ईमानवाले आज़माए गए और पूरी तरह हिला दिए गए। और जब कपटाचारी और वे लोग जिनके दिलों में रोग था कहने लगे: "अल्लाह और उसके रसूल ने हमसे जो वादा किया था वह तो धोखा मात्र था।" (अल-अहज़ाब: 11-12)

जहाँ तक सहाबा (रज़ियल्लाहु अनहुम) की बात है तो वे यक़ीन कर चुके थे कि ये संकट अल्लाह की ओर से एक परीक्षा है जिसके पीछे सफलता और राहत है, अल्लाह ने इन्ही के बारे में कहा है:

﴿وَلَمَّا رَءَا ٱلْمُؤْمِنُونَ ٱلْأَحْزَابَ قَالُوا۟ هَٰذَا مَا وَعَدَنَا ٱللَّهُ وَرَسُولُهُۥ وَصَدَقَ ٱللَّهُ وَرَسُولُهُۥ ۚ وَمَا زَادَهُمْ إِلَّآ إِيمَٰنًا وَتَسْلِيمًا﴾

और जब ईमानवालों ने सैन्य दलों को देखा तो वे पुकार उठे: "यह तो वही चीज़ है, जिसका अल्लाह और उसके रसूल ने हमसे वादा किया था। और अल्लाह और उसके रसूल ने सच कहा था।" इस चीज़ ने उनके ईमान और आज्ञाकारिता ही को बढ़ाया। (अल-अहज़ाब: 22)

अल्लाह के प्रति अच्छा विचार ही संकट, पीड़ा, और चिंता के समय बाहर निकलने का एकमात्र रास्ता होता है; अतः वे तीन लोग जो पीछे रह गए थे उन पर आई (विकट) प्रस्थिति को केवल अल्लाह के प्रति उनके अच्छे विचार ने ही हटाया था, अल्लाह फ़रमाता है:

﴿وَعَلَى ٱلثَّلَٰثَةِ ٱلَّذِينَ خُلِّفُواْ حَتَّىٰٓ إِذَا ضَاقَتۡ عَلَيۡهِمُ ٱلۡأَرۡضُ بِمَا رَحُبَتۡ وَضَاقَتۡ عَلَيۡهِمۡ أَنفُسُهُمۡ وَظَنُّوٓاْ أَن لَّا مَلۡجَأَ مِنَ ٱللَّهِ إِلَّآ إِلَيۡهِ ثُمَّ تَابَ عَلَيۡهِمۡ لِيَتُوبُوٓاْۚ إِنَّ ٱللَّهَ هُوَ ٱلتَّوَّابُ ٱلرَّحِيمُ﴾

और उन तीनों पर भी अल्लाह मेहरबान हुआ जो पीछे छोड़ दिए गए थे, यहाँ तक कि जब धरती विशाल होते हुए भी उन पर तंग हो गई, उनके प्राण उन पर दूभर हो गए और उन्होंने समझा कि अल्लाह से बचने के लिए कोई शरण नहीं मिल सकती, मिल सकती है तो उसी के यहाँ। फिर उसने उन पर कृपा-दृष्टि की ताकि वे पलट आएँ। निस्संदेह अल्लाह ही तौबा क़बूल करनेवाला, अत्यन्त दयावान है। (अल-तौबा: 118)

अल्लाह शक्तिशाली और समर्थ है, उसकी मदद अपने भक्तों और निकटवर्ती मित्रों के लिए है, उसके सिवा कोई प्रबल नहीं, उसकी मदद पर भरोसा; यक़ीन का हिस्सा है, अल्लाह का कथन है:

﴿إِن يَنصُرۡكُمُ ٱللَّهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمۡۖ وَإِن يَخۡذُلۡكُمۡ فَمَن ذَا ٱلَّذِي يَنصُرُكُم مِّنۢ بَعۡدِهِۦۗ﴾

यदि अल्लाह तुम्हारी सहायता करे, तो कोई तुम पर प्रभावी नहीं हो सकता। और यदि वह तुम्हें छोड़ दे, तो फिर कौन है जो उसके पश्चात तुम्हारी सहायता कर सके। (आल इमरान: 160)

वह पवित्र हस्ती दयालु और कृपालु है, जिसने भी उस पर विश्वास किया, अच्छे कर्म किए और उसकी दया की प्राप्ति की आशा की; उसने उसे पा लिया। नबी ﷺ फरमाते हैं: "जब अल्लाह ने सृष्टि की रचना की तो अपनी किताब में लिख दिया - वह किताब अर्श (सिंहासन) के ऊपर उसी के पास है- कि मेरी दया मेरे क्रोध से आगे है।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

जिस का जीवन भी संकुचित हो गया है; रब के प्रति उसका अच्छा विचार बहुतायत और राहत है, नबी ﷺ ने कहा: "जो भी भुखमरी से पीड़ित है और अपनी भुखमरी को लोगों के सामने पेश करता है; उसकी भुखमरी दूर नहीं होगी, इसी प्रकार जो भुखमरी से पीड़ित है और अपनी भुखमरी को अल्लाह के सामने पेश करता है, तो अल्लाह उसे तत्काल या देर से जीविका अवश्य प्रदान करेगा।" (सुनन तिर्मिज़ी)

ज़ुबैर बिन अव्वाम (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने अपने पुत्र अब्दुल्लाह (रज़ियल्लाहु अन्हु) से कहा: "हे मेरे पुत्र! यदि तुम उधार चुकाने में असमर्थ हो जाओ तो मेरे स्वामी से सहायता

मांग लो। पुत्र कहता है: अल्लाह की क़सम उनके कहने का तात्पर्य मैं नहीं समझ पाया, तो मेंने उनसे पूछा: पिता जी! आपका स्वामी कौन है? उन्होंने कहा: अल्लाह। फिर कहते हैं: अल्लाह की क़सम मैं कभी भी उनके उधार के संकट में पड़ा; तो इस तरह दुआ की : हे ज़ुबैर के स्वामी उनका उधार चुका दे, तो वह (रब) चुकाता रहा।" (सही बुखारी)

वह पवित्र हस्ती क्षमा करने और देने में पर्याप्त है, जो भी उसकी निस्पृहता, उदारता और क्षमा के प्रति उसके बारे में अच्छा विचार रखता है वह (अल्लाह) उसकी माँग पूरी करता है। वह पवित्र ईश्वर निकटवर्ती आकाश में हर रात तीसरे पहर उतरता है और कहता है: "है कोई मुझे पुकारने वाला कि मैं उसकी सुनूँ? है कोई मुझसे माँगने वाला कि मैं उसे दूँ? है कोई क्षमा याचना करने वाला कि मैं उसे क्षमा कर दूँ?" (सही बुखारी व सही मुस्लिम) उस पवित्र हस्ती के दोनों हाथ भरे हैं, "खर्च करने से उसमें कोई कमी नहीं आती, वो दिन रात लगातार लुटाता रहता है।"

अल्लाह तौबा कबूल करने वाला है, वह अपने भक्तों की तौबा पर आनन्दित होता है, रात में अपना हाथ फैलाता है ताकि दिन का पापी पश्चाताप कर सके, और दिन में अपना हाथ बढ़ाता है ताकि रात का पापी पश्चाताप कर सके। ये उसके गुणों की पूर्णता ही है कि वो अपने दरबार में आने वालों को वापस नहीं करता। बंदे को सबसे अधिक, अपने रब के प्रति अच्छे विचार की आवश्यकता उस समय होती है जब उसकी मृत्यु निकट आ जाती है और वो दुनिया को अलविदा कहकर अपने रब की ओर जाने लगता है, नबी ﷺ कहते हैं: "आप में से प्रत्येक व्यक्ति को अपने रब के प्रति अच्छा विचार रखने की हालत में ही मौत आनी चाहिए।" (सही मुस्लिम)

इस इबादत (अर्थात: अल्लाह के प्रति अच्छे विचार) में अल्लाह की आज्ञा का पालन और भक्ति की पूर्ति होती है, बंदे के लिए वही है जो वह अपने रब के प्रति सोचता है, नबी ﷺ ने कहा: "अल्लाह सर्वशक्तिमान कहता है: मैं वैसा ही हूँ जैसा मेरा भक्त मेरे बारे में विचार रखता है, जब वह मुझे याद करता है तो मैं उसके साथ होता हूँ।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम) श्री इब्ने-मसऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा: "एक भक्त अल्लाह के बारे में अच्छा विचार रखता है तो अल्लाह उसे उसके विचार अनुसार देता है; क्यूंकि सारी अच्छाई उसी पवित्र हस्ती के हाथ में है।"

जब बंदे को अपने रब पर नेक विचार रखने की खूबी मिलती है; तो ईश्वर उसके लिए धर्म में अच्छाई का एक बड़ा द्वार खोल देता है, श्री इब्ने मसऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा: "उस हस्ती की क़सम जिसके अलावा कोई पूजनीय नहीं है! एक ईमान वाले बंदे को अल्लाह के प्रति अच्छे विचार से बेहतर कुछ नहीं दिया गया।"

लोगों के कर्म रब के प्रति उनके विचार की मात्रा अनुसार होते हैं, सो मोमिन ईश्वर के प्रति भला सोचता है, फिर भले कर्म करता है। रही बात अविश्वासी की; तो वह ईश्वर के प्रति बुरा विचार रखता है, फिर बुरे कर्म करता है। इस इबादत में इस्लाम की सुंदरता और ईमान की पूर्णता है, ये इबादत अपने स्वामी के लिए स्वर्ग का मार्ग है, यह एक हार्दिक पूजा (दिल की इबादत) है जो अल्लाह पर विश्वास और भरोसे को जन्म देती है। श्री इब्नुल-क़य्यिम (उन पर अल्लाह की दया हो) कहते हैं: "अपने रब के प्रति तुम्हारा जितना अच्छा विचार और अच्छी आशा होगी; तुम्हें उस पर उतना ही भरोसा होगा, इसी लिए कुछ (विद्वानों) ने भरोसे को अल्लाह के प्रति अच्छे विचार से परिभाषित किया है, सत्य तो यह है कि अल्लाह के प्रति अच्छा विचार उस पर भरोसे की ओर आमंत्रित करता है, क्यूंकि जिसके प्रति आपके विचार ही बुरे हों उस पर भरोसे की कल्पना ही नहीं की जा सकती, इसी प्रकार जिससे कोई आशा न हो उस पर भी भरोसा नहीं किया जा सकता।"

दिल की शांति, अल्लाह की ओर झुकाव और उसके सामने पश्चाताप करना अल्लाह के प्रति अच्छे विचार के प्रभावों में से एक है। ईमान के बाद, सीने को खोलने और विस्तार देने वाला साधन; अल्लाह पर भरोसे और उससे आशा से बढ़ कर कुछ नहीं, इसमें कुछ ऐसा है जो अपने लोगों को आशावाद की ओर आमंत्रित करता है, नबी ﷺ कहते हैं: "कोई छुआछूत नहीं, कोई अपशकुन नहीं, हाँ मुझे शुभ-शकुन (आशावाद) पसंद है।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम) श्री अल-हलीमी (उन पर अल्लाह की दया हो) कहते हैं: "अपशकुन लेना अल्लाह के प्रति बुरे विचार (का प्रतीक) है और शुभ-शकुन अल्लाह के प्रति अच्छे विचार (का प्रतीक) है।"

अल्लाह के प्रति शुभ विचार; उदारता और साहस के पथ पर, शुभ विचारक का सहायक होता है और उसे शक्ति प्रदान करता है। श्री अबू-अब्दुल्लाह साजी (उन पर अल्लाह की दया हो) कहते हैं: "जिसने अल्लाह पर भरोसा रखा उसने अपनी ताकत सुरक्षित कर ली, यही सबसे अच्छा प्रावधान और एक उत्कृष्ट सामान है।" श्री सलमा बिन दीनार (उन पर अल्लाह की दया हो) से कहा गया: "हे अबू हाज़िम! तुम्हारा धन क्या है? उन्होंने कहा: अल्लाह पर भरोसा और जो कुछ लोगों के हाथों में है उससे निस्पृहता।"

जो अपने रब के प्रति अच्छा विचार रखता है उसका हृदय उदार और अल्लाह के कथन पर विश्वास रखते हुए धन के प्रति दानशील हो जाता है:

﴿وَمَآ أَنفَقْتُم مِّن شَىْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهُۥ﴾

और जो कुछ भी तुमने ख़र्च किया, उसकी जगह वह तुम्हें और देगा। (सबा: 39)

श्री सुलैमान दारानी (उन पर अल्लाह की दया हो) कहते हैं: जो अपनी आजीविका में अल्लाह पर भरोसा रखता है; अल्लाह उसके अच्छे व्यवहार में बढ़ोतरी देता है, तत्पश्चात उसे सहनशीलता प्रदान करता है, उसका दिल खर्च करने में दानशील हो जाता है और नमाज़ में शैतानी वसवसा कम हो जाता है।"

अल्लाह के प्रति अच्छा विचार रखने वाला अल्लाह के पास मौजूद चीज़ों में आशा, उसके वचन पर भरोसे और उसके अनुग्रह की उम्मीद में भलाई के मार्ग पर दौड़ा चला जाता है, जैसा कि अल्लाह के कथन में आया है:

﴿وَمَا يَفْعَلُواْ مِنْ خَيْرٍ فَلَن يُكْفَرُوهُ﴾

जो नेकी भी वे करेंगे, उसकी अवमानना न होगी। (आल इमरान: 115)

अल्लाह अपने बंदों के साथ वैसा ही व्यवहार करता है जैसा वे उसके विषय में सोचते हैं, प्रतिफल कर्म के प्रकार के अनुरूप मिलता है, सो जो भी अच्छा सोचता है उसके लिए अच्छा होता है और जो अच्छाई के अतिरिक्त सोचता है वो नुकसान उठाता है, नबी ﷺ ने कहा: "सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा: मैं वैसा ही हूँ जैसा मेरा बंदा मेरे बारे में सोचता है, तो वह जो चाहे मेरे बारे में विचार रखे; जिसने मेरे प्रति अच्छे विचार रखे उसके लिए अच्छा है और जो मेरे बारे में बुरा विचार रखता है उसके लिए बुरा है।" (मुस्नद-अहमद)

जब बंदा अल्लाह के प्रति अच्छा विचार रखेगा तो अल्लाह उसे कभी भी निराश नहीं करेगा। क़यामत के दिन अपने रब के प्रति अच्छे विचार रखने वाले कहेंगे:

﴿هَاؤُمُ اقْرَءُواْ كِتَابِيَهْ * إِنِّي ظَنَنتُ أَنِّي مُلَاقٍ حِسَابِيَهْ * فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَّاضِيَةٍ * فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ﴾

"लो पढ़ो, मेरा कर्म-पत्र! मैं तो समझता ही था कि मुझे अपना हिसाब मिलनेवाला है।" अतः वह उच्च जन्नत में सुख और आनन्दमय जीवन में होगा। (अल-हाक़्क़ा: 19-22)

फिर, हे मुस्लिमो!

अल्लाह उदार, विशाल, शक्तिशाली और महान है, वह जब कुछ चाहता है तो कहता है: "हो जा", फिर वह हो जाता है। उसने अपनी पुस्तक (क़ुरआन) के संरक्षण और अपने धर्म की मदद वादा किया है, और परिणाम को परहेज़गारों के हक में आरक्षित कर दिया है, वह जिसे चाहता है बिना हिसाब किताब प्रदान करता है और जो उसकी शरण में आता है उसके कष्ट दूर कर देता है।

अल्लाह के बारे में जिसका ज्ञान बढ़ता है; अल्लाह पर उसका विश्वास भी बढ़ जाता है, जो उसके प्रति कुविचार रखता है; वह उसके नामों और गुणों की पूर्णता से अनभिज्ञ होने

के कारण ऐसा करता है, यह जाहिलिय्यत वालों की विशेषताओं में से एक है। पवित्र अल्लाह का कथन है:

﴿يَظُنُّونَ بِٱللَّهِ غَيْرَ ٱلْحَقِّ ظَنَّ ٱلْجَٰهِلِيَّةِ﴾

वे अल्लाह के विषय में ऐसा ख़याल कर रहे थे, जो सत्य के सर्वथा प्रतिकूल, अज्ञान (काल) का ख़याल था। (आल इमरान: 154)

अल्लाह के नामों और गुणों पर ईमान के कुछ फल: उसके बारे में अच्छा विचार, उस पर भरोसे और मामलों को उसके हवाले करने की सूरत में मिलते हैं।

मैं शापित शैतान से अल्लाह की पनाह माँगता हूँ

﴿فَمَا ظَنُّكُم بِرَبِّ ٱلْعَٰلَمِينَ﴾

तो तुम समस्त संसार के प्रभु के बारे में क्या विचार रखते हो? (अल-साफ़्फ़ात: 87)

अल्लाह मुझे और आपको पवित्र कुरआन के प्रति आशीर्वाद दे...

दूसरा ख़ुतबा

अल्लाह की स्तुति है उसके एहसान पर, उसका धन्यवाद है उस की तोफ़ीक़ और कृपा पर, मैं अल्लाह की शान को महान मानते हुए गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके भक्त और दूत हैं, उन पर, उनके परिवार पर और उनके साथियों पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद बना रहे।

अल्लाह की प्रशंसा और नबी पर दरूद के बाद:

हे मुस्लिमो!

अल्लाह के प्रति अच्छे विचार की वास्तविकता कर्म की अच्छाई में प्रकट होती है, यह एहसान (कर्म की शुद्धता व सुंदरता) के साथ उपयोगी है, अपने रब के प्रति सबसे अच्छे विचार वाले लोग ही: अल्लाह के सबसे आज्ञाकारी होते हैं, जब भी भक्त अपने प्रभु के बारे में अच्छा सोचता है; उसका कर्म भी अवश्य अच्छा होता है, जिसका कर्म बुरा होता है; उसके विचार भी बुरे होते हैं। जब अच्छे विचार के साथ साथ पाप भी हो रहा हो; तो वो अल्लाह की चाल से निडरता[1] का प्रतीक है, अच्छा विचार अगर विचारक को आज्ञाकारिता पर प्रोत्साहित करे; तो यह लाभकारी होता है और जब दिल में ये (अच्छा विचार) घट जाता है; तो अंगों से पाप प्रकट होते हैं।

फिर जान लो कि अल्लाह ने तुम्हें अपने नबी पर दरूद और सलाम भेजने का हुक्म दिया है...

(1) अल्लाह की चाल से निडरता एक बहुत घातक बीमारी है, जिसके रहते इंसान सही मानों में मोमिन नहीं बन सकता।

तौहीद को दूषित करने वाली चीज़ें[1]

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, हम उसकी प्रशंसा करते हैं, उसी से सहायता और अपने पापों की क्षमा मांगते हैं, हम अपने प्राण और कर्म की बुराइयों से उसकी शरण चाहते हैं। वह जिसे सत्य मार्ग पर चला दे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे वह भटका दे उसे कोई सत्य मार्ग पर चला नहीं सकता। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह एक है, उसका कोई साझी नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, सलाम व शांति हो उन पर, उनके परिवार और उनके पवित्र साथियों पर।

अल्लाह की प्रशंसा और नबी पर दरूद के बाद:

हे अल्लाह के बंदो! अल्लाह से डरो, जैसे डरना चाहिए; जो अपने रब से डरेगा मुक्ति पाएगा, जो उसकी याद से मुँह मोड़ेगा बर्बाद हो जाएगा।

हे मुस्लिमो!

बंदे की खुशी अल्लाह के लिए भक्ति की पूर्णता में है, भक्ति अल्लाह के लिए कर्म को शुद्ध करने और नबी ﷺ के मार्गदर्शन का पालन करने से सार्थक होती है, जब बंदा ऐसा कर्म करता है जिसमें अल्लाह के लिए शुद्धता न हो तो उसका कर्म व्यर्थ है, सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा:

﴿وَقَدِمْنَآ إِلَىٰ مَا عَمِلُواْ مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنَٰهُ هَبَآءً مَّنثُورًا﴾

हम बढ़ेंगे उस कर्म की ओर जो उन्होंने किया होगा और उसे उड़ती धूल बना देंगे। (अल-फुरक़ान: 23)

यदि वह अपने कर्म में ईश्वर के प्रति शुद्धता तो रखता है, मगर नबी ﷺ के मार्गदर्शन का पालन नहीं करता तो भी उसका कर्म (अस्वीकार कर) वापस लौटा दिया जाएगा; नबी

(1) ये ख़ुतबा मस्जिद-ए-नबवी में जुमे के दिन 28/12/1426 हिजरी को दिया गया।

ﷺ कहते हैं: "जो व्यक्ति ऐसा कर्म करता है जिसपर हमारी आज्ञा न हो, वह रद्द (अस्वीकार्य) है।" (सही मुस्लिम)

अगर कर्म शुद्ध और सही है तो उसे स्वीकार किया जाएगा और उसकी सराहना भी की जाएगी। सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा:

﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَعَمِلُواْ ٱلصَّٰلِحَٰتِ كَانَتۡ لَهُمۡ جَنَّٰتُ ٱلۡفِرۡدَوۡسِ نُزُلًا﴾

निश्चय ही जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए; उनके आतिथ्य के लिए फ़िरदौस के बाग़ होंगे। (अल-कह्फ: 107)

धर्म इंकार और इक़रार पर आधारित है, इन दोनों के बिना व्यक्ति का इस्लाम मान्य नहीं है: अन्य (मनुष्य रचित) भगवानों और उनके मानने वालों से दूरी अपनाना, और केवल अल्लाह की पूजनीयता साबित करना। अल्लाह का कथन है:

﴿فَمَن يَكۡفُرۡ بِٱلطَّٰغُوتِ وَيُؤۡمِنۢ بِٱللَّهِ فَقَدِ ٱسۡتَمۡسَكَ بِٱلۡعُرۡوَةِ ٱلۡوُثۡقَىٰ لَا ٱنفِصَامَ لَهَاۗ
وَٱللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ﴾

तो अब जो कोई बढ़े हुए सरकश को ठुकरा दे और अल्लाह पर ईमान लाए, उसने ऐसा मज़बूत सहारा थाम लिया जो कभी टूटनेवाला नहीं। अल्लाह सब कुछ सुनने, जाननेवाला है। (अल-बक़रह: 256)

नबी ﷺ ने कहा: "जो "ला इलाह: इल्लल्लाह" (अल्लाह के अलावा कोई पूज्य नहीं) कहता है और अल्लाह के अलावा समस्त (मानव रचित) पूजनीय वस्तुओं का इंकार करता है; उसका धन और रक्त हराम (सम्मानित/सुरक्षित) है, और उसका हिसाब किताब अल्लाह के पास होगा।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

इस्लाम में सबसे बड़ा आदेश तौहीद का आदेश है और सबसे बड़ा निषेध इसके विपरीत (शिर्क/बहुदेववाद) का निषेध है; नबी ﷺ से पूछा गया: "कौन सा पाप सबसे बड़ा है? आपने फ़रमाया: ये कि तुम अल्लाह का कोई समकक्ष बनाओ जबकि उसी ने तुम्हारी रचना की है।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम) समस्त नबियों की दावत (धार्मिक मिशन) पूजनीयता में अल्लाह को एक करार देने और शिर्क या शिर्क की सीमाओं में पड़ने से सावधानी के आधार पर सर्वसम्मत थी:

﴿وَلَقَدۡ بَعَثۡنَا فِي كُلِّ أُمَّةٖ رَّسُولًا أَنِ ٱعۡبُدُواْ ٱللَّهَ وَٱجۡتَنِبُواْ ٱلطَّٰغُوتَۖ﴾

हमने हर समुदाय में एक रसूल भेजा कि "अल्लाह की बंदगी करो और ताग़ूत (झूठे भगवानों) से बचो।" (अल-नह्ल: 36)

जो अल्लाह की इबादत में उसी प्रकार लगा रहे जैसे महान सर्वोच्च अल्लाह ने आदेश दिया है तो वह अपने प्राण, धन, संतान और घर के मामले में सुरक्षित हो जाता है, इसी प्रकार अपनी क़ब्र तथा पुनरुत्थान और हिसाब किताब के दिन भी सुरक्षित हो जाता है, पवित्र अल्लाह का कथन है:

﴿ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَلَمْ يَلْبِسُوٓا۟ إِيمَـٰنَهُم بِظُلْمٍ أُو۟لَـٰٓئِكَ لَهُمُ ٱلْأَمْنُ وَهُم مُّهْتَدُونَ﴾

"जो लोग ईमान लाए और अपने ईमान में किसी ज़ुल्म (शिर्क) की मिलावट नहीं की, वही लोग हैं जो भय मुक्त हैं और वही सीधे मार्ग पर हैं।" (अल-अनआम: 82)

सच्ची तौहीद पापों को शुद्ध करने वाली, त्रुटियों को मिटाने वाली और नरक की आग में प्रवेश से बचाने वाली होती है, नबी ﷺ का कथन है: "अल्लाह ने उन लोगों के लिए नरक को हराम कर दिया है जो "ला इलाह: इल्लल्लाह" (अल्लाह के अलावा कोई पूज्य नहीं) कहते हैं और उसके माध्यम से केवल अल्लाह की खुशी को खोजते हैं।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

जो अनिवार्य और ऐच्छिक (दोनों प्रकार की) तौहीद को सार्थक करता है वो बिना हिसाब जन्नत में प्रवेश करेगा, नबी ﷺ ने उनकी कुछ विशेषताएं बताई हैं: "ये ऐसे लोग होंगे जो झाड़-फूंक नहीं करवाते होंगे, न (इलाज के लिए गर्म वस्तु से) दाग लगाते होंगे और न ही अपशकुन करते होंगे, वे बस अपने रब पर भरोसा रखेंगे।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम) उनके मन अल्लाह से जुड़े रहते हैं और उनके दिल समस्त मामले उसी के हवाले कर देते हैं।

शिर्क का परिणाम भयानक होता है, ये सत्कर्मों को नष्ट करता है और ईश्वर को क्रोधित करता है; सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा:

﴿وَلَقَدْ أُوحِىَ إِلَيْكَ وَإِلَى ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِكَ لَئِنْ أَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ ٱلْخَـٰسِرِينَ﴾

"आप और आप से पहले वालों की ओर वाणी भेजी गई कि अगर तुम शिर्क करते हो तो निश्चित रूप से तुम्हारा सत्कर्म मिट जाएगा और तुम घाटा उठाने वालों में से हो जाओगे।" (अल-ज़ुमर: 65)

नबी ﷺ ने कहा: "जिसकी मृत्यु अल्लाह को छोड़ कर उसके किसी अन्य (तथाकथित) समकक्ष से दुआ करने की अवस्था में होगी वह आग में प्रवेश करेगा।"

(सही बुखारी) बल्कि यह कुकर्म आग में अनंत काल तक (दण्डित) रहने को अनिवार्य कर देता है, जैसा की अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَغۡفِرُ أَن يُشۡرَكَ بِهِۦ وَيَغۡفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَن يَشَآءُۚ﴾

निस्संदेह अल्लाह अपने साथ शिर्क (अन्य को साझीदार बनाने को) क्षमा नहीं करता लेकिन इसके अलावा जिसे चाहता है (उसके अन्य पापों को) क्षमा कर देता है। (अल-निसा: 48)

चूंकि शिर्क लोक परलोक में विनाश का कारण है; इस लिए अल्लाह के मित्र पैग़ंबर इब्राहीम (उन पर शांति हो) ने स्वयं को शिर्क से बचाने के लिए अपने प्रभु से दुआ की थी, अल्लाह ने जिसकी सूचना देते हुए फ़रमाया:

﴿وَٱجۡنُبۡنِي وَبَنِيَّ أَن نَّعۡبُدَ ٱلۡأَصۡنَامَ﴾

(हे रब!) मुझे और मेरी सन्तान को मूर्ति पूजा से बचाए रखना। (इब्राहीम: 35)

श्री इब्राहीम तैमी (उन पर अल्लाह की दया हो) कहते हैं: "भला इब्राहीम के बाद कौन है जो भी शिर्क से निर्भय हो सकता है!"

सबसे अच्छी बात जिसकी ओर उपदेशक बुलाता है: वह तौहीद का शब्द और उसका तात्पर्य है, नबी ﷺ ने मुआज़ बिन जबल (रज़ियल्लाहु अन्हु) से कहा था: "तुम एक ग्रंथ वाले समुदाय के पास जा रहे हो; सो पहली बात जिसकी ओर उन्हें आमंत्रित करना है; वह है: इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं है।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

जो कोई अल्लाह के सिवा किसी और से दुआ करता है; वह स्वयं पर अत्याचार करता है:

﴿وَلَا تَدۡعُ مِن دُونِ ٱللَّهِ مَا لَا يَنفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَۖ فَإِن فَعَلۡتَ فَإِنَّكَ إِذٗا مِّنَ ٱلظَّٰلِمِينَ﴾

और अल्लाह से हटकर उसे न पुकारो जो तुम्हें कुछ भी नफा नुकसान नहीं पहुँचा सकता, क्योंकि यदि तुमने ऐसा किया तो उस समय तुम अत्याचारियों में से हो जाओगे। (यूनुस: 106)

जो लाभ की आशा रखते हुए मूर्ति के आगे घुटने टेकता है या किसी क़ब्र के आगे झुकता है; वो असम्भव की तलाश में है और रेत को पानी समझ बैठा है:

﴿وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّن يَدْعُوا۟ مِن دُونِ ٱللَّهِ مَن لَّا يَسْتَجِيبُ لَهُۥٓ إِلَىٰ يَوْمِ ٱلْقِيَـٰمَةِ وَهُمْ عَن دُعَآئِهِمْ غَـٰفِلُونَ ۞ وَإِذَا حُشِرَ ٱلنَّاسُ كَانُوا۟ لَهُمْ أَعْدَآءً وَكَانُوا۟ بِعِبَادَتِهِمْ كَـٰفِرِينَ﴾

आख़िर उस व्यक्ति से बढ़कर पथभ्रष्ट और कौन होगा, जो अल्लाह से हटकर उन्हें पुकारता है जो क़यामत के दिन तक उसकी पुकार को स्वीकार नहीं कर सकते, बल्कि वे तो उनकी पुकार से भी बेख़बर हैं; और जब लोग इकट्ठे किए जाएंगे तो वे उनके शत्रु होंगे और उनकी बंदगी का इंकार करेंगे। (अल-अहक़ाफ: 5-6)

मृतकों से दुआ माँगना और उनसे अपनी ज़रूरतों का सवाल करना वास्तव में एक अनसुनी पुकार और लगातार चलने वाली पीड़ा है:

﴿وَٱلَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِهِۦ مَا يَمْلِكُونَ مِن قِطْمِيرٍ ۞ إِن تَدْعُوهُمْ لَا يَسْمَعُوا۟ دُعَآءَكُمْ وَلَوْ سَمِعُوا۟ مَا ٱسْتَجَابُوا۟ لَكُمْ ۖ وَيَوْمَ ٱلْقِيَـٰمَةِ يَكْفُرُونَ بِشِرْكِكُمْ ۚ وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيرٍ﴾

और उस अल्लाह को छोड़ कर जिन्हें तुम पुकारते हो वे खजूर की गुठली के छिलके के भी मालिक नहीं हैं, यदि तुम उन्हें पुकारो तो वे तुम्हारी पुकार सुनेंगे ही नहीं। और यदि वे सुनते; तो भी तुम्हारी याचना स्वीकार न कर सकते और क़यामत के दिन वे तुम्हारे साझी ठहराने का इंकार कर देंगे। पूरी ख़बर रखनेवाले (अल्लाह) की तरह तुम्हें कोई न बताएगा। (फ़ातिर: 13-14)

मृतकों और अच्छे लोगों में ग़ुलू (अतिशयोक्ति) आदम की सन्तान के अविश्वास और धर्म त्याग का कारण बनी, जबकि नबी मुस्तफा ﷺ ने लोगों को यह कहकर चेतावनी दी है: "धर्म में अतिशयोक्ति से बचो; क्यूंकि धर्म में अतिशयोक्ति ने तुमसे पूर्व के लोगों को तबाह किया है।" (सुनन नसई) सर्जित जीवों में सबसे दुष्ट वो हैं जो कब्रों के पास बैठ जाते हैं और अल्लाह को छोड़कर उन्हें पुकारने लगते हैं, नबी ﷺ ने उम्मे-सलमह (रज़ियल्लाहु अन्हा) से कहा: "ये लोग ऐसे हैं कि जब उनमें से कोई अच्छा आदमी या अच्छा भक्त मर जाता तो उसकी क़ब्र के पास एक पूजा स्थल बना देते और उसमें इस तरह के चित्र बनाते, यह लोग अल्लाह के निकट सबसे दुष्ट सर्जित जीव हैं।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

जादू ईमान के प्रकाश को बुझा देता है और इस्लाम को नष्ट कर देता है:

﴿وَلَقَدْ عَلِمُوا۟ لَمَنِ ٱشْتَرَىٰهُ مَا لَهُۥ فِى ٱلْـَٔاخِرَةِ مِنْ خَلَـٰقٍ﴾

वे बिल्कुल जान चुके थे कि जो इस (जादू) को ख़रीदेगा उसका परलोक में कोई हिस्सा नहीं होगा। (अल-बक़रह: 102)

टोना टोटका वाले पुजारियों के पास आना जाना धर्म में बिगाड़ और बुद्धि में कमी का प्रतीक है, अल्लाह का कथन है:

﴿قُل لَّا يَعۡلَمُ مَن فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِ ٱلۡغَيۡبَ إِلَّا ٱللَّهُۚ﴾

कह दो आकाश व धरती में अल्लाह के अलावा कोई ग़ैब (अनदेखे) को नहीं जानता। (अल-नम्ल: 65)

नबी ﷺ ने फ़रमाया: "जो टोना टोटका वाले पुजारियों और भविष्य बताने वाले ज्योतिषियों के पास जाता है और किसी विषय में प्रश्न करता है फिर उसे सत्य समझता है; तो वह मुहम्मद ﷺ पर उतरे हुए धर्म का इंकार करता है।" (मुस्नद अहमद)

तावीज़; जैसे कि कड़े, डोरियां, सीपियां और इसी तरह की चीजें, अपने पहनने वाले के लिए अल्लाह पर भरोसे में कमज़ोरी और दुर्बलता ही बढ़ाते हैं, नबी ﷺ ने एक व्यक्ति को देखा जिसके हाथ में पीतल का कड़ा था, तो आपने उससे कहा: सत्यानाश हो! यह क्या है? उसने कहा: यह एक रोग के कारण है, आपने फ़रमाया: यह तुम्हारी कमज़ोरी को ही बढ़ाएगा, इसे अपने से दूर फेंक दो, अगर तुम्हारी मृत्यु इस कड़े को पहनने की अवस्था में हो गई; तो तुम कभी भी सफल नहीं हो सकते। (मुस्नद अहमद)

तावीज़ पहनना अल्लाह के साथ शिर्क करना (साझी बनाना) है, नबी ﷺ ने फ़रमाया: "जिसने तावीज़ लटकाया उसने शिर्क किया।" (मुस्नद अहमद) जिसने कोई चीज़ लटकाई; अल्लाह उसे उसी लटकती चीज़ के हवाले कर देता है, फिर वह बर्बाद हो जाता है, नबी ﷺ ने फ़रमाया: "जिसने कोई चीज़ लटकाई उसे उसी के हवाले कर दिया जाता है।" (सुनन तिर्मिज़ी)

पेड़ों और पत्थरों से या उनके द्वारा आशीर्वाद की उम्मीद नहीं की जा सकती, क्यूंकि वे अल्लाह की रचित सृष्टि हैं जो नुकसान या लाभ नहीं दे सकते।

बलिदान के रूप में रक्त बहाना; केवल अल्लाह के लिए (वैध) है, जो अल्लाह के अलावा किसी और के लिए बलिदान करता है; वह शिर्क की कीचड़ में गिरकर गंदा हो जाता है, नबी ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह उन लोगों को शापित करे जो उसके अलावा अन्य के लिए बलिदान करते हैं।" (सही मुस्लिम)

मन्नत मानना एक इबादत है; यह अल्लाह के अलावा किसी और के लिए नहीं की जा सकती, नबी ﷺ ने फ़रमाया: "जो अल्लाह की आज्ञा में मन्नत मानता है वह (मन्नत पूरी

करके) उसकी आज्ञा का पालन कर ले और जो कोई उसकी अवज्ञा में मन्नत माँगता है तो (मन्नत पूरी करने में) उसकी अवज्ञा न करे।" (सही बुख़ारी)

जो कोई ईश्वर की शरण माँगता है ईश्वर उसको शरण देता है, जो दूसरों की ओर पनाह लेता है; वह उसे निराश करता है, नबी ﷺ कहते हैं: "जो भी किसी जगह ठहरे फिर यह दुआ पढ़े: मैं अल्लाह की सृष्टि की बुराई से उसके पूर्ण शब्दों की शरण माँगता हूँ (यह कहने के बाद) जब तक वह उस जगह से रवाना नहीं हो जाता तब तक उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।" (सही मुस्लिम)

जब काल के संकट और समय की पीड़ा तुम पर आ जाए तो अल्लाह के अलावा किसी और से मदद मत मांगो, उसके सिवा किसी अन्य से दुआ मत करो, न ही क़ब्र में पड़े मृतक या उसकी अवशेषों के आगे झुको, अपनी मनोकामना आकाश वाले (अल्लाह) को पेश करो; क्यूंकि वहाँ दुआ कबूल की जाती है:

﴿أَمَّن يُجِيبُ ٱلْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ﴾

या वह जो व्यग्र की पुकार सुनता है, जब वह उसे पुकारता है। (अल-नम्ल: 62)

विपत्ति से भागने का कोई स्थान नहीं है:

﴿أَحَسِبَ ٱلنَّاسُ أَن يُتْرَكُوٓاْ أَن يَقُولُوٓاْ ءَامَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُونَ﴾

क्या लोगों ने यह समझ रखा है कि वे इतना कह देने मात्र से छोड़ दिए जाएँगे कि "हम ईमान लाए" और उनकी परीक्षा न की जाएगी? (अल-अंकबूत: 2)

यदि आप पर कोई विपत्ति आती है तो संतोष और समर्पण के साथ उसका सामना करें, सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा:

﴿وَمَن يُؤْمِنۢ بِٱللَّهِ يَهْدِ قَلْبَهُۥ﴾

जो अल्लाह पर ईमान ले आता है; अल्लाह उसके दिल को मार्ग दिखाता है। (अल-तग़ाबुन: 11)

अलकमा (उन पर अल्लाह की दया हो) कहते हैं: "आयत में वह पुरुष मुराद है जो विपत्ति से पीड़ित होता है और यकीन रखता है कि यह अल्लाह की ओर से है; तो वह संतुष्ट और (उसकी आज्ञा के आगे) समर्पित हो जाता है।"

लिखित नियति पर क्रोधित न हों, क्योंकि नाराजगी नियति को मिटाया नहीं करती, नियति घटित होने से पूर्व की सावधानी में कमी पर "अगर मगर" द्वारा पछतावे से बचें, क्योंकि ये "अगर मगर" शैतान की ओर से होता है, नबी ﷺ ने फ़रमाया: "स्वयं हेतु

लाभकारी चीज़ों में उत्सुकता लो, अल्लाह से मदद मांगो और बेबस न बनो, तुम्हें यदि कुछ विपत्ति हो तो यह न कहो: यदि ऐसा करता तो ऐसा हो जाता, बल्कि कहो: अल्लाह ने जो नियति में लिखा और जो इच्छा की वही किया, क्यूंकि अगर मगर शैतान के कुकर्म (का विषय) छेड़ देता है।" (सही मुस्लिम)

अपने मामले अल्लाह को सौंप दो, क्योंकि इस संसार से तुम्हें आवंटित भाग के अलावा कुछ नहीं मिलेगा:

﴿قُل لَّن يُصِيبَنَآ إِلَّا مَا كَتَبَ ٱللَّهُ لَنَا﴾

कह दो, हमें कुछ भी पेश नहीं आ सकता सिवाय उसके जो अल्लाह ने लिख दिया है। (अल-तोब: 51)

उबादा बिन सामित (रज़ियल्लाहु अन्हु) अपने पुत्र से कहते हैं: "हे पुत्र! तुम्हें ईमान का स्वाद तब तक नहीं मिलेगा जब तक तुम्हें ज्ञान न हो जाए कि जो विपत्ति तुम तक पहुँची वह चूकने वाली नहीं थी और जो विपत्ति चूक गई वह पहुँचने वाली नहीं थी।"

मन और अंगों के साथ साधनों पर पूर्ण निर्भरता; तौहीद में दूषण है, जबकि साधन को पूर्ण अक्षम करना बेबसी है, आवश्यक यह है कि हृदय को अल्लाह से संबंधित रखते हुए उस पर भरोसा करके, वैध साधन को अपनाया जाए।

अल्लाह पर भरोसा करने से कठिनाई सरल होती है, आजीविका में विस्तार होता है और संकट छट जाता है।

अल्लाह की चाल से स्वयं को सुरक्षित समझना धोखा है:

﴿أَفَأَمِنُواْ مَكۡرَ ٱللَّهِۚ فَلَا يَأۡمَنُ مَكۡرَ ٱللَّهِ إِلَّا ٱلۡقَوۡمُ ٱلۡخَٰسِرُونَ﴾

आख़िर क्या वे अल्लाह की चाल से निश्चिन्त हो गए? तो (समझ लो कि) अल्लाह की चाल से तो वही लोग निश्चित होते है, जो घाटे में पड़नेवाले होते हैं। (अल-आराफ़: 99)

अल्लाह की कृपा से निराशा कुनूत (मायूसी) है, पवित्र अल्लाह का कथन है:

﴿وَمَن يَقۡنَطُ مِن رَّحۡمَةِ رَبِّهِۦٓ إِلَّا ٱلضَّآلُّونَ﴾

अपने रब की दयालुता से पथभ्रष्टों के सिवा और कौन निराश होगा? (अल-हिज्र: 56)

उम्मीद और ईश-भय को ईश-प्रेम के साथ एकत्रित करना ही बीच का मार्ग है।

शिर्क के कई गुप्त दरवाज़े हैं, शैतान बंदों को उनमें घुसाने का अनथक प्रयास करता है, नबी ﷺ ने फ़रमाया: "मैं तुम्हारे प्रति सबसे अधिक जिस चीज़ से भयभीत हूँ: वह छोटा शिर्क है।" आपसे पूछा गया (कि छोटा शिर्क किया है) तो आपने बताया: दिखावा। (मुस्नद अहमद)

दिखावा कर्मियों का रोग है, कर्म को बिगाड़ देता है और प्रभु को क्रोधित करता है, यह सत्कर्म वालों के लिए दज्जाल से अधिक भयावह है। नबी ﷺ ने फ़रमाया: "क्या मैं तुम्हें उसके विषय में नहीं बताऊं जो मेरे निकट तुम्हारे लिए दज्जाल से भी अधिक भयावह है? कहते हैं: हमने कहा: क्यूँ नहीं! आपने फ़रमाया: वह छिपा शिर्क है, अर्थात एक आदमी नमाज़ के लिए खड़ा होता है तो किसी व्यक्ति की उस पर नजर पड़ने के कारण, वो अपनी नमाज़ को सुशोभित करने लगता है।" (सुनन इब्ने-माजा) सत्कर्म से केवल अल्लाह से ही प्रतिफल की आशा की जा सकती है, इसके माध्यम से संसार की चमक दमक का इरादा नहीं किया जा सकता, जो भी अपने सत्कर्म द्वारा जीवन के श्रंगार से अपने मन को विचलित करता है; उसका कार्य निष्फल हो जाता है और वह परलोक में घाटा उठाएगा; पवित्र अल्लाह का कथन है:

﴿مَن كَانَ يُرِيدُ ٱلْحَيَوٰةَ ٱلدُّنْيَا وَزِينَتَهَا نُوَفِّ إِلَيْهِمْ أَعْمَٰلَهُمْ فِيهَا وَهُمْ فِيهَا لَا يُبْخَسُونَ ۞ أُو۟لَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ فِى ٱلْءَاخِرَةِ إِلَّا ٱلنَّارُ ۖ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوا۟ فِيهَا وَبَٰطِلٌ مَّا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ﴾

जो व्यक्ति सांसारिक जीवन और उसकी शोभा का इच्छुक हो तो ऐसे लोगों को उनके कर्मों का पूरा-पूरा बदला हम यहीं दे देते हैं और इसमें उनका कोई हक़ नहीं मारा जाता। यही वे लोग हैं जिनके लिए आख़िरत में आग के सिवा और कुछ भी नहीं। उन्होंने जो कुछ बनाया, वह सब वहाँ उनकी जान को लागू हुआ और उनका सारा किया-धरा मिथ्या होकर रहा। (हूद: 15-16)

एक मुस्लिम के लिए कोई भी वस्तु अल्लाह से बढ़ कर प्रिय और दिल में सम्मानित नहीं है, वह मुस्लिम के दिल में महान और विशाल होता है, जो अपने ईश-प्रेम में सच्चा है वह क़सम भी उसी की खाता है, उसके अलावा किसी और (जैसे काबा, नबी, ईमानदारी और अभिभावक) की क़सम खाना तौहीद में शिर्क करना है, नबी ﷺ ने फ़रमाया: "जिसने अल्लाह के अलावा किसी और की क़सम खाई; उसने कुफ्र या शिर्क किया है।" (सुनन तिर्मिज़ी)

हद से ज़्यादा क़सम खाना; दिल में मौजूद अल्लाह की महिमा के ख़िलाफ़ है, सो अपनी क़सम सुरक्षित रखो भले ही वह सत्य में हो, पवित्र अल्लाह ने कहा:

﴿وَٱحْفَظُوٓا۟ أَيْمَٰنَكُمْ﴾

और अपनी क़समों की रक्षा करो। (अल-माइदा: 89)

अपने झूठ में क़सम से सावधान रहो, क्योंकि यह एक ग़मूस (छलावा) है। अल्लाह की महिमा में से यह है कि उसी की क़सम पर संतुष्टि हो, चाहे सुनने वाला क़सम खाने वाले के झूठ को जानता हो। नबी ﷺ ने फ़रमाया: "अपने पुरखों की क़सम न खाया करो, जो अल्लाह की क़सम खाए तो सच ही बोले; जिसके लिए अल्लाह की क़सम खाई जाए उसे उस क़सम पर संतुष्ट हो जाना चाहिए, जो अल्लाह से राज़ी नहीं उसका अल्लाह से संबंध नहीं।" (सुनन इब्ने-माजा)

अल्लाह के नाम पर माँगने वाले को वापस न लौटाना भी अल्लाह के सम्मान की एक शक्ल है, नबी ﷺ ने फ़रमाया: "जो अल्लाह के नाम पर शरण चाहता है; उसे शरण दो, जो अल्लाह के नाम पर माँगता है; उसे प्रदान करो और जो तुम्हें पुकारता है उसे उत्तर दो।" (सुनन अबू-दाऊद)

काल और उसकी स्थितियों में उतार-चढ़ाव -जैसे गर्मी या सर्दी- की निंदा करना संसार के प्रभु के लिए कष्टदायक है, नबी ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह कहता है: "मुझे आदम का पुत्र कष्ट देता है; वो काल को गाली देता है जबकि मैं ही काल हूँ, मेरे हाथ में ही सारे मामले हैं, रात और दिन को मैं ही प्रचालित करता हूँ।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

धर्म के लिए ही आकाश और पृथ्वी की स्थापना की गई, स्वर्ग और नरक तय्यार किए गए; अत: धर्म, उसके विधानों और उसके अनुयायियों का उपहास; एक व्यक्ति को इस्लाम से निकाल देता है। महामहिम अल्लाह ने कहा:

﴿وَلَئِن سَأَلْتَهُمْ لَيَقُولُنَّ إِنَّمَا كُنَّا نَخُوضُ وَنَلْعَبُ قُلْ أَبِاللَّهِ وَآيَاتِهِ وَرَسُولِهِ كُنتُمْ تَسْتَهْزِئُونَ * لَا تَعْتَذِرُوا قَدْ كَفَرْتُم بَعْدَ إِيمَانِكُمْ﴾

और यदि तुम उनसे पूछो तो कह देंगे: हम तो केवल बातें और हँसी-खेल कर रहे थे। कहो, क्या तुम अल्लाह, उसकी आयतों और उसके रसूल के साथ हँसी-मज़ाक़ कर रहे थे? अब बहाने न बनाओ, तुमने अपने ईमान के पश्चात इंकार किया। (अल-तोबा: 65-66)

अल्लाह के प्रति बुरा विचार न रखो, -अर्थात: स्वयं को उससे अधिक का हक़दार मत समझो जितना तुम्हें मिला है या अपने अतिरिक्त किसी दूसरे के हाथ में अल्लाह ने कोई अनुग्रह प्रदान किया है तो उसे तुच्छ मत समझो- यह जाहिलिय्यत (अज्ञान) का विचार है, क्यूंकि संसार में सब अल्लाह के आदेश और उसकी बुद्धि से होता है :

﴿يَظُنُّونَ بِٱللَّهِ غَيْرَ ٱلْحَقِّ ظَنَّ ٱلْجَٰهِلِيَّةِ ۖ يَقُولُونَ هَل لَّنَا مِنَ ٱلْأَمْرِ مِن شَىْءٍ ۗ قُلْ إِنَّ ٱلْأَمْرَ كُلَّهُۥ لِلَّهِ ۗ﴾

वे अल्लाह के विषय में ऐसा ख़याल कर रहे थे, जो सत्य के सर्वथा प्रतिकूल, अज्ञान (काल) का ख़याल था। वे कहते थे, इन मामलों में क्या हमारा भी कुछ अधिकार है? कह दो, मामले तो सबके सब अल्लाह के (हाथ में) हैं। (आल इमरान: 154)

चित्रकारी करना महापापों में से एक है, चित्र बनाने वाले को नरक की आग की चेतावनी है, नबी ﷺ ने कहा: "हर चित्र बनाने वाला नरक में होगा, उसके द्वारा बनाए गए हर चित्र के लिए एक आत्मा बनाई जाएगी, जो उसे नरक में पीड़ा देगी।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

अपने रब का सम्मान करो जैसे कि करना चाहिए, क्योंकि वह अपने राज में महान है, अपने अर्श (सिंहासन) के ऊपर विराजमान है और अपने विधान के बारे में बुद्धिमान है। इसलिए नमाज़ों की पाबंदी करो जिन्हें ईश्वर ने तुम पर विशेष समयों में अनिवार्य किया है, इन में लापरवाही से सावधान रहो, क्यूंकि यह नमाज़ धर्म का स्तम्भ है। नबी ﷺ ने फ़रमाया: "हमारे और उनके बीच की वाचा नमाज़ है; अतः जिसने इसे छोड़ दिया उसने कुफ़्र (अविश्वास) किया।" (सुनन तिर्मिज़ी)

हर हालत में अपने रब की ओर अपना मुख कर लो, तुम्हारे कर्म ठीक हो जाएंगे।

मैं शापित शैतान से अल्लाह की पनाह माँगता हूँ:

﴿قُلْ إِنَّ صَلَاتِى وَنُسُكِى وَمَحْيَاىَ وَمَمَاتِى لِلَّهِ رَبِّ ٱلْعَٰلَمِينَ ۝ لَا شَرِيكَ لَهُۥ ۖ وَبِذَٰلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا۠ أَوَّلُ ٱلْمُسْلِمِينَ﴾

कहो: मेरी नमाज़, मेरा बलिदान, मेरा जीवन और मेरी मृत्यु सबकुछ अल्लाह के लिए है, वो सारे जहाँ का प्रभु है, उसका कोई साझी नहीं है, मुझे इसी का आदेश दिया गया है और मैं सबसे पहला आज्ञाकारी हूँ। (अल-अनआम: 162-163)

अल्लाह मुझे और आपको पवित्र क़ुरआन के प्रति आशीर्वाद दे ...

दूसरा ख़ुतबा

अल्लाह की स्तुति है उसके एहसान पर, उसका धन्यवाद है उस की तोफ़ीक़ और कृपा पर। मैं अल्लाह की शान को महान मानते हुए गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके भक्त और दूत हैं। उन पर, उनके परिवार पर और उनके साथियों पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद बना रहे।

अल्लाह की प्रशंसा और नबी पर दरूद के बाद:

हे मुस्लिमो!

धर्म आपके पास सबसे कीमती सम्पत्ति है, इसलिए फितनों (प्रलोभन) से बचकर अपने धर्म की रक्षा करें, क्योंकि यह फितने दिलों पर अधिग्रहण कर लेते हैं तथा संदेह और बुराइयों को लाते हैं, नबी ﷺ ने कहा : "जो फितनों (बौद्धिक प्रलोभन) की ओर झांकेगा; फितने उसे पकड़ लेंगे।" (सही बुखारी)

वर्जित महिलाओं के लिए आँखें मूंद लेना; मन की शुद्धि, ईश्वर की आज्ञाकारिता और (अल्लाह के हाँ) स्थान में उन्नति है। परमप्रधान अल्लाह ने कहा:

﴿قُل لِّلْمُؤْمِنِينَ يَغُضُّوا۟ مِنْ أَبْصَٰرِهِمْ وَيَحْفَظُوا۟ فُرُوجَهُمْ ۚ ذَٰلِكَ أَزْكَىٰ لَهُمْ﴾

विश्वासियों से कहो कि वे अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी लज्जा स्थानों की रक्षा करें; यह उनके लिए शुद्धता का कारण है। (अल-नूर: 30)

महिला का आभूषण उसके पर्दे में है, उसकी सुंदरता उसके निकाब में है और उसका श्रंगार धर्म को थामे रखने में है। सहाबा (रज़ियल्लाहु अनहुम) की पत्नियां; निकाब, पर्दे और लज्जा में उदाहरण हैं जिनका अनुसरण किया जाना चाहिए। पवित्र अल्लाह का कथन है:

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّبِىُّ قُل لِّأَزْوَٰجِكَ وَبَنَاتِكَ وَنِسَآءِ ٱلْمُؤْمِنِينَ يُدْنِينَ عَلَيْهِنَّ مِن جَلَٰبِيبِهِنَّ ۚ ذَٰلِكَ أَدْنَىٰٓ أَن يُعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذَيْنَ﴾

ऐ नबी! अपनी पत्नियों, अपनी बेटियों और ईमानवालों की स्त्रियों से कह दो कि वे अपने ऊपर अपनी चादरों का कुछ हिस्सा लटका लिया करें। इससे इस बात की अधिक सम्भावना है कि वे पहचान ली जाएं और सताई न जाएं। (अल-अहज़ाब: 59)

गाने सुनना उन पापों में से एक है जो दिल को अंधकारमय बना देते हैं और क़ुरआन सुनने से रोक देते हैं। नबी ﷺ कहते हैं: "मेरी उम्मत में कुछ लोग आयेंगे जो ज़िना (अवैध शारीरिक संबंध/व्यभिचार), रेशम, शराब और गाने बाजे के साधनों को हलाल बना लेंगे।" (सही बुखारी) एक भक्त जो सबसे अच्छी आवाज सुनता है वह संसार के प्रभु का कलाम (क़ुरआन) है जिसमें प्रकाश, मार्गदर्शन और उपचार है।

हलाल धन धर्म के लिए सुधार, शरीर में ताकत, बच्चों के लिए मार्गदर्शन और दान में आशीर्वाद का कारण, तथा दुआ कबूल होने और रसूलों के अनुसरण का साधन है। महान अल्लाह का कथन है:

﴿يَـٰٓأَيُّهَا ٱلرُّسُلُ كُلُوا۟ مِنَ ٱلطَّيِّبَـٰتِ وَٱعْمَلُوا۟ صَـٰلِحًا﴾

ऐ रसूलो! अच्छी पाक चीज़ें खाओ और अच्छा कर्म करो। (अल-मूमिनून: 51)

हराम (अवैध रास्ते से कमाए हुए) धन से बरकत नष्ट हो जाती है, ये बहुत नुकसानदायक होता है, उसके मालिक को बहुत पछतावा होता है और उसकी दुआ रद कर दी जाती है।

तो जान लो कि अल्लाह ने तुम्हें अपने नबी पर दरूद व सलाम भेजने का हुक्म दिया है ...

अल्लाह के शुभनाम[1]

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, हम उसकी प्रशंसा करते हैं, उसी से सहायता और अपने पापों की क्षमा मांगते हैं और अपने प्राण और कर्म की बुराइयों से उसकी शरण चाहते हैं। वह जिसे सत्य मार्ग पर चला दे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे वह भटका दे उसे कोई सत्य मार्ग पर चला नहीं सकता। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह एक है, उसका कोई साझी नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं। सलाम व शांति हो उन पर, उनके परिवार और उनके पवित्र साथियों पर।

अल्लाह की प्रशंसा और नबी पर दरूद के बाद:

अल्लाह के भक्तो! अल्लाह से डरो जैसे की उससे डरना चाहिए, जो अपने रब से डरा; वह मुक्ति पा गया और जिसने उससे मुख फेरा; वो बर्बाद हो गया।

हे मुस्लिमो!

अल्लाह के विषय में जानकारी ईमान के स्तंभों में से एक है, बल्कि यही उसका मूल है, इसके बाद जो आता है वह इसके अनुसरण में ही आता है। ईश्वर के नामों और गुणों का ज्ञान मन के अर्जित किए हुए, प्राणों के प्राप्त किए हुए और दिमागों के समझे हुए ज्ञान में सबसे बेहतर और सबसे अधिक अनिवार्य है। श्री इब्नुल-क़य्यिम (उन पर अल्लाह की दया हो) ने कहा: "इस दुनिया की सबसे पवित्र चीज़ महामहिम व पवित्र रब को जानना और उससे प्रेम करना है।"

संपूर्ण क़ुरआन लोगों को अल्लाह के नाम, गुण और उसके कार्यों पर विचार करने के लिए आमंत्रित करता है, इस्लाम के महान विद्वान श्री इब्ने-तैमियह (उन पर अल्लाह की दया हो) ने कहा: "क़ुरआन में खाने और पीने के बारे में जितना उल्लेख किया गया है, उससे कहीं अधिक अल्लाह के नामों, गुणों और कार्यों का उल्लेख है।"

अल्लाह उन लोगों से प्यार करता है जो उसकी विशेषताओं को याद करना पसंद करते हैं, नबी ﷺ ने उस व्यक्ति को जो सूरह अल-इखलास पढ़ता था, शुभसूचना दी कि अल्लाह

(1) ये ख़ुतबा मस्जिद-ए-नबवी में जुमे के दिन 23/10/1426 हिजरी को दिया गया।

भी उससे प्रेम करता है, नबी ﷺ कहते हैं: "उससे पूछो कि वह ऐसा क्यूँ करता है? लोगों ने उससे पूछा तो उसने कहा: क्योंकि सूरह अल-इखलास परम दयालु (अल्लाह) का गुणगान (करने वाली सूरह) है और मैं इससे प्रेम करता हूँ। तो नबी ﷺ ने कहा: "उसे बताओ कि अल्लाह भी उससे प्रेम करता है।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

उस पवित्र हस्ती के नाम सबसे सुंदर नाम हैं, उसके गुण सबसे अधिक संपूर्णता वाले हैं।

﴿لَيۡسَ كَمِثۡلِهِۦ شَيۡءٞۖ وَهُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلۡبَصِيرُ﴾

उसके सदृश कोई चीज़ नहीं। वही सबकुछ सुननेवाला, देखनेवाला है। (अल-शूरा: 11)

हर मुस्लिम को इन नामों का ज्ञान और उनके अर्थ की समझ होनी चाहिए।

चूंकि हमारा सर्वशक्तिमान प्रभु सबसे दयावान और सबसे कृपालु है, हर चीज़ को उसकी रहमत (दया) ने घेर रखा है, इसलिए उसके गुणों में सबसे अधिक प्रसारित दया है। नबी ﷺ ने फ़रमाया: "निश्चित रूप से अल्लाह की सौ रहमतें हैं, उनमें से एक रहमत को जिन्न, मनुष्यों, पशु और कीड़ों के बीच अवतीर्ण किया है जिससे वे आपस में सहानुभूति और दया का व्यावहार करते हैं, इसी से जानवर अपनी संतान के साथ सहानुभूति व्यक्त करते हैं, जबकि अल्लाह ने निन्यानवे रहमतों को विलंबित कर दिया है जिनके द्वारा वह क़यामत के दिन अपने भक्तों पर दया करेगा।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम) हर कोई अल्लाह की रहमत में ही उठता बैठता है, जो उपकार भी तुम देखते हो वह उसकी रहमत ही का हिस्सा है, हर टल जाने वाला संकट अल्लाह की रहमत के प्रभाव से है। श्री इब्नुल-क़य्यिम (उन पर अल्लाह की दया हो) कहते हैं: वह लिखित वाक्य (अर्थात: "मेरी रहमत मेरे क्रोध से आगे है") पवित्र ईश्वर की ओर से एक वादे की तरह है जो उसने सृष्टि से किया है, यदि ऐसा नहीं होता तो सृष्टि का एक अलग ही मामला होता।" जो पवित्र अल्लाह से निकट होगा अल्लाह की रहमत भी उसके निकट होगी।

वह पवित्र हस्ती ही **अल-मलिक** (राजा) है; जो अपनी इच्छा के अनुसार अपनी रचना का निपटान करता है, उसके ज्ञान और इच्छा के बिना कोई गतिमान गति नहीं करता और न कोई स्थिर स्थिरता में ही रहता है, आदेश और निषेध करता है और बिना रोक टोक सम्मानित और अपमानित करता है, कोई भी उसे इन कामों में बेबस नहीं कर सकता, सो अपने मामलों को उस राजा के हवाले करो; क्योंकि सारी चाबियां उसी के हाथ में हैं, अपनी समस्त परिस्थितियों में उसी पर भरोसा रखो; तुम उसे अपने निकट पाओगे।

वो **अल-क़ुद्दूस** (अत्यंत पवित्र) है; वह खामियों से मुक्त है, उसे पूर्णता के गुणों के साथ वर्णित किया गया है, कोई पूज्य देवता नहीं है जिससे उसके साथ प्रार्थना की जाए, कोई संरक्षक नहीं जिसे उसके साथ पुकारा जाए।

वो **अस-सलाम** (शांति वाला/सुरक्षित) है; जो सभी दोषों और दोषपूर्ण विवरणों से सुरक्षित है, सभी प्राणी हमारे प्रभु को इन सब से मुक्त समझते हैं, अल्लाह कहता है:

﴿يُسَبِّحُ لِلَّهِ مَا فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِي ٱلۡأَرۡضِۖ﴾

अल्लाह की तसबीह कर रही है हर वह चीज़ जो आकाशों में है और जो धरती में है। (अल-तग़ाबुन: 1)

वह पवित्र सर्वशक्तिमान प्रभु **अल-मूमिन** (भययुक्त करने वाला) है, उसकी रचना उसकी ओर से अत्याचार होने या अपने अधिकार को कम पाने से भयमुक्त है, इसलिए ईश-परायणता की आपूर्ति करो; कर्म दुगने और संरक्षित हो जाएंगे।

वह अल्लाह अपनी सृष्टि पर **अल-मुहैमिन** (प्रभुत्वशाली) है; उनके रहस्यों और उनके सीनों के भेदों से अवगत है, इसलिए यदि तुम उसकी अवज्ञा करते हो तो अल्लाह की चाल से भयमुक्त महसूस न करो।

वह अपने भक्तों के शब्दों और कर्मों पर **अश-शहीद** (साक्षी) है।

﴿وَمَا ٱللَّهُ بِغَٰفِلٍ عَمَّا تَعۡمَلُونَ﴾

और जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह उससे बेख़बर नहीं है। (अल बक़रा: 74)

वो अल्लाह **अल-अज़ीज़** (प्रभुत्वशाली) है; जो कभी पराजित नहीं होता, हर चीज़ पर उसने विजय प्राप्त की और सब को अपने अधीन कर लिया है, उसके शौर्य के आगे कठिनाइयां मुलायम हो गईं, एवं उसकी शक्ति के आगे सारी कठोरताएं नर्म हो गईं, "जब अल्लाह आकाश में किसी मामले का फैसला करता है; तो फरिश्ते उसके आदेश के आगे नतमस्तक होकर अपने पंखों को मारने लगते हैं, जैसे चिकने पत्थर पर ज़ंजीर मारी जाती है।" जो अज्ञाकारी द्वारा उसके निकट जाता है सम्मानित होता है, पवित्र अल्लाह का कथन है:

﴿مَن كَانَ يُرِيدُ ٱلۡعِزَّةَ فَلِلَّهِ ٱلۡعِزَّةُ جَمِيعًاۚ﴾

जो कोई प्रभुत्व चाहता हो तो प्रभुत्व तो सारा का सारा अल्लाह के लिए है। (फ़ातिर: 10)

जो अवज्ञा से उसे चुनौती देता है; वह अपमानित होता है, इसलिए अवज्ञा को न देखो, बल्कि ये देखो कि तुम किस की अवज्ञा कर रहे हो?

वो **अल-अलिय्य** (ऊपर वाला) और **अल-आला** (सर्वोच्च) है:

﴿إِلَيۡهِ يَصۡعَدُ ٱلۡكَلِمُ ٱلطَّيِّبُ وَٱلۡعَمَلُ ٱلصَّٰلِحُ يَرۡفَعُهُۥۚ﴾

उसी की ओर अच्छा-पवित्र बोल चढ़ता है और अच्छा कर्म उसे ऊँचा उठाता है। (फ़ातिर: 10)

वो **अल-जब्बार** (शक्तिशाली/दबंग) है; उसने अपनी सृष्टि को अपनी चाहत पर विवश किया, उनमें से कोई भी उससे पीछे नहीं हट सकता:

﴿إِنَّمَآ أَمۡرُهُۥٓ إِذَآ أَرَادَ شَيۡـًٔا أَن يَقُولَ لَهُۥ كُن فَيَكُونُ﴾

उसका मामला तो बस यह है कि जब वह किसी चीज़ का इरादा करता है तो उससे कहता है: "हो जा!" तो वह हो जाती है। (यासीन: 82)

उसने आकाश और धरती से कहा:

﴿ٱئۡتِيَا طَوۡعًا أَوۡ كَرۡهٗا قَالَتَآ أَتَيۡنَا طَآئِعِينَ﴾

'आओ, स्वेच्छा के साथ या अनिच्छा के साथ।' उन्होंने कहा, 'हम स्वेच्छा के साथ आ गए।' (फ़ुस्सिलत: 11)

इसी प्रकार वह पवित्र प्रभु टूटे लोगों के दिलों को जोड़ने वाला भी है।

वो प्रभु **अल-कबीर** (विशाल) है; सब कुछ उसके नीचे है, उससे महान या बड़ा कुछ भी नहीं है:

﴿وَٱلۡأَرۡضُ جَمِيعٗا قَبۡضَتُهُۥ يَوۡمَ ٱلۡقِيَٰمَةِ وَٱلسَّمَٰوَٰتُ مَطۡوِيَّٰتُۢ بِيَمِينِهِۦۚ﴾

और क़यामत के दिन सारी की सारी धरती उसकी मुट्ठी में होगी और आकाश उसके दाएँ हाथ में लिपटे हुए होंगे। (अल-ज़ुमर: 67)

"आकाशों को एक उंगली पर, धर्तियों को एक उंगली पर, पेड़ों को एक उंगली पर, पानी और तह को एक उंगली पर और तमाम रचित सृष्टि को एक उंगली पर रखेगा।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

वो **अल-मुतकब्बिर** (स्वाभिमानी) है; केवल वही अभिमान वाला है, अहंकार उसके अलावा किसी को शोभा नहीं देता, उसकी सृष्टि में से जो अहंकारी होगा; उसका ठिकाना नरक है, सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा:

﴿أَلَيۡسَ فِي جَهَنَّمَ مَثۡوٗى لِّلۡمُتَكَبِّرِينَ﴾

क्या अहंकारियों का ठिकाना जहन्नम में नहीं है? (अल-ज़ुमर: 60)

भक्त पर अपने प्रभु के लिए दुर्बलता और आज्ञाकारिता दिखाना तथा बंदों के साथ विनम्रता का व्यवहार करना अनिवार्य है।

वो **अल-ख़ालिक़** (सृष्टिकर्ता/रचयिता) है; उसी ने ब्रह्माण्ड बनाया और उसका उदाहरणहीन निर्माण किया, सो इस पर विचार करने वाले को उसने चकित कर दिया, वह एक महान निर्माता है, उसने जो भी बनाया पूरी महारत से बनाया:

﴿فَتَبَارَكَ ٱللَّهُ أَحۡسَنُ ٱلۡخَٰلِقِينَ﴾

अतः बहुत ही बरकतवाला है अल्लाह, सबसे उत्तम स्रष्टा! (अल-मूमिनून: 14)

वो **अल-बारी** (निर्माता/प्रारंभिक रूप रेखा बनाने वाला) है; उसने सितारों, सूरज, चाँद और क्षितिज वाली सृष्टि को गैर अस्तित्व से पैदा किया,:

﴿كُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسۡبَحُونَ﴾

प्रत्येक अपने-अपने कक्ष में तैर रहा है। (अल-अंबिया: 33)

जो इन चीज़ों के बारे में सोचता है और सीख प्राप्त करता है ये चीजें उसे चकित कर देती हैं।

वो महान अल्लाह **अल-मुसव्विर** (चित्रकार/रूप-दाता) है; उसी ने अपनी रचना को भिन्न-भिन्न विशेषताओं और ढांचों के आधार पर जैसे चाहा, रूप दिया:

﴿فَمِنۡهُم مَّن يَمۡشِي عَلَىٰ بَطۡنِهِۦ وَمِنۡهُم مَّن يَمۡشِي عَلَىٰ رِجۡلَيۡنِ وَمِنۡهُم مَّن يَمۡشِي عَلَىٰٓ أَرۡبَعٖۚ﴾

उनमें से कुछ हैं जो पेट के बल चलते हैं, कुछ दो पैरों पर चलते हैं, जबकि कुछ चार पैरों पर चलते हैं। (अल-नूर: 45)

उसने मनुष्य की रचना सबसे सुंदर रूप में की है:

﴿لَقَدۡ خَلَقۡنَا ٱلۡإِنسَٰنَ فِيٓ أَحۡسَنِ تَقۡوِيمٖ﴾

निस्संदेह हमने मनुष्य को सर्वोत्तम संरचना के साथ पैदा किया। (अल-तीन: 4)

वही **अल-मुसव्विर** (चित्रकार/रूप दाता) है, इसीलिए उसने अपनी सृष्टि पर चित्रकारी को हराम किया है और चित्रकारों को चेतावनी दी है, "अल्लाह के नबी ने चित्रकार को श्राप दिया है" (सही बुखारी) और कहा है कि: "हर चित्रकार नरक में होगा।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

वो **अल-ग़फ़ूर** (क्षमाशील) है; वह अपनी ओर मुड़ने वाले बंदों के पाप मिटा देता है, भले ही उसके पाप सीमा के अंत तक पहुँच गए हों। उसने फिरऔन के जादूगरों को सजदे

सहित पश्चाताप के कारण, उनके अविश्वास जादू और नबी के साथ द्वंद्व के लिए क्षमा कर दिया था:

﴿وَإِنِّي لَغَفَّارٌ لِّمَن تَابَ وَءَامَنَ وَعَمِلَ صَٰلِحًا ثُمَّ ٱهْتَدَىٰ﴾

और जो लोग तौबा करते हैं, ईमान लाते हैं और नेकी के काम करते हैं, उनके लिए मैं सबसे ज़्यादा माफ़ करने वाला हूँ। (ताहा: 82)

वो **अल-क़ह्हार** (संप्रभुता वाला/वर्चस्व वाला) है; सृष्टि उसके नियंत्रण और शिकंजे में है, वह जब जिसकी चाहे आत्मा को छीन ले, उसकी इच्छा के बिना ब्रह्माण्ड में कोई क्रम नहीं होता भले ही बंदा उसे प्राप्त करने की कोशिश करता हो।

वो **अल-फत्ताह** (खोलने वाला) है: वह अपने बंदों के लिए जीविका, दया और उसके साधनों के द्वार खोल देता है, वो उनके लिए बंद मामले और परिस्थितियां खोल देता है।

वो **अर-रज़्ज़ाक़** (प्रदाता) है; भक्त को आसमानों और धरती से जीविका देता है:

﴿قُلْ مَن يَرْزُقُكُم مِّنَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۖ قُلِ ٱللَّهُ﴾

कहो, आसमान और ज़मीन से तुम्हें कौन रोज़ी देता है? कह दो, अल्लाह। (सबा: 24)

वो हर वस्तु को जीविका प्रदान करता है, पृथ्वी पर कोई जीव ऐसा नहीं है जिसके भरण-पोषण का भार अल्लाह पर न हो। उसने माताओं के गर्भ में भ्रूण को, जंगल में शेरों को, ऊँचे घोंसलों में पक्षियों को और समुद्र के तल में मछलियों को रोज़ी पहुँचाई है।

वो **अल-वह्हाब** (दाता) है: जिसे चाहता है जो कुछ चाहता है देता है, उसके हाथ में आकाश और धरती के खज़ाने हैं, उसी ने पैग़ंबरों को उनके बुढ़ापे तक पहुँचने के बाद अच्छी संतान प्रदान की, पैग़ंबर सुलैमान (उन पर शांति हो) ने दाता प्रभु से ऐसा राजस्व मांगा जो उनके बाद किसी के लिए उपयुक्त न हो, तो अल्लाह ने उन्हें चमत्कार और यादगार अनुदान दिया, अत: हवा, जिन्न और तांबे का सोता उनके आदेश के अधीन थे।

वो **अल-अलीम** (सर्वज्ञाता) है; वह भेदों और गुप्त बातों को जानता है, उससे बंदों का न कोई बोल छिपता है और न कोई कर्म:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيمٌۢ﴾

वास्तव में अल्लाह सब कुछ जाननेवाला है। (अल-अनफ़ाल: 75)

वो **अस-समी** (सुनने वाला) है; वह आपस की गुप्त और खुले तौर पर कही जानी वाली बातों को सुनता है, भेद और उससे अधिक गुप्त को भी सुनता है, अगर तुम अपनी बात

ऊंचे स्वर में कहो तो भी सुनता है, अपने साथी से छिपा कर कहो तो भी सुनता है और अपने दिल में छिपा लो तो भी वह जान लेता है।

वो **अल-बसीर** (देखने वाला) है; वह मामलों के रहस्यों को देखता है भले ही वे बारीक हों, एक कण बराबर चीज़ उससे नहीं बचती भले ही वह छिपी हो, वह रात के अंधेरे में मिट्टी के नीचे की चीज़ों को देखता है, वह समुद्र के तल को घोर अंधकार में भी देखता है।

वो **अज़-ज़ाहिर** (स्पष्ट) है; जिसके ऊपर कोई नहीं और **अल-बातिन** (गुप्त) है; और जिससे अधिक करीब कोई नहीं, अंधेरी रात में ठोस चट्टान पर काली चींटी के कदमों के चिन्ह भी उससे छिपे नहीं हैं, अगर तुमने खुले तौर पर कुछ किया है तो वह देखता है और यदि चुपके से कुछ करते हो भले ही तुम अपने घर के अंदर करो, तो भी वो तुम्हें देखता है:

﴿إِنَّ رَبَّكَ لَبِٱلۡمِرۡصَادِ﴾

निस्संदेह तुम्हारा प्रभु घात में है। (अल-फ़ज्र: 14)

जो जान लेता है कि अल्लाह उससे अवगत है; उसे पाप करते हुए अल्लाह से शर्म आती है।

वो **अल-हकीम** (बुद्धिमान) है; उसके नियमों या विधानों में कोई गड़बड़ी या त्रुटि नहीं, किसी को भी अल्लाह के नियमों की समीक्षा करने, उन्हें कम आंकने या उन्हें विवाद का मुद्दा बनाने का अधिकार नहीं:

﴿وَٱللَّهُ يَحۡكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكۡمِهِۦ﴾

अल्लाह ही फ़ैसला करता है। कोई नहीं जो उसके फ़ैसले को पीछे डाल सके। (अल-राद: 41)

बल्कि उसे स्वीकार करना, उसे मान लेना और उसके आगे नतमस्तक हो जाना ही अनिवार्य है:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ يَحۡكُمُ مَا يُرِيدُ﴾

निस्संदेह अल्लाह जो चाहता है, आदेश देता है। (अल-माइदा: 1)

बंदों के लिए अल्लाह के पवित्र विधान के अलावा कोई विधान ठीक नहीं, जो उसके धर्म या उसके कानून का ठट्ठा करता है अल्लाह उसे अपमानित करेगा।

वो **अल-लतीफ** (मेहरबान) है: वह अपने बन्दों पर मेहरबानी करता है, उनकी रोज़ी को उनकी ओर इस प्रकार हाँकता है कि उन्हें पता भी नहीं होता।

वो **अल-ख़बीर** (ख़बर रखने वाला) है; वह भक्तों के मामलों की पूरी ख़बर रखता है, उस से कोई बात छिपी नहीं है, वह हर एक बात की हक़ीक़त से वाकिफ है:

﴿فَسْـَٔلْ بِهِۦ خَبِيرًا﴾

अतः पूछो उससे जो उसकी ख़बर रखता है। (अल-फ़ुर्क़ान: 59)

वो **अल-हलीम** (सहनशील) है; वह अपने भक्तों को पापों का दण्ड देने में शीघ्रता नहीं करता, न वह उनके पापों के कारण उन से अपना अनुग्रह और दान रोकता है, लोग उसकी अवज्ञा करते हैं और वह उन्हें जीविका देता है, वे पाप करते हैं और वह उन्हें मोहलत देता है, वे खुल्लम-खुल्ला (बुरे काम) करते हैं और वह उन पर पर्दा डालता है, अतः अल्लाह की सहनशीलता और स्वयं पर उसकी उदारता से धोखा न खाओ, क्योंकि दण्ड तुम पर अचानक भी आ सकता है:

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلْإِنسَٰنُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ ٱلْكَرِيمِ﴾

ऐ मनुष्य! किस चीज़ ने तुझे अपने उदार प्रभु के विषय में धोखे में डाल रखा है? (अल-इन्फ़ितार: 6)

वो अल्लाह **अल-अज़ीम** (महान) है; जब वह ईश-वाणी से बात करता है तो उसके भय से आकाश को भयंकर कंपन आने लगता है, आकाश के लोग उसे सुन कर मूर्च्छित हो जाते हैं और अल्लाह के लिए सजदे में गिर पड़ते हैं।

वो **अश-शकूर** (सराहने वाला) है; वह थोड़े से काम पर बहुत इनाम देता है, और बहत सी गलतियों को माफ कर देता है, इसलिए किसी भी अच्छे कर्म का तिरस्कार न करो चाहे वह कम ही क्यों न हो, क्योंकि अच्छाई कई गुना बढ़ जाती है, पवित्र अल्लाह का कथन है:

﴿وَمَن يَقْتَرِفْ حَسَنَةً نَّزِدْ لَهُۥ فِيهَا حُسْنًا ۚ إِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٌ شَكُورٌ﴾

जो कोई नेकी कमाएगा हम उसके लिए उसमें अच्छाई की अभिवृद्धि करेंगे। निश्चय ही अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, गुणग्राहक है। (अल-शूरा: 23)

वो **अल-हफीज़** (सरक्षक) है, वह भक्तों के कामों की रक्षा करता है और उनकी बातों की गिनती रखता है:

﴿لَّا يَضِلُّ رَبِّى وَلَا يَنسَى﴾

मेरा रब न चूकता है और न भूलता है। (ताहा: 52)

वह अपने भक्तों को विनाश और विपत्ति से बचाता है; उसने समुद्र की गहराई में मछली के पेट के अंदर पैग़ंबर यूनुस (उन पर शांति हो) की रक्षा की और समुद्र में एक शिशु के रूप में पैग़ंबर मूसा (उन पर शांति हो) की रक्षा की, इसलिए अपने और अपने बच्चों की रक्षा के लिए अल्लाह पर भरोसा रखो, अतः शिर्क मंत्र, तावीज़, जादूगर या टोना-टोटका वाले भविष्यवक्ताओं की कोई आवश्यकता नहीं है।

वो **अल-क़विय्य** (शक्तिशाली) है; उसे कोई भी बेबस नहीं कर सकता, वो अपनी पकड़ में अत्यन्त शक्तिशाली है। श्री इब्ने-जरीर (उन पर अल्लाह की दया हो) ने कहा: "यदि वह किसी चीज़ की पकड़ करता है तो उसे मार ही डालता है।" अत: श्री जिबरील को एक बस्ती को उखाड़ कर पटकने का आदेश दिया जो निर्लज्ज कामों में उपद्रव कर चुकी थी (अर्थात पैग़ंबर लूत (उन पर शांति हो) की क़ौम को), इसलिए जिबरील फरिश्ते ने अपने पंख के किनारे से उन लोगों सहित बस्ती को उठाया और उलट दिया और सदियों तक इसे सीख का चिन्ह बना दिया:

﴿وَإِنَّكُمْ لَتَمُرُّونَ عَلَيْهِم مُّصْبِحِينَ * وَبِاللَّيْلِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ﴾

और निस्संदेह तुम उन पर (उनके क्षेत्र) से गुज़रते हो कभी प्रातः करते हुए और रात में भी। तो क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते? (अल-साफ़्फ़ात: 137-138)

उसकी अवज्ञा करने वाला अगर उसकी ताकत पर विचार करे तो अवज्ञा ही छोड़ दे।

वो **अश-शाफी** (आरोग्य करनेवाला) है; वह बीमारियों और रोगों से ठीक करता है:

﴿وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِينِ﴾

और जब मैं बीमार होता हूँ, तो वही मुझे अच्छा करता है। (अल-शुअरा: 80)

दवाएं कारण मात्र हैं जिनसे दिल को संबंधित नहीं होना चाहिए।

वो **अल-मन्नान** (परोपकारी) है; वह माँगने से पहले ही देना शुरू कर देता है।

सर्वशक्तिमान ईश्वर ही **अल-मुहसिन** (भला करने वाला) है; उसने सृष्टि को अपने परोपकार और अनुग्रह से अभिभूत कर दिया है।

वो **अल-करीम** (उदार) है; वह देता है और बहुत अधिक देता है, उसके और उसकी रचना के बीच कोई पर्दा नहीं है; इसलिए मांगो क्यूंकि तुम्हारा प्रभु सबसे उदार है, यदि वह अपने भक्त के लिए जीविका का द्वार खोल दे तो कोई उसे रोक नहीं सकता; पवित्र प्रभु का कथन है:

﴿مَّا يَفْتَحِ اللَّهُ لِلنَّاسِ مِن رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا﴾

अल्लाह जो दयालुता लोगों के लिए खोल दे उसे कोई रोकनेवाला नहीं। (फ़ातिर: 2)

वो **अल-हयिय्य** (शर्मीला) है; "जब बंदा उसकी ओर हाथों को उठा कर उससे कुछ माँगता है; तो उन्हें खाली लोटाते हुए उसे शर्म आती है।" (सुनन अबू-दाऊद)

वो **अर-रक़ीब** (पर्यवेक्षक) है; वह अपनी रचना से लापरवाही नहीं करता, न उन्हें बर्बाद करता है:

﴿وَمَا كُنَّا عَنِ ٱلۡخَلۡقِ غَٰفِلِينَ﴾

और हम सृष्टि से ग़ाफ़िल नहीं। (अल-मूमिनून: 17)

वह जानता है कि लोगों के विवेक में क्या निहित है। श्री हसन बसरी (उन पर अल्लाह की दया हो) कहते हैं: "अल्लाह उस बंदे पर दया करे जो अपनी इच्छा के समय ठहर जाता है; अगर यह अल्लाह के लिए है तो चल पड़ता है, अगर यह किसी और के लिए है तो पीछे हट जाता है।" अतः प्रत्येक कार्य पर विराम ले लिया करो, यदि वह अल्लाह के लिए है तो आगे बढ़ जाओ, यदि वह उसके अलावा किसी अन्य के लिए है तो पीछे हट जाओ।

वो **अल-वदूद** (स्नेह वाला) है; वह अपने भक्तों के सामने अनुग्रहों और अवज्ञा छुड़ाने के द्वारा स्नेह व्यक्त करता है, जो उसके लिए कुछ छोड़ता है वह उसे और अधिक देता है। वह अपने सत्कर्मी बंदों से प्रेम रखता है, वह तौबा, भरोसा और सब्र करने वालों से प्रेम करता है।

वो **अल-मजीद** (वैभवशाली/कीर्तिमान) है; वह वैभव, स्तुति और उदार प्रशंसा वाला है, उसकी कीर्ति के अतिरिक्त कोई कीर्ति नहीं, दूसरों के लिए सभी महिमा उस पवित्र हस्ती की ओर से एक उपहार और अनुग्रह है।

वो **अल-हमीद** (प्रशंसा योग्य) है; वह अपने कर्मों द्वारा प्रशंसा और स्तुति का हक़दार है, अच्छे और बुरे समय में उसी की प्रशंसा की जाती है, और उसकी प्रशंसा नेकी के बड़े कामों में से एक है, नबी ﷺ कहते हैं: "अल-हम्दु लिल्लाह (समस्त प्रशंसाएं अल्लाह के लिए हैं) तराज़ू को भर देता है, सुबहानल्लाह (अल्लाह, पाक है) और अल-हम्दु लिल्लाह आकाशों व धरती के बीच के स्थान को भर देते हैं।" (सही मुस्लिम)

वो **अल-हय्य** (जिवित) **अल-कय्यूम** (पालनकर्ता) है; समस्त सृष्टि के मामलों की व्यवस्था करने वाला है:

﴿يَسۡـَٔلُهُۥ مَن فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِۚ كُلَّ يَوۡمٍ هُوَ فِي شَأۡنٖ﴾

आकाशों और धरती में जो भी है उसी से माँगता है। उसकी नित्य नई शान है। (अल-रहमान: 29)

वो **अल-अहद** (अकेला) है; वह अनंत काल से ही अकेला है, उसके साथ कोई और नहीं है, वह सभी सिद्धताओं सहित अकेला है, उनमें कोई भागीदार नहीं।

वो **अस-समद** (निस्पृह) है; सृष्टि अपनी आवश्यकताओं में उसी की ओर आकांक्षित रहती है, अपनी शिकायतें उस तक पहुँचाती है और अपनी विपत्तियां उसी के आगे रख देती है।

वो **अस-सय्यिद** (स्वामी/आक़ा) है; विपत्ति और पीड़ा के समय केवल उसी की शरण ली जाएगी।

वो **अल-क़दीर** (सक्षम) है; पूरी क्षमता और हर चीज़ पर प्रभाव रखने वाला, उसने एक जला देने वाली आग से कहा:

﴿كُونِي بَرۡدٗا وَسَلَٰمًا عَلَىٰٓ إِبۡرَٰهِيمَ﴾

"ऐ आग! इब्राहीम पर ठंडी हो जा और सलामती बन जा!" (अल-अंबिया: 69)

जैसा उसने आज्ञा दी थी वैसा ही हुआ। उसने लहरों से भरे समुद्र को मूसा के लिए एक सूखा रास्ता बनाने की आज्ञा दी (तो उसने रास्ता बना दिया), फिर समुद्र सही हालत में लौट भी आया।

वो **अल-बर्र** (अनुकंपा वाला) है; वह अपने भक्तों के साथ अच्छाई करता और उनकी स्थिति सुधारता है, वह आज्ञाकारी को दोगुना इनाम देकर और गुनहगार को क्षमा करके अनुकंपा करने वाला है:

﴿إِنَّهُۥ هُوَ ٱلۡبَرُّ ٱلرَّحِيمُ﴾

निश्चय ही वह सदव्यवहार करने वाला, अत्यन्त दयावान है। (अल-तूर: 28)

वो **अत-तव्वाब** (तौबा कबूल करने वाला) है; वह तौबा करने वाले को वापस नहीं करता, जो उसके पास रात या दिन में आता है उसे क़बूल करता है और उससे प्यार भी करता है:

﴿ إِنَّ ٱللَّهَ يُحِبُّ ٱلتَّوَّٰبِينَ﴾

निस्संदेह अल्लाह बहुत तौबा करनेवालों को पसन्द करता है। (अल-बक़रा: 222)

वो **अल-अफुव्व** (क्षमाशील) है; कोई व्यक्ति पाप करके स्वयं पर कितना ही अत्याचार करे, अगर वह पश्चाताप करता है तो अल्लाह उसके पापों को क्षमा कर देता है।

वो **अर-रऊफ** (दयालु) है; वह अपनी सारी सृष्टि पर दया करने वाला है, वह उन्हें उनके प्रति करुणावश जीविका प्रदान करता है चाहे वे उसकी अवज्ञा करें।

वो **अल-ग़नी** (निरलोभी/निस्पृह) है; उसे अपनी रचना की कोई आवश्यकता नहीं है, उसका हाथ भरा हुआ है, "खर्च करने से उसके ख़ज़ाने में कोई कमी नहीं आती, वो रात दिन उदारता करने वाला है।" नबी ﷺ कहते हैं कि अल्लाह ने कहा: "मेरे बंदो! यदि तुम सब के सब मनुष्य और जिन्न एक स्थान पर खड़े हो जाओ और मुझसे माँगने लगो, फिर मैं हर इंसान को उसकी मांग के अनुसार दे दूँ, तो भी मेरे खजाने में उतनी ही कमी आएगी जितनी एक सुई को समुद्र में डुबोने पर, समुद्र के पानी में आती है।"

फिर हे मुस्लिमो!

अल्लाह को उसके सुंदर नामों से पुकारा जाएगा, इन्ही नामों और ऊँचे गुणों के द्वारा उसकी प्रशंसा की जाएगी, अल्लाह उन लोगों से प्यार करता है जो उसे पुकारते और उसकी स्तुति करते हैं, वंदना और भक्ति में सबसे संपन्न व्यक्ति वही है जो उसके सभी नामों और गुणों के द्वारा इबादत करे। उसके नाम अनगिनत हैं, उनमें से निन्यानवे नामों को जो अर्थ सहित जानेगा वह जन्नत में प्रवेश करेगा।

मैं शापित शैतान से अल्लाह की शरण माँगता हूँ

﴿وَلِلَّهِ ٱلْأَسْمَآءُ ٱلْحُسْنَىٰ فَٱدْعُوهُ بِهَا ۖ وَذَرُوا۟ ٱلَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِىٓ أَسْمَٰٓئِهِۦ ۚ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ﴾

सबसे अच्छे नाम अल्लाह ही के हैं। तो तुम उन्हीं के द्वारा उसे पुकारो और उन लोगों को छोड़ दो जो उसके नामों के संबंध में कुटिलता ग्रहण करते हैं। जो कुछ वे करते हैं, उसका बदला वे पाकर रहेंगे। (अल-आराफ़: 180)

अल्लाह मुझे और आपको पवित्र कुरान के प्रति आशीर्वाद दे...

दूसरा ख़ुतबा

अल्लाह की स्तुति है उसके एहसान पर, उसका धन्यवाद है उसकी तोफ़ीक़ और कृपा पर, मैं अल्लाह की शान को महान मानते हुए गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके भक्त और दूत हैं, उन पर, उनके परिवार पर और उनके साथियों पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद बना रहे।

अल्लाह की प्रशंसा और नबी पर दरूद के बाद:

हे मुस्लिमो!

रसूलों (दूतों) के आह्वान की कुंजी और उनके संदेश का सारांश: भगवान को उसके नामों, गुणों और कार्यों के साथ जानना रहा है।

अल्लाह को जानने और वह जिन सुंदर नामों और ऊँचे गुणों के योग्य है; उन्हें जानने के बाद ज़रूरी हो जाता है कि उसका सम्मान किया जाए, उसकी महिमा की जाए, उससे डरा जाए, उसके प्रति भय रखा जाए, उससे प्रेम किया जाए, उसी से आशा लगाई जाए, उस पर भरोसा किया जाए, उसके निर्णय पर संतुष्ट हुआ जाए, और उसकी ओर से पीड़ा पर धैर्य रखा जाए। बेशक ज्ञान की मात्रा के अनुसार ही दिल में प्रभु की महिमा होती है।

जो व्यक्ति अल्लाह से सबसे अधिक परिचित होता है; वो उसके लिए सबसे अधिक आदर और श्रद्धा भी रखता है। जो अल्लाह के नामों और गुणों को जानता है; वह निश्चित रूप से ये भी जानता है कि जो अनैच्छिक संकट और क्लेश उस पर आते हैं उनमें कई प्रकार के हित नीहित होते हैं, जो उसके ज्ञान से परे हैं। ईश्वर अपने नामों और गुणों की आवश्यकताओं से प्यार करता है, क्योंकि वह उदार है और अपने भक्तों की उदारता से प्यार करता है, सहनशील है और सहनशील लोगों से प्यार करता है, सर्वज्ञाता है विद्वानों से प्यार करता है और सराहना करने वाला है; कृतज्ञों से प्यार करता है।

तो जान लो कि अल्लाह ने तुम्हें अपने नबी पर दरूद और सलाम भेजने का हुक्म दिया है...

अल्लाह का नाम; अल-हकीम[1]

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, हम उसकी प्रशंसा करते हैं उसी से सहायता और अपने पापों की क्षमा मांगते हैं, हम अपने प्राण और कर्म की बुराइयों से उसकी शरण चाहते हैं। वह जिसे सत्य मार्ग पर चला दे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे वह भटका दे उसे कोई सत्य मार्ग पर चला नहीं सकता। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह एक है, उसका कोई साझी नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं। सलाम व शांति हो उन पर, उनके परिवार और उनके पवित्र साथियों पर।

अल्लाह की प्रशंसा और नबी पर दरूद के बाद:

हे मुस्लिमो!

फितरत (प्राकृतिक स्वभाव) की गवाही है कि दुनिया का एक प्रभु है जो अपनी हस्ती और गुणों में परिपूर्ण है, जिसे पूर्णता, महिमा और सुंदरता के गुणों के साथ वर्णित किया गया है, उसी के लिए सारी प्रशंसा, स्तुति और तारीफ़ है। अल्लाह की पूर्णता के गुणों तथा श्रेष्ट महानता की विशेषताओं का इकरार करना उसकी महिमा का हिस्सा है।

अल्लाह के शुभनामों में से एक नाम ऐसा है जिसका उल्लेख अल्लाह की पुस्तक में नव्वे से अधिक बार किया गया है, इसका ज़िक्र गर्व, ज्ञान, अनुभव, बहुतायत, पश्चाताप और प्रशंसा से जुड़ा हुआ आया है। ब्रह्माण्ड में होने वाली हर गति या स्थिरता में इस नाम का प्रभाव मौजूद है। सो उस पवित्र हस्ती के नामों में से एक नाम **अल-हकीम** (बुद्धिमान) है, (अर्थात) वह चीजों को उनके स्थान पर रखता है, उन्हें अपनी रचना और आदेश में उनके उचित स्तर पर रखता है, उसकी बुद्धि इतनी गहरी है कि मन उसकी वास्तविकता की अनुभूति करने में असमर्थ है और ज़बान उसे व्यक्त करने से अक्षम हैं। उसी पवित्र हस्ती की बुद्धि से ब्रह्माण्ड में हर कोई उसकी स्तुति करता है। परमप्रधान अल्लाह ने कहा:

﴿سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِۖ وَهُوَ ٱلۡعَزِيزُ ٱلۡحَكِيمُ﴾

(1) ये ख़ुतबा मस्जिद-ए-नबवी में जुमे के दिन 13/10/1441 हिजरी को दिया गया।

आकाश और पृथ्वी में जो कुछ भी है, अल्लाह की स्तुति करता है और वह पराक्रमी, बुद्धिमान है। (अल-हदीद: 1)

वह पवित्र हस्ती बुद्धिमान है और आकाश व पृथ्वी में उसकी इबादत की जाती है:

﴿وَهُوَ ٱلَّذِى فِى ٱلسَّمَآءِ إِلَٰهٌ وَفِى ٱلْأَرْضِ إِلَٰهٌ ۚ وَهُوَ ٱلْحَكِيمُ ٱلْعَلِيمُ﴾

वही है जो आकाश में भी पूजनीय है और धरती में भी पूजनीय है, वह बुद्धिमान सर्वज्ञाता है। (अल-ज़ुख़रुफ़: 84)

उसने स्वयं की प्रशंसा की; क्योंकि वह बुद्धिमान है; कहा :

﴿ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ ٱلَّذِى لَهُۥ مَا فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِى ٱلْأَرْضِ وَلَهُ ٱلْحَمْدُ فِى ٱلْءَاخِرَةِ ۚ وَهُوَ ٱلْحَكِيمُ ٱلْخَبِيرُ﴾

समस्त प्रशंसा उस अल्लाह के लिए जो आकाश और धरती में जो कुछ है सब का मालिक है, आखिरत (परलोक) में भी उसी के लिए प्रशंसा है, वह बुद्धिमान अनुभवी/ ख़बर रखने वाला है। (सबा: 1)

अल्लाह ने स्वयं की प्रशंसा की और कहा कि अहंकार सिर्फ उसी लिए (शोभा देता) है, फिर आयत का अंत इस बात पर किया कि वह बुद्धिमान है।

﴿وَلَهُ ٱلْكِبْرِيَآءُ فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۖ وَهُوَ ٱلْعَزِيزُ ٱلْحَكِيمُ﴾

आकाश और धरती में सारी बड़ाई केवल उसी के लिए है और वह पराक्रमी बुद्धिमान है। (अल-जासिया: 37)

उस पवित्र हस्ती के पास आकाश और धरती की सेनाएं हैं, वह उन्हें अपनी इच्छानुसार व्यवस्थित करता है, वह बुद्धिमान है:

﴿وَلِلَّهِ جُنُودُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۚ وَكَانَ ٱللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا﴾

आकाश और धरती में अल्लाह की सेनाएं हैं और अल्लाह सर्वज्ञाता बुद्धिमान है। (अल-फ़त्ह: 7)

हमारे प्रभु ने पैग़ंबर मूसा (उन पर शांति हो) को पुकारा और स्वयं के बारे में बताया कि वह बुद्धिमान है:

﴿يَٰمُوسَىٰٓ إِنَّهُۥٓ أَنَا ٱللَّهُ ٱلْعَزِيزُ ٱلْحَكِيمُ﴾

ऐ मूसा निस्संदेह मैं ही अल्लाह पराक्रमी बुद्धिमान हूँ। (अल-नम्ल: 9)

अल्लाह ने अपनी पुस्तक की इस प्रकार प्रशंसा की कि वह (पुस्तक) बुद्धिमान प्रभु की ओर से है, जो हर चीज को उसके सटीक स्थान पर रखता और उसे उचित पद देता है, सो वह किताब भी सशक्त एंव संपूर्ण बुद्धि से युक्त है, सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा:

﴿كِتَٰبٌ أُحۡكِمَتۡ ءَايَٰتُهُۥ ثُمَّ فُصِّلَتۡ مِن لَّدُنۡ حَكِيمٍ خَبِيرٍ﴾

यह एक किताब है जिसकी आयतें पक्की हैं, फिर उसकी ओर से सविस्तार बयान हुई हैं; जो अत्यन्त बुद्धिमान, पूरी ख़बर रखनेवाला है। (हूद: 1)

वही प्रभु अपनी बुद्धि से लोगों के लिए जीविका के द्वार खोलता और बंद करता है:

﴿مَّا يَفۡتَحِ ٱللَّهُ لِلنَّاسِ مِن رَّحۡمَةٍ فَلَا مُمۡسِكَ لَهَاۖ وَمَا يُمۡسِكۡ فَلَا مُرۡسِلَ لَهُۥ مِنۢ بَعۡدِهِۦۚ وَهُوَ ٱلۡعَزِيزُ ٱلۡحَكِيمُ﴾

अल्लाह जो दयालुता लोगों के लिए खोल दे उसे कोई रोकनेवाला नहीं और जिसे वह रोक ले तो उसके बाद उसे कोई जारी करनेवाला नहीं। वह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, बुद्धिमान है। (फ़ातिर: 2)

फरिश्तों ने अपनी बेबसी और ज्ञान की कमी को स्वीकार करने के साथ साथ, अल्लाह के ज्ञान और बुद्धि को भी स्वीकार किया और उसकी आज्ञा के आगे नतमस्तक हुए:

﴿قَالُواْ سُبۡحَٰنَكَ لَا عِلۡمَ لَنَآ إِلَّا مَا عَلَّمۡتَنَآۖ إِنَّكَ أَنتَ ٱلۡعَلِيمُ ٱلۡحَكِيمُ﴾

वे बोले, "पाक और महिमावान है तू! तूने जो कुछ हमें बताया है उसके सिवा हमें कोई ज्ञान नहीं। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, बुद्धिमान है।" (अल-बक़रह: 32)

अर्श उठाने वाले फरिश्ते और उसके आस-पास के फरिश्ते ईमान वालों के लिए क्षमा और आनंद की जन्नतों की प्रार्थना करते हुए, उस पवित्र प्रभु के नाम अल-हकीम (बुद्धिमान) के साथ अपनी प्रार्थना समाप्त करते हैं:

﴿رَبَّنَا وَأَدۡخِلۡهُمۡ جَنَّٰتِ عَدۡنٍ ٱلَّتِي وَعَدتَّهُمۡ وَمَن صَلَحَ مِنۡ ءَابَآئِهِمۡ وَأَزۡوَٰجِهِمۡ وَذُرِّيَّٰتِهِمۡۚ إِنَّكَ أَنتَ ٱلۡعَزِيزُ ٱلۡحَكِيمُ﴾

ऐ हमारे रब! और उन्हें सदैव रहने के बागों में दाख़िल कर जिनका तूने उनसे वादा किया है और उनके बाप-दादा और उनकी पत्नियों और उनकी सन्ततियों में से जो योग्य हुए उन्हें भी। निस्संदेह तू प्रभुत्वशाली, अत्यन्त बुद्धिमान है। (ग़ाफिर: 8)

रसूलों (दूतों) पर अवतीर्ण होने वाली ईश-वाणी; एक बुद्धिमान प्रभु की ओर से होती थी:

﴿ كَذَٰلِكَ يُوحِيٓ إِلَيۡكَ وَإِلَى ٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِكَ ٱللَّهُ ٱلۡعَزِيزُ ٱلۡحَكِيمُ ﴾

इसी प्रकार अल्लाह प्रुभत्वशाली, बुद्धिमान तुम्हारी ओर, और उन लोगों की ओर जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं, वह्य (प्रकाशना) करता रहा है, (अल-शूरा: 3)

नबी अल्लाह से अपनी आशाओं और इच्छाओं को पूरा कराने हेतु, उस पवित्र प्रभु के नाम अल-हकीम (बुद्धिमान) द्वारा दुआ करते थे, अतः पैग़ंबर इब्राहीम (उन पर शांति हो) ने अपने प्रभु से उसके नाम अल-हकीम (बुद्धिमान) द्वारा दुआ की थी:

﴿رَبَّنَا وَٱبۡعَثۡ فِيهِمۡ رَسُولٗا مِّنۡهُمۡ يَتۡلُواْ عَلَيۡهِمۡ ءَايَٰتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ ٱلۡكِتَٰبَ وَٱلۡحِكۡمَةَ وَيُزَكِّيهِمۡۖ إِنَّكَ أَنتَ ٱلۡعَزِيزُ ٱلۡحَكِيمُ﴾

ऐ हमारे रब! उनमें उन्हीं में से एक ऐसा रसूल उठा, जो उन्हें तेरी आयतें सुनाए और उनको किताब और हिकमत (तत्वदर्शिता) की शिक्षा दे और उन (की आत्मा) को विकसित करे। निस्संदेह तू प्रभुत्वशाली, बुद्धिमान है। (अल-बक़रह: 129)

पैग़ंबर इब्राहीम (उन पर शांति हो) ने अपना घर छोड़ दिया और अल्लाह की ओर निकल पड़े और कहा: वास्तव में मेरा प्रभु बुद्धिमान है:

﴿ وَقَالَ إِنِّي مُهَاجِرٌ إِلَىٰ رَبِّيٓۖ إِنَّهُۥ هُوَ ٱلۡعَزِيزُ ٱلۡحَكِيمُ ﴾

और उसने कहा, "निस्संदेह मैं अपने रब की ओर हिजरत(1) करता हूँ। निस्संदेह वह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, बुद्धिमान है।" (अल-अंकबूत: 26)

पैग़ंबर इब्राहीम (उन पर शांति हो) की आयु लंबी हो गई और उनके यहाँ कोई सन्तान नहीं हुई; तो फरिश्तों ने उनकी पत्नी को एक बेटे की शुभसूचना दी, वह एक बूढ़ी और बाँझ महिला थीं, इसलिए वह उस पर चकित थीं, तो फरिश्तों ने उनसे कहा: वास्तव में अल्लाह सर्वज्ञ बुद्धिमान है:

﴿قَالُواْ كَذَٰلِكِ قَالَ رَبُّكِۖ إِنَّهُۥ هُوَ ٱلۡحَكِيمُ ٱلۡعَلِيمُ﴾

(1) हिजरत: अपने धर्म की रक्षा के लिए घरबार छोड़ कर किसी दूसरी जगह चले जाना।

उन्होंने कहा, "ऐसी ही तेरे रब ने कहा है। निश्चय ही वह बड़ा बुद्धिमान, ज्ञानवान है।" (अल-ज़ारियात: 30)

पैग़ंबर याक़ूब (उन पर शांति हो) ने यूसुफ और उनके भाई को खो देने के बाद राहत की प्रतीक्षा तथा धैर्य के बावजूद, राहत का इष्टतम समय चुनने के विषय में अल्लाह के ज्ञान को साबित किया, और वो चिंता दूर करने वाले साधनों को उपलब्द कराने के बारे में अल्लाह की बुद्धि पर निश्चित रहे, इसलिए वह अपनी आशा और अल्लाह के नाम अल-हकीम (बुद्धिमान) द्वारा प्रार्थना के माध्यम से उसकी ओर मुड़े रहे:

﴿فَصَبْرٌ جَمِيلٌ عَسَى ٱللَّهُ أَن يَأْتِيَنِي بِهِمْ جَمِيعًا إِنَّهُۥ هُوَ ٱلْعَلِيمُ ٱلْحَكِيمُ﴾

अब अच्छी तरह सब्र करना है! बहुत सम्भव है कि अल्लाह उन सबको मेरे पास ले आए। वह तो सर्वज्ञ, अत्यन्त बुद्धिमान है।" (यूसुफ: 83)

लंबे समय तक विपत्तियों और कठिनाइयों का सामना करने के बाद जब पैग़ंबर यूसुफ (उन पर शांति हो) से दुख के बादल छट गए; तो उन्होंने अल्लाह की कृपा और उदारता को माना और उसमें अल्लाह की बुद्धि को साबित किया:

﴿وَقَدْ أَحْسَنَ بِيٓ إِذْ أَخْرَجَنِي مِنَ ٱلسِّجْنِ وَجَآءَ بِكُم مِّنَ ٱلْبَدْوِ مِنۢ بَعْدِ أَن نَّزَغَ ٱلشَّيْطَٰنُ بَيْنِي وَبَيْنَ إِخْوَتِيٓ إِنَّ رَبِّي لَطِيفٌ لِّمَا يَشَآءُ إِنَّهُۥ هُوَ ٱلْعَلِيمُ ٱلْحَكِيمُ﴾

और अल्लाह ने मुझ पर उपकार किया जब मुझे जेल से निकाला और आप लोगों को देहात से इसके पश्चात ले आया कि शैतान ने मेरे और भाइयों के बीच फ़साद डलवा दिया था। निस्संदेह मेरा रब जो चाहता है उसके लिए सूक्ष्म उपाय करता है। वास्तव में वही सर्वज्ञ, अत्यन्त तत्वदर्शी है। (यूसुफ: 100)

पवित्र प्रभु का नाम अल-हकीम (बुद्धिमान) उसकी रचना, तथा धार्मिक व लौकिक इच्छा के प्रति उसके निर्णय में उसकी बुद्धि को शामिल है। श्री इब्नुल-क़य्यिम (उन पर अल्लाह की दया हो) कहते हैं: "पराक्रम में क्षमता की पूर्णता है, बुद्धि में ज्ञान की पूर्णता है; इन दो गुणों द्वारा पवित्र अल्लाह अपनी इच्छा अनुसार निर्णय लेता है, इन्ही से आदेश व निषेध तथा उपहार व दण्ड देता है, अतः ये दो गुण रचना और आज्ञा के स्रोत हैं।"

पवित्र प्रभु ने अपनी बुद्धि से सभी सृष्टियों को सर्वोत्तम क्रम में बनाया, उन्हें सबसे उत्तम क्रम में व्यवस्थित किया, उनमें ठोस प्रबंधन और सुंदर निर्धारण किया और प्रत्येक सृष्टि को उसके योग्य रूप दिया। परमप्रधान अल्लाह ने कहा:

﴿أَعْطَىٰ كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهُۥ ثُمَّ هَدَىٰ﴾

उसने हर चीज़ को उसकी आकृति दी, फिर तदनुकूव निर्देशन किया। (ताहा: 50)

अल्लाह ने सृष्टि को चुनौती दी कि वे उसकी रचना में एक दोष या बेतुकी चीज़ खोज कर दिखा दे:

﴿فَٱرۡجِعِ ٱلۡبَصَرَ هَلۡ تَرَىٰ مِن فُطُورٍ ۞ ثُمَّ ٱرۡجِعِ ٱلۡبَصَرَ كَرَّتَيۡنِ يَنقَلِبۡ إِلَيۡكَ ٱلۡبَصَرُ خَاسِئٗا وَهُوَ حَسِيرٞ﴾

फिर नज़र डालो, क्या तुम्हें कोई बिगाड़ दिखाई देता है? फिर दोबारा नज़र डालो। निगाह रद्द होकर और थक-हारकर तुम्हारी ओर पलट आएगी। (अल-मुल्क: 3-4)

अगर सारी सृष्टि के दिमाग़ परम दयालु (अल्लाह) की रचना की तरह या जो अच्छाई, नियमितता और पूर्णता अल्लाह ने सृष्टि में रखी है, उसके निकटवर्ती किसी वस्तु का प्रस्ताव पेश करने के लिए इकट्ठे हो जाएं, तो भी वे अक्षम होंगे; इसलिए अल्लाह ने लोगों को सृष्टि में रखी गई बुद्धिमत्ताओं पर ध्यान देने और उसमें मौजूद अच्छाई और परिपक्वता के बारे में जानकारी से संतुष्ट हो जाने का आदेश दिया है; उसने कहा:

﴿قُلِ ٱنظُرُواْ مَاذَا فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِۚ﴾

कहो: देख लो, आकाशों और धरती में क्या कुछ है! (यूनुस: 101)

अपनी हिकमत (बुद्धिमत्ता) से उसने अपने बन्दों को अपनी पवित्र हस्ती, इस्लाम और उसके हुक्मों तथा निषेधों से वाक़िफ़ कराया, अपनी किताब उतारी और उसमें बयान किया कि वह हमारी तौबा (पश्चाताप) क़बूल करता है और यह कि धर्म के बिना दुनिया के मामलों में कोई सुधार नहीं हो सकता। कुछ सलफ़ ने कहा है: "यदि अल्लाह के निर्णय और विधान में उस बुद्धिमत्ता के सिवा जो भलाईयों का मूल और सम्पूर्ण आनंद है, कुछ न होता; तो भी यह पर्याप्त और सुचारू होता।"

पवित्र प्रभु अपने लौकिक मामलों में बुद्धिमान है; वह अपने भक्तों को शुद्ध करने और उनकी हैसियत बढ़ाने के लिए कठिनाइयों द्वारा उनकी परीक्षा लेता है। भक्त अल्लाह की पूर्वनियति में विश्वास और संतुष्टि रखने तथा वैध साधनों द्वारा (विकट) नियति को निरस्त करने पर बाध्य है, अतः वह अल्लाह की पूर्वनियति को उसकी पूर्वनियति द्वारा ही पीछे हटाता है, और जिसे दूर करने की छमता उसके पास नहीं होती (जैसे किसी रिश्तेदार की मृत्यु आदि) तो उसे स्वीकार कर संतुष्ट हो जाता है और वो अल्लाह की आज्ञा में पराक्रम, उसके निर्णय में न्याय और अपने ऊपर निर्णय के लागू होने में अल्लाह की बुद्धिमत्ता देखने लगता है और समझ जाता है कि जो कुछ उसके साथ हुआ है वह उससे चूकने वाला नहीं था और जो उससे चूक गया वह होने वाला नहीं था, और ये कि अल्लाह के न्याय और बुद्धि के कारण ही ऐसा हुआ।

सर्वशक्तिमान अल्लाह कभी कभी अपनी बुद्धि में से कुछ अपने भक्तों पर भी प्रकट करता है; अतः उसने बताया कि क़ुरआन की ईश-वाणी की हिकमत (उद्देश्य) मोमिनों को मज़बूत करना, उनका मार्गदर्शन करना और उन्हें शुभसूचना देना है।

﴿قُلْ نَزَّلَهُۥ رُوحُ ٱلْقُدُسِ مِن رَّبِّكَ بِٱلْحَقِّ لِيُثَبِّتَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَهُدًى وَبُشْرَىٰ لِلْمُسْلِمِينَ﴾

कह दो: इसे पवित्र आत्मा[1] ने तुम्हारे रब की ओर क्रमशः सत्य के साथ उतारा है, ताकि ईमान लाने वालों को जमाव प्रदान करे और आज्ञाकारियों के लिए मार्गदर्शन और शुभ सूचना हो। (अल-नह्ल: 102)

उसने रसूल भेजे ताकि किसी के पास यह बहाना न हो कि वह धर्म से अनभिज्ञ था:

﴿رُّسُلًا مُّبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَى ٱللَّهِ حُجَّةٌۢ بَعْدَ ٱلرُّسُلِ﴾

रसूल शुभ समाचार देनेवाले और सचेत करनेवाले बनाकर भेजे गए हैं, ताकि रसूलों के पश्चात लोगों के पास अल्लाह के मुक़ाबले में (अपने निर्दोष होने का) कोई तर्क न रहे। अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, बुद्धिमान है। (अल-निसा: 165)

उसने बताया कि लोगों की परीक्षा लेने का उद्देश्य ईमान वालों की सच्चाई और धैर्य को परखना है:

﴿أَحَسِبَ ٱلنَّاسُ أَن يُتْرَكُوٓا۟ أَن يَقُولُوٓا۟ ءَامَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُونَ ۝ وَلَقَدْ فَتَنَّا ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۖ فَلَيَعْلَمَنَّ ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ صَدَقُوا۟ وَلَيَعْلَمَنَّ ٱلْكَٰذِبِينَ﴾

क्या लोगों ने यह समझ रखा है कि वे इतना कह देने मात्र से छोड़ दिए जाएँगे कि "हम ईमान लाए" और उनकी परीक्षा न की जाएगी? हालाँकि हम उन लोगों की भी परीक्षा कर चुके हैं जो इनसे पहले गुज़रे हैं। अल्लाह तो उन लोगों को मालूम करके रहेगा, जो सच्चे हैं, और वह झूठों को भी मालूम करके रहेगा। (अल-अंकबूत: 2-3)

उसी ने अपनी बुद्धिमत्ता से ग़ैब (अदृश्य) के ज्ञान को अपनी रचना से छिपा लिया और स्वयं के लिए विशिष्ट किया:

﴿عَٰلِمُ ٱلْغَيْبِ وَٱلشَّهَٰدَةِ ۚ وَهُوَ ٱلْحَكِيمُ ٱلْخَبِيرُ﴾

वह सभी छिपी और खुली चीज़ का जाननेवाला है, और वही तत्वदर्शी, ख़बर रखने वाला है। (अल-अनआम: 73)

---

(1) पवित्र आत्मा से मुराद फरिश्तों के सरदार जिबरील हैं।

फिर हे मुस्लिमो!

रचना करना और आज्ञा देना; एक अल्लाह ही का अधिकार है, वो अपने संसार में जो चाहता है करता है, अपने विधान में जो चाहे निर्णय लेता है, उससे कोई प्रश्न नहीं किया जा सकता, न उसकी बुद्धिमत्ता को कोई टिप्पणी दूषित कर सकती है, अल्लाह का कथन है:

﴿لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْـَٔلُونَ﴾

जो कुछ वह करता है उससे उसकी कोई पूछ नहीं हो सकती, किन्तु उनसे पूछ होगी। (अल-अंबिया: 23)

भक्त को, बुद्धिमान अल्लाह के नाम के अर्थ द्वारा इबादत करने का हुक्म है, जब उसे हर चीज़ में अल्लाह की बुद्धी पर यक़ीन आ जाएगा तो वह अल्लाह की अनोखी रचना और ठोस निर्माण से आनंद उठाएगा, उसमें विचार करेगा, अल्लाह के विधान का महिमामंडन करेगा, उससे भय करेगा, अपने पापों पर शर्म महसुस करेगा और उसकी आज्ञा व निषेध के आगे आत्मसमर्पण कर देगा, ये सोच कर उसकी ख़ुशी का ठिकाना नहीं रहेगा कि अल्लाह ने उसे -अपनी किसी हिकमत के तहत ही- इस धर्म का मार्ग सुझाया है, और ये सोच कर भी कि शरिअत इंसानियत के सुख के लिए एक बुद्धिमान हस्ती की ओर से आई है। (ऐसे व्यक्ति पर) यदि कोई संकट भी आजाए तो अल्लाह के निर्णय और पुर्वनियति पर राज़ी रहेगा और यह मान लेगा कि अल्लाह ने उसके लिए जो भी फ़ैसला किया है; उसी में उसकी भलाई और सुधार है।

﴿وَعَسَىٰٓ أَن تَكْرَهُوا۟ شَيْـًٔا وَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ﴾

और बहुत सम्भव है कि कोई चीज़ तुम्हें अप्रिय हो और वह तुम्हारे लिए अच्छी हो। (अल-बक़रह: 216)

उसे यकीन हो जाएगा कि इसके पीछे कोई उद्देश्य है जिसका आभास उसे नहीं हो पा रहा है और वह दुख-सुख में अल्लाह के उपहारों में ही उठना बैठना करेगा, नबी ﷺ कहते हैं: "ईमान वाले का मामला भी अजीब है, निस्संदेह उसका हर मामला भलाई ही भलाई है, यह (उपहार) केवल ईमान वाले को ही प्राप्त होता है: यदि उसे कोई सुख मिलता है तो अल्लाह को धन्यवाद देता है; सो यह उसके लिए भलाई का काम है, यदि उसे कोई संकट आता है तो सब्र (धैर्य) से काम लेता है, सो यह भी उसके लिए भलाई का काम है।" (सही मुस्लिम)

अतः अल्लाह ने जो पैदा किया तथा धार्मिक और लौकिक रूप से जो चाहा, उससे अपने जीवन को खुश कर लो और अपना मामला बुद्धिमान प्रभु को सौंप दो वह तुम्हें तुम्हारी इच्छा से अधिक देगा।

मैं शापित शैतान से अल्लाह की पनाह चाहता हूँ

﴿شَهِدَ ٱللَّهُ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ وَٱلْمَلَٰٓئِكَةُ وَأُو۟لُوا۟ ٱلْعِلْمِ قَآئِمًۢا بِٱلْقِسْطِ ۚ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلْعَزِيزُ ٱلْحَكِيمُ﴾

अल्लाह ने इंसाफ को स्थापित करते हुए गवाही दी कि उसके सिवा कोई पूजनीय नहीं, और फ़रिश्तों और ज्ञान रखने वालों ने भी गवाही दी। उस प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी के सिवा कोई पूज्य नहीं। (आल इमरान: 18)

अल्लाह मुझे और आपको पवित्र कुरआन के प्रति आशीर्वाद दे...

दूसरा ख़ुतबा

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है उसकी भलाई पर, कृतज्ञता उसी के लिए है उसके मार्गदर्शन और कृपा पर। अल्लाह की महिमामंडन के लिए, मैं गवाही देता हूँ कि एक अल्लाह के अलावा कोई पूज्य नहीं है और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद अल्लाह के भक्त और रसूल (दूत) हैं। अल्लाह उन पर और उनके परिवार और साथियों पर दरुद व सलाम अवतीर्ण करे।

हे मुस्लिमो!

अल्लाह ने अपने बंदों को अपनी रचना और आज्ञा के महान अर्थों से अवगत कराया है, बाक़ी रचना, निर्माण, आज्ञा, कानून, निर्णय और नियति में अल्लाह की हिकमत (बुद्धिमत्ता) के जो पहलू बंदों से छिपे हैं; उनके लिए सामान्य रूप से इतना जानना काफ़ी है कि इन सब चीज़ों में महान हिकमत समाहित है, भले ही वे इसके विवरण को ना जानते हों, और ये कि यह बारीकियाँ ग़ैब के ज्ञान का हिस्सा हैं जो अल्लाह ने स्वयं के लिए विशिष्ट कर रखा है।

तो जान लो कि अल्लाह ने तुम्हें अपने नबी पर बरकत और सलाम भेजने का आदेश दिया है...

रब का क्रोध[1]

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, हम उसकी प्रशंसा करते हैं उसी से सहायता और अपने पापों की क्षमा मांगते हैं और अपने प्राण और कर्म की बुराइयों से उसकी शरण चाहते हैं। वह जिसे सत्य मार्ग पर चला दे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे वह भटका दे उसे कोई सत्य मार्ग पर चला नहीं सकता। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह एक है, उसका कोई साझी नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं। सलाम व शांति हो उन पर, उनके परिवार पर और उनके पवित्र साथियों पर।

अल्लाह की प्रशंसा और नबी पर दरूद के बाद:

हे अल्लाह के बंदो! अल्लाह से डरो जैसे डरना चाहिए, जो अपने रब से डरेगा वह मुक्ति पाएगा और जो उसकी याद से फिरेगा वह पथभ्रष्ट होगा।

हे मुस्लिमो!

ईश्वर अपनी पुस्तक और अपने नबी ﷺ के शब्दों में अपनी सृष्टि को स्वयं का परिचय देता है, वह अपने नामों और गुणों में सर्वोच्च आदर्श रखता है, उसके गुणों पर विचार करना और उनके द्वारा इबादत करना; उसके प्रेम और जन्नत का रास्ता और ईश्वर के साथ भय, आशा, प्रेम एंव विश्वास आदि का रिश्ता बनाने का साधन है।

इस उम्मत के सलफ़ (पूर्वजों) का मत: क़ुरआन और सुन्नत ने अल्लाह के लिए जिन नामों और विशेषताओं की पुष्टि की है, उनका इक़रार करना रहा है। अल्लाह का गुण "ग़ज़ब" (क्रोध); उन गुणों में से एक है जो भय और डर का कारण हैं। अल्लाह क्रोधित और प्रसन्न होता है, लेकिन उसकी प्रसन्नता और क्रोध; सारी सृष्टि से अलग है। सृष्टि पर उस पवित्र प्रभु की प्रत्येक विशेषता का प्रभाव है और दुनिया के सामान्य दण्ड और विपत्तियां अल्लाह के क्रोध के प्रभाव से हैं। सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा:

﴿وَمَن يَحْلِلْ عَلَيْهِ غَضَبِي فَقَدْ هَوَىٰ﴾

(1) ये ख़ुतबा मस्जिद-ए-नबवी में जुमे के दिन 09/11/1440 हिजरी को दिया गया।

और जिस किसी पर मेरा प्रकोप टूटा, वह तो तबाह हो गया। (ताहा: 81)

श्री सुफ़यान बिन उयैना (उन पर अल्लाह की रहमत हो) कहते हैं: "अल्लाह का प्रकोप एक लाइलाज बीमारी है।"

अल्लाह का क्रोध बंदों के कर्मों की हताशा का कारण बनता है; पवित्र प्रभु ने कहा:

﴿ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمُ ٱتَّبَعُواْ مَآ أَسۡخَطَ ٱللَّهَ وَكَرِهُواْ رِضۡوَٰنَهُۥ فَأَحۡبَطَ أَعۡمَٰلَهُمۡ﴾

यह इसलिए कि उन्होंने उस चीज़ का अनुसरण किया जो अल्लाह को अप्रसन्न करनेवाली थी और उन्होंने उसकी ख़ुशी को नापसंद किया तो उसने उनके कर्मों को अकारथ कर दिया। (मुहम्मद: 28)

जब ईश्वर किसी क़ौम पर क्रोधित होता है तो उनसे बदला लेता है। सर्वशक्तिमान प्रभु ने कहा:

﴿فَلَمَّآ ءَاسَفُونَا ٱنتَقَمۡنَا مِنۡهُمۡ﴾

फिर जब उन्होंने हमें क्रोधित किया तो हमने उनसे बदला ले लिया। (अल-ज़ुख़रुफ: 55)

श्री इब्नुल-कय्यिम (उन पर अल्लाह की दया हो) कहते हैं: "अज़ाब केवल अल्लाह के गुण "क्रोध" से उत्पन्न होता है, नरक की आग उसके क्रोध से ही भड़काई गई है।"

अल्लाह ने इसी गुण द्वारा कई कौमों को दण्डित किया और हमें उनके बारे में सूचना दी; ताकि हम उनके पाप से बचे रहें। अल्लाह का कथन है:

﴿ضُرِبَتۡ عَلَيۡهِمُ ٱلذِّلَّةُ أَيۡنَ مَا ثُقِفُوٓاْ إِلَّا بِحَبۡلٖ مِّنَ ٱللَّهِ وَحَبۡلٖ مِّنَ ٱلنَّاسِ وَبَآءُو بِغَضَبٖ مِّنَ ٱللَّهِ﴾

वे जहाँ कहीं भी पाए गए उन पर अपमान थोप दिया गया। किन्तु अल्लाह की रस्सी थामें या लोगों की रस्सी, तो और बात है। और वे ल्लाह के प्रकोप के पात्र हुए। (आल इमरान: 112)

एक क़ौम ने अल्लाह की आयतों (संकेतों) के आ जाने के बावजूद उनका इंकार किया; तो वे क्रोध पर क्रोध का शिकार हुए। अल्लाह को एक क़ौम पर क्रोध आया तो उसकी शक्ल बिगाड़ दी। नबी ﷺ कहते हैं: "अल्लाह बनी इस्राइल के एक क़बीले पर क्रोधित हुआ तो उनकी शक्ल बिगाड़ कर उन्हें जानवर बना दिया, जो ज़मीन पर चल रहे थे।" (सही मुस्लिम)

प्रत्येक नबी ने अपनी क़ौम को अल्लाह के क्रोध से चेताया है; पैग़ंबर मूसा (उन पर शांति हो) ने अपनी क़ौम से कहा:

﴿أَمْ أَرَدتُّمْ أَن يَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبٌ مِّن رَّبِّكُمْ﴾

या तुमने यही चाहा है कि तुम पर तुम्हारे रब का प्रकोप टूट पड़े? (ताहा: 86)

फितरत (शुद्ध स्वभाव) वाले लोग अपने प्रति उसके क्रोध से डरते हैं, "श्री ज़ैद बिन अम्र बिन नुफ़ैल, मुहम्मद ﷺ के नबी बनने से पहले धर्म के बारे में पूछा करते थे, एक यहूदी विद्वान से उनकी भेंट हुई तो उससे भी धर्म के बारे में पूछा, उसने कहा: हमारे धर्म पर मत आओ; कहीं तुम अल्लाह के क्रोध में भागीदार न बन जाओ, ज़ैद ने कहा: मैं तो अल्लाह के क्रोध से ही भाग रहा हूँ और कभी भी अल्लाह के क्रोध को सहन नहीं कर सकता, भला मैं कैसे सहन कर सकता हूँ?" (सही बुखारी)

एक मुस्लिम अल्लाह की दया और संतुष्टि की उम्मीद में उसी की ओर भागता है, उसके क्रोध और प्रकोप से डरता है। अल्लाह के साथ शिर्क सबसे बड़ा पाप है जो अल्लाह के क्रोध और दंड को आवश्यक बना देता है। सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा:

﴿إِنَّ الَّذِينَ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَذِلَّةٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا﴾

जिन लोगों ने बछड़े को अपना उपास्य बनाया, वे अपने रब की ओर से प्रकोप और सांसारिक जीवन में अपमान से ग्रस्त होकर रहेंगे। (अल-आराफ़: 152)

कब्रों के पास या उसकी ओर मुख करके नमाज़ पढ़ना शिर्क तक पहुँचने का एक साधन है, नबी ﷺ कहते हैं: "अल्लाह का क्रोध उन लोगों पर कठोर हुआ है जिन्होंने अपने नबियों की कब्रों को पूजास्थल बना दिया।" (मुअत्ता मालिक) जो अल्लाह से उसके गुणों को हत्याने का प्रयास करता है, वह अपनी इच्छा के विपरीत दण्ड पाएगा, नबी ﷺ कहते हैं: "अल्लाह का क्रोध उस व्यक्ति पर कठोर हुआ जिसने स्वयं को शहंशाह कहलवाया।" (मुस्नद अहमद)

ईश्वर उदार है और चाहता है की बंदे उससे मांगें और सिर्फ उसी से मांगें, वह घमंड में आकर उससे न माँगने वालों पर क्रोधित होता है। नबी ﷺ कहते हैं: "जो अल्लाह से नहीं माँगता अल्लाह उस पर क्रोधित होता है।" (सुनन तिर्मिज़ी)

कुफ्र अल्लाह को बिल्कुल भी पसन्द नहीं है, अगर बन्दा ऐसा करता है तो अल्लाह उस पर क्रोधित होता है, सर्वशक्तिमान प्रभु ने कहा:

﴿مَّن شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِّنَ اللَّهِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ﴾

जिसने सीना कुफ़्र के लिए खोल दिया हो, तो ऐसे लोगों पर अल्लाह का प्रकोप है और उनके लिए बड़ी यातना है। (अल-नह्ल: 106)

समाज का सुधार (व्यक्ति के) भीतर और बाहर के सुधार में निहित है, जो भी बुराई को भीतर छुपाता है और बाहर उसके विपरित दिखाता है; उसने अल्लाह को ग़लत समझा है और उस पर अल्लाह का क्रोध ज़रूर पड़ेगा, सर्वशक्तिमान प्रभु ने कहा:

﴿وَيُعَذِّبَ ٱلْمُنَٰفِقِينَ وَٱلْمُنَٰفِقَٰتِ وَٱلْمُشْرِكِينَ وَٱلْمُشْرِكَٰتِ ٱلظَّآنِّينَ بِٱللَّهِ ظَنَّ ٱلسَّوْءِ ۚ عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ ٱلسَّوْءِ ۖ وَغَضِبَ ٱللَّهُ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ ۖ وَسَآءَتْ مَصِيرًا﴾

और ईश्वर कपटाचारी पुरुषों और कपटाचारी स्त्रियों और बहुदेववादी पुरुषों और बहुदेववादी स्त्रियों को, जो अल्लाह के बारे में बुरा विचार रखते हैं, यातना देगा, उन्ही पर बुराई की गर्दिश है। उन पर अल्लाह का क्रोध हुआ और उसने उन पर लानत की, और उसने उनके लिए जहन्नम तय्यार कर रखा है, और वह अत्यन्त बुरा ठिकाना है! (अल-फत्ह: 6)

अल्लाह के रसूल, सृष्टि के शुद्धतम लोग होते हैं, जो भी उन्हें कष्ट देगा वह अल्लाह के सबसे कठोर क्रोध का पात्र होगा, नबी ﷺ ने कहा: "अल्लाह का क्रोध उस क़ौम पर कठोर हुआ जिसने अल्लाह के नबी के चेहरे को लहू-लुहान किया।" (सही बुखारी) सृष्टि का सबसे दुष्ट व्यक्ति वह है जिसने किसी नबी की हत्या की हो। नबी ﷺ कहते हैं: "अल्लाह का क्रोध उस व्यक्ति पर कठोर हुआ जिसने किसी नबी की हत्या की हो।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

जो अल्लाह के बंदों में से उसके मित्रों तथा सत्कर्मियों को नाराज़ करता है; अल्लाह उससे नाराज़ होता है। नबी ﷺ कहते हैं: "यदि तुमने उन्हें नाराज़ किया (अर्थात: सहाबा के एक समूह को) तो तुमने अपने प्रभु को नाराज़ किया।" (सही मुस्लिम)

विपत्तियों के समय रोने पीटने से दुर्भाग्य वापस नहीं जाता, कर्म वाले के लिए बदला भी उसी तरह का है जैसा उसने किया था, नबी ﷺ कहते हैं: "जो (भाग्य के प्रति) असंतुष्ट है उसके लिए असंतुष्टा ही होगी" (सुनन तिर्मिज़ी)

वचन या कर्म के माध्यम से लोगों को अल्लाह से दूर करना; अल्लाह की सजा को आवश्यक बनाता है। सर्वशक्तिमान प्रभु ने कहा:

﴿وَٱلَّذِينَ يُحَآجُّونَ فِى ٱللَّهِ مِنۢ بَعْدِ مَا ٱسْتُجِيبَ لَهُۥ حُجَّتُهُمْ دَاحِضَةٌ عِندَ رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ﴾

जो लोग अल्लाह के विषय में झगड़ते है, इसके पश्चात कि उसकी पुकार स्वीकार कर ली गई, उनका तर्क उनके रब की नज़र में बिलकुल न ठहरनेवाला (असत्य) है। प्रकोप है उन पर और उनके लिए कड़ी यातना है। (अल-शूरा: 16)

श्री इब्ने-अब्बास (रज़ियल्लाहु अनहु) कहते हैं: "उन्होंने ईमान वालों से झगड़ा किया; ताकि उन्हें मार्गदर्शन से दूर कर दें और उन्हें उम्मीद थी कि जाहिलिय्यत (अज्ञान) वापस आ जाएगी।"

जो अपने ज्ञान के अनुसार कार्य नहीं करता है, वह उन लोगों में से है जिन पर प्रभु क्रोधित हुआ और जिनके बारे में मुस्लिमों को हर रकअत में प्रार्थना करने का आदेश दिया गया है कि अल्लाह उनके रास्ते से बचाए रखे।

अल्लाह ने माता-पिता के अधिकार को उनके महान मूल्य के कारण बढ़ा दिया और उनके संतोष में अपनी खुशी और उनके क्रोध में अपने क्रोध रख दिया, श्री अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ियल्लाहु अनहु) ने कहा: "अल्लाह की खुशी पिता की खुशी में है और अल्लाह का क्रोध पिता के क्रोध में है।" (सुनन तिर्मिज़ी)

एक मुस्लिम का खून सुरक्षित होता है, जो भी किसी मुस्लिम की हत्या करेगा वह अल्लाह के क्रोध और शाप को प्राप्त करेगा। सर्वशक्तिमान प्रभु ने कहा:

﴿وَمَن يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآؤُهُۥ جَهَنَّمُ خَٰلِدًا فِيهَا وَغَضِبَ ٱللَّهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهُۥ وَأَعَدَّ لَهُۥ عَذَابًا عَظِيمًا﴾

और जो व्यक्ति जान-बूझकर किसी मोमिन की हत्या करेगा, तो उसका बदला जहन्नम है, जिसमें वह सदा रहेगा; उसपर अल्लाह का प्रकोप और उसका शाप है और उसके लिए अल्लाह ने बड़ी यातना तय्यार कर रखी है। (अल-निसा: 93)

मुसलमानों के धन भी सुरक्षित होते हैं, जो किसी मुसलमान व्यक्ति के धन पर आक्रमण करता है; वह एक गंभीर चेतावनी का पात्र है, नबी ﷺ ने कहा: "जो (जानबूझकर) अन्याय की झूठी शपथ लेता है और उसके द्वारा एक मुस्लिम व्यक्ति का धन हत्याना चाहता है; जब वह अल्लाह से मिलेगा तो वह उससे क्रोधित होगा।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

यदि कोई स्त्री (दूसरे से अवैध संबंध के झूटे इंकार में) अपने पति को कोसती है, तो वह अल्लाह के क्रोध में होती है; सर्वशक्तिमान प्रभु ने कहा:

﴿وَٱلْخَٰمِسَةَ أَنَّ غَضَبَ ٱللَّهِ عَلَيْهَآ إِن كَانَ مِنَ ٱلصَّٰدِقِينَ﴾

और पाँचवी बार यह कहेगी कि उसपर अल्लाह का प्रकोप हो, यदि वह सच्चा है। (अल-नूर: 9)

जो अत्याचार में मदद करेगा उस पर अल्लाह का ग़ज़ब (क्रोध) होगा, नबी ﷺ ने कहा: "जो किसी विवाद में अन्याय द्वारा सहायता करता है - या किसी अत्याचार में मदद करता है-; वह लगातार अल्लाह के प्रकोप में होता है जब तक कि वह अपना हाथ न खींच ले।" (सुनन इब्ने-माजा)

जीभ, भक्तों के मापदंडों में से एक है, एक शब्द भक्त की सफलता या उसके विनाश का कारण हो सकता है, नबी ﷺ कहते हैं: "तुम में से कोई अल्लाह के प्रकोप वाला एक शब्द बोल देता है, उसे अनुमान भी नहीं होता कि (उसका दुष्परिणाम) कहाँ तक पहुँच सकता है, अतः अल्लाह अपनी मुलाकात के दिन तक उस पर प्रकोप लिख देता है।"

शत्रु से मुठभेड़ होने पर, आगे बढ़ने से भागना अल्लाह के क्रोध की ओर ले जाता है, पवित्र प्रभु का कथन है:

﴿وَمَن يُوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبُرَهُۥٓ إِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ أَوْ مُتَحَيِّزًا إِلَىٰ فِئَةٍ فَقَدْ بَآءَ بِغَضَبٍ مِّنَ ٱللَّهِ وَمَأْوَىٰهُ جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ ٱلْمَصِيرُ﴾

जिस किसी ने भी उस दिन उनसे पीठ फेरी - यह और बात है कि युद्ध-चाल के रूप में या दूसरी टुकड़ी से मिलने के लिए ऐसा करे - तो वह अल्लाह के प्रकोप का भागी हुआ और उसका ठिकाना जहन्नम है, और वह पहुँचने की क्या ही बुरी जगह है! (अल-अनफ़ाल: 16)

अनुग्रह का हक़; कृतज्ञता है, उसके प्रति स्वयं घमंडी बन जाने और अनुग्रह दाता को भूल जाने का दण्ड शीघ्र आने वाला होता है; पवित्र प्रभु कहता है:

﴿كُلُوا۟ مِن طَيِّبَٰتِ مَا رَزَقْنَٰكُمْ وَلَا تَطْغَوْا۟ فِيهِ فَيَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبِى ۖ﴾

जो कुछ अच्छी चीज़े हमने तुम्हें प्रदान की हैं उनमें से खाओ, किन्तु इसमें हद से आगे न बढ़ो कि तुमपर मेरा प्रकोप टूट पड़े। (ताहा: 81)

जो अल्लाह के क्रोध को अनिवार्य करने वाले कर्म करता है; उससे घृणा करना ज़रूरी है और उससे मित्रता हराम (वर्जित) है। सर्वशक्तिमान प्रभु ने कहा:

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تَتَوَلَّوْا۟ قَوْمًا غَضِبَ ٱللَّهُ عَلَيْهِمْ﴾

ऐ ईमान लाने वालो! ऐसे लोगों से मित्रता न करो जिन पर अल्लाह का प्रकोप हुआ। (अल-मुमतहिना: 13)

बंदों पर अनिवार्य है कि मृत्यु के बाद के लिए कर्म करें और आखिरत की तय्यारी करें, अल्लाह का भक्तों पर सबसे तीव्र क्रोध क़यामत के दिन होगा; यही कारण है कि नबी गण - आदम, नूह, इब्राहीम, मूसा और ईसा- उस भयंकर स्थिति में कहेंगे: "वास्तव में, मेरा प्रभु आज जैसा क्रोधित हुआ है वैसा पहले कभी क्रोधित नहीं हुआ था और बाद में कभी ऐसा क्रोधित नहीं होगा।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

फिर हे मुस्लिमो!

अल्लाह सामर्थ्यवान और दृढ़ है, उसने अपने भक्तों को अपने क्रोध के विषय में चेताया है, सर्वशक्तिमान प्रभु ने कहा:

﴿وَيُحَذِّرُكُمُ ٱللَّهُ نَفۡسَهُۥۗ﴾

और अल्लाह तुम्हें अपना भय दिलाता है। (आल इमरान: 30)

भक्तों पर ज़रूरी है कि अपने प्रति अल्लाह की सहनशीलता से धोखा न खाएं; पवित्र प्रभु यदि क्रोधित हो जाता है और दंड को अधिकृत करता है; तो उसके आदेश का कोई प्रतिकार नहीं। अगर भक्त पाप करते रहें और अल्लाह उन्हें अनुग्रहों में अभिभूत करता रहे; तो यह उसकी ओर से उन (पापियों के लिए) ढील है, पवित्र प्रभु कहता है:

﴿وَأُمۡلِي لَهُمۡۚ إِنَّ كَيۡدِي مَتِينٌ﴾

मैं तो उन्हें ढील दिए जा रहा हूँ। निश्चय ही मेरी चाल अत्यन्त सुदृढ़ है। (अल-आराफ़: 183)

यदि भक्त अपने प्रभु की ओर लौट आएं तो वह उनके लिए पश्चाताप और अच्छे कर्मों के द्वार खोल देता है और वह उनसे प्रसन्न होता है।

मैं शापित शैतान से अल्लाह की पनाह माँगता हूँ

﴿أَفَمَنِ ٱتَّبَعَ رِضۡوَٰنَ ٱللَّهِ كَمَنۢ بَآءَ بِسَخَطٖ مِّنَ ٱللَّهِ وَمَأۡوَىٰهُ جَهَنَّمُۖ وَبِئۡسَ ٱلۡمَصِيرُ﴾

भला क्या जो व्यक्ति अल्लाह की इच्छा पर चले वह उस जैसा हो सकता है जो अल्लाह के प्रकोप का भागी हो चुका हो और जिसका ठिकाना जहन्नम है? और वह क्या ही बुरा ठिकाना है! (आल इमरान: 162)

अल्लाह पाक मुझे और आपको पवित्र क़ुरआन के प्रति आशीर्वाद दे ...

दूसरा ख़ुतबा

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है उसकी भलाई पर और कृतज्ञता उसी के लिए है उसके मार्गदर्शन और कृपा पर। अल्लाह की महिमामंडन के लिए, मैं गवाही देता हूँ कि एक अल्लाह के अलावा कोई पूज्य नहीं है और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद अल्लाह के भक्त और दूत हैं। अल्लाह उन पर और उनके परिवार और साथियों पर दरुद व सलाम अवतीर्ण करे।

हे मुस्लिमो!

आज्ञाकारिता परम कृपालु की संतुष्टि लाती है, इसके माध्यम से भक्त उसकी दया प्राप्त करता है, सर्वशक्तिमान प्रभु ने कहा:

﴿وَرَحْمَتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ۚ فَسَأَكْتُبُهَا لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَالَّذِينَ هُم بِآيَاتِنَا يُؤْمِنُونَ﴾

किन्तु मेरी दयालुता से हर चीज़ आच्छादित है। उसे तो मैं उन लोगों के हक़ में लिखूँगा जो डर रखते और ज़कात देते हैं और जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं। (अल-आराफ़: 156)

अल्लाह की रहमत (दया) की व्यापकता की एक शक्ल ये है कि उसकी रहमत उसके क्रोध से आगे है, नबी ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह ने सृष्टि के निर्माण से पहले एक लेख लिख दिया: "मेरी दया मेरे क्रोध से आगे है", यह उसके निकट अर्श के ऊपर लिखित मौजूद है" (सही बुखारी)

ईश्वर के क्रोध से शरण माँगना; उस की आज्ञा से, क्रोध को रोकने का साधन है। नबी ﷺ की एक प्रार्थना इस प्रकार थी: "हे अल्लाह! मैं तेरी प्रसन्नता द्वारा तेरे क्रोध से पनाह माँगता हूँ।" (सही मुस्लिम)

बुद्धिमान मुस्लिम ईश्वर की प्रसन्नता प्राप्ति का प्रयास करता और स्वयं को ईश्वर को क्रोधित करने वाली चीज़ों से रोकता है।

तो जान लो कि अल्लाह ने तुम्हें अपने नबी पर बरकत और सलाम भेजने का आदेश दिया है...

विषयसूची